Chapter-5

# अध्याय पाँच

## गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता

गुजरात के समकालीन कवि- भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज', अम्बाशंकर नागर, अविनाश श्रीवास्तव, कमल पुंजाणी, भगवतशरण अग्रवाल, किशोर काबरा, रामकुमार गुप्त, घनश्याम अग्रवाल, जयसिंह 'व्यथित', मुकेश रावल, डॉ0 विष्णु विराट, द्वारका प्रसाद साँचीहर, सुलतान अहमद, नलिनी पुरोहित, डॉ0 दयाचन्द जैन, भगवानदास जैन, रमाकान्त शर्मा, नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन', रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र' आदि आदि एवं उनकी काव्य-कृतियों का परिचयात्मक विश्लेषण ।

## *गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता*

गुजरात में, गुजराती भाषा के साथ-साथ हिन्दी के विविध स्वरूपों यथा डिंगल, ब्रज, अवधी, गूजरी, हिन्दुस्तानी एवं खड़ी बोली में भी काव्य-रचना होती रही है। पन्द्रहवीं शती से गुजरात में हिन्दी-काव्य रचा जाता रहा है। हिन्दी में विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों तथा राजाओं एवं राज्याश्रित चारण-भाटों के साथ जैन, सन्त, सूफी, वैष्णव कवियों ने रचना की है।

सन् 1747 ई0 में कच्छ के महाराव लखपतसिंह ने कवि बनाने की ब्रजभाषा-पाठशाला (काव्य-शाला) स्थापित की जिसमें काव्य-शास्त्रीय सिद्धान्तों की शिक्षा देकर ब्रजभाषा में काव्य रचना करना सिखाया जाता था। यह संस्था भारत के स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ; राजाओं के राज्य समाप्त होने से राज्याश्रय के अभाव में नष्ट हो गई। गुजरात की मध्यकालीन हिन्दी कविता अत्यन्त समृद्ध रही है जिसमें भक्ति, उपासना, नीति, वैराग्य, विरह के साथ-साथ वीरता, शृंगार, सांसारिकता आदि विविध रूपों में काव्य-रचना हुई है।

गुजरात में गुजराती को राज्य-भाषा तथा हिन्दी को द्वितीय राज्य-भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। गुजरात में हिन्दी साहित्य अकादमी, गुजरात विद्यापीठ, गुजरात प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा आदि विभिन्न साहित्य-संस्थाओं की स्थापना हुई जिससे हिन्दीतर प्रदेश होते हुए भी गुजरात में आधुनिक युग में विपुल मात्रा में काव्य-रचना हुई है।

गुजरात में दो प्रकार के हिन्दी कवि हैं। एक हिन्दी मातृभाषा के कवि, जो विभिन्न हिन्दी भाषी राज्यों-उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश आदि से आकर गुजरात में बस गए हैं; दूसरे वे, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। डॉ0 किशोर काबरा के अनुसार ***''यहाँ गीतकार हैं, गजलकार हैं; छांदस कवि हैं, अछांदस कवि हैं; रसवादी कवि हैं, जनवादी कवि है; ललित कवि हैं, दलित कवि है; समीक्षक कवि है, अनुवादक कवि हैं; गुजराती भाषी हिन्दी कवि है; हिन्दी भाषी गुजराती कवि हैं।''***[1]

आधुनिक हिन्दी कविता एक ओर परम्पराओं से जुड़ी है तो दूसरी ओर उस पर पाश्चात्य प्रभाव भी है। मध्यकाल में छन्दों और अलंकारों से बोझिल, वास्तविक सौन्दर्य से दूर हुई कविता आधुनिक काल में अनावश्यक छन्दों एवं अलंकारों का त्याग कर एक नए स्वरूप में आई। प्रबन्ध-काव्यों के साथ-साथ मुक्तक के सभी रूपों में विपुल साहित्य-सृजन हुआ। विषय-वैविध्य एवं आकर्षक शिल्प प्रयोग किए गए।

गीत, ग़ज़ल, छन्दबद्ध एवं अछान्दस रचनाओं के साथ जापानी छन्द-हाइकु में भी

काव्य-रचना हुई। डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल ने जापानी छन्द हाइकु में काव्य-रचना कर उसे भारत भर में लोकप्रिय बनाया।

दो हाइकु देखिए-

1) *''सजाये मौत / मंजूर है मुझको / तुम्हारे बिना।''*

-मुकेश रावल[2]

2) *''गिनता रहा / माला के मनकों को / गुनाह नहीं।*

-डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल[3]

शिल्प एवं अभिव्यक्ति कौशल में भी अनेक नवीनताएँ मिलती हैं। छायावादी, नई कविता वादी प्रगतिवादी सभी प्रकार की रचनाएँ मिलती है। प्रकृति का सौन्दर्य-निरूपण करता दृश्य-

*''गोधूलि हो चली / अंशुमाली ने / प्रिय प्रतीची के /*
*मुख पर मल दी रोली / आम्रकुंज में / छिपी हुई काली कोयल /*
*सहसा पंचम में बोली और निशा ने / निशानाथ की आगवानी में /*
*बिखरा दी / तारों की झोली''*[4]

गुजरात के अनेक कवियों ने गीत और ग़ज़ल में प्रयोग किए हैं। इनमें भगवानदास जैन, सुलतान अहमद, दयाचन्द जैन, अश्विनी कुमार पाण्डेय, द्वारिका प्रसाद, सुरेश शर्मा 'कान्त', सुलभ धंधुकिया, रामचेत वर्मा, ऋषिपाल धीमान, विजयकुमार तिवारी, नवनीत ठक्कर, अब्बास अली ताई, अशोक नारायण, शिवा कनाटे, अरुणसिंह बारहट, भागवत प्रसाद मिश्र, धरमविजय पंडित, जोज़फ अनवर, दिनेश देसाई आदि प्रमुख हैं। अन्य रचनाकारों में जादवजी पटेल, दिनेशचन्द्र, शेखर जैन, कुन्दन माली, कैलाशनाथ तिवारी, हरी सिंह चौधरी, फूलचंद गुप्ता, भगवतशरण अग्रवाल, रमेशचन्द्र शर्मा, अंबाशंकर नागर, अविनाश श्रीवास्तव, किशोर काबरा, कमल पुंजाणी, घनश्याम अग्रवाल, दयाचन्द जैन, जयसिंह 'व्यथित', वसन्तकुमार परिहार, रमाकान्त शर्मा, मुकेश रावल, विष्णु 'विराट' आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। अनेक कवियों की रचनाएँ विभिन्न संग्रहों में तथा पत्र-पत्रिकाओं में निकल रही हैं।

मध्यकाल में कवियों की तरह हिन्दी कवयित्रियाँ भी रही है जिन्होंने भक्ति-काव्य की रचना की है। इनमें अचरत बा, ओंकारेश्वरी, रूपांबाई, राजकुंवर सोरठयानी, फूलकुंवर, गवरी बाई प्रमुख है। आज चालीस से अधिक महिलाएँ कविता-सर्जन में लगी हैं जिनमें से अठ्ठाईस के एक या एकाधिक काव्य-संग्रह निकल चुके हैं। इनकी कविताएँ समसामयिक हैं जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं में नारी-हृदय का चित्रण है। इनकी कविताओं में नारी के

विभिन्न रूपों प्रेमिका, पत्नी, माता, संयोगिनी, वियोगिनी, प्रेमी या पति से पीड़ित या छली गई, बहन, कोमल हृदया पुत्री, आक्रोशित या इन्तजार करती हुई - का चित्रण हुआ है। प्रतिभा पुरोहित का एक उदाहरण देखिए-

*''तन्दूर में भुनती*
*तन्दूरी हो गई सिन्दूरी काया।*
*रौंदी गई नारी,*
*कुचली गई बेचारी,*
*कोई क्या करे गुहार, पुकार।''*(5)

***डॉ0 भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज'***

डॉ0 भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज' का जन्म उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के राठ में 15 मई 1920 ई0 में हुआ। इन्होंने अंग्रेजी में एम.ए., साहित्यरत्न, एल.टी. के साथ कन्नड़ भाषा में डिप्लोमा भी किया है। ये इलाहाबाद, नई दिल्ली, भोपाल, अहमदाबाद आदि स्थानों के शिक्षा संस्थानों में अध्यापक, रीडर एवं सलाहकार भी रहे है। इन्होंने आन्ध्र प्रदेश के पुट्टापर्ती में अवैतनिक रीडर के रूप में 10 वर्षों तक सेवा की। ये नरेन्द्र शर्मा, बच्चन जी, गिरिजाकुमार माथुर की पीढ़ी के समर्थ गीतकार, ग़ज़लकार, चिन्तक हैं। छात्र जीवन से ही साहित्य-विशेषकर काव्य में रुचि होने से मिश्र जी समय-समय पर निराला जी, मैथिलीशरण गुप्त, वृन्दावनलाल वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी जी के साथ-साथ डॉ0 नागर, रामकुमार गुप्त, चन्द्रकान्त मेहता, किशोर काबरा के सम्पर्क में आए और काव्य-लेखन के लिए विशेष सक्रिय हुए।

इनकी काव्य-कृतियों में ***'कारा'*** (खण्डकाव्य, 1950 ई0 में प्रकाशित) एवं ***'गीत-रश्मि'*** (काव्य-संग्रह, 1959, 1998) चर्चित रही हैं। इनके अतिरिक्त ***'सुमनांजलि'*** (भक्ति गीत), ***'शिशुगीत'*** (बाल-साहित्य, 1997), ***'ज़ज़्बात'*** (ग़ज़ल-संग्रह), ***'तलाश'*** (ग़ज़ल-संग्रह 1998), ***'तरंगिणी'*** (काव्य-संग्रह, 1997), ***'कस्मै देवाय'*** (खण्डकाव्य, 1999), ***'अजस्रा'*** (कविता-संग्रह, 1999), ***'दीर्घा'*** (लम्बी कविता), ***'हरि पतितपावन सुने'*** (भक्ति-रचना), ***'आखरी दौर'*** आदि प्रकाशित रचनाएँ उल्लेखनीय है।

इसके अतिरिक्त अंग्रेजी व हिन्दी में शिक्षण-शास्त्र, जीवनी, संस्मरण, अंग्रेजी से हिन्दी में तथा हिन्दी से अंग्रेजी में अनुदित पुस्तकें तथा सत्यसाई बाबा पर अनेक छोटी-बड़ी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

***'कारा'*** मिश्र जी की नितान्त मौलिक कृति है जिसमें बापू के निधन से राष्ट्र

को लगे आघात से विचलित हो मानस की वेदना ***'कारा'*** के रूप में अभिव्यक्त हुई है। एक उदाहरण देखिए-

***''मैं युग की अपमानित नारी,***
***है अब मेरा जर्जर शरीर***
***क्या कह सकती, कब ढह जाये,***
***यह श्रान्त, क्लान्त, बोझिल अधीर ॥''***[6]

प्रस्तुत खण्डकाव्य में चार सर्ग है- शाहजहाँ', 'बहादुर शाह', 'भगतसिंह', 'गाँधी' सर्ग। इसमें कोई नायक नही है बल्कि 'कारा' स्वयं नायिका है जो माँ की तरह संवेदनशील है, शांति प्रदान करने का प्रयास करती है तथा माँ के समान रोती है-

***''बन्दी! मेरे इन नयनों ने***
***कितनी आकृतियाँ हैं जानी।***
***इन कानों ने जाने कितनी***
***पग-ध्वनियाँ अब तक पहचानी ॥''***[7]

'कारा' की भूमिका मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखी है। उनके अनुसार ***''श्री भागवत प्रसाद मिश्र जी की 'कारा' कुछ समय के लिए मन को अपने में रोके रखती है, मर्म को छू लेना ही तो कवि की सफलता का प्रमाण है''***[8] 'कारा' में कवि का आत्म-दर्शन भी परिलक्षित होता है। 'कारा' के तत्व ज्ञानी के रूप में चित्रण का उदाहरण देखिए-

***''तुम कर्मयोग अवतार रूप***
***पर मैं तो साधारण नारी।***
***तुम प्रबल-मोह-बंधन विजयी***
***पर मैं जीवन की लाचारी ॥''***[9]

'हरि पतित पावन सुने' इनकी भक्तिरचना है जिसमें भक्ति परक दोहे लिखे है। यथा-

***''प्रेमपंथ में आय के देखी उलटी-रीत।***
***ज्यों-ज्यों हरि भाजन चाहत, त्यों-त्यों बढ़ती प्रीत ॥''***[10]

'तरंगिणी' कवि के युवा जीवन की कल्पनाओं और अनुभवों की अभिव्यक्तियों का संग्रह है। 'तूफानों का दीप' शीर्षक कविता से उदाहरण दृष्टव्य है-

***"मैं तूफानों का दीप, सदा जलता आया।***
***मैं अंधकार की आँखों में खलता आया ॥''***[11]

मिश्र जी के काव्य की प्रधान विशेषता राष्ट्रप्रेम, सौन्दर्यबोध और आध्यात्मिकता है। जीवन की नश्वरता के समक्ष अस्तित्व की लघुता या विशालता गौण है। चिड़ियां के माध्यम से इसी तथ्य की पुष्टि कराता उदाहरण निम्नस्थ है-

*''फिर क्यों डराती मुझे गिरि की विशालता,*
*मेघों का गर्जन, विशाल बाहु बरगद की!*
*और उन मकानों की खिड़की पर बैठा वह,*
*आदम का बच्चा मुझे गोली मार देता है।''*(12)

('विस्तार' शीर्षक से)

राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम के उद्‌गार और नर-नारी को जगाने, देश पर कुर्बान होने का आह्‌वान भी इन्होंने किया है। यथा-

*''ऐसा वृत, ऐसा लक्ष्य लिये*
*वे वीर धरा पर आये थे।*
*केवल इस हेतु उन्होंने सर*
*बंदी! हँसकर कटवाये थे।''*(13)

कवि को बचपन से ही उर्दू से लगाव था। इन्हें पंडित रामनरेश त्रिपाठी सम्पादित 'कविता कौमुदी' से प्रेरणा मिली, जिसमें उर्दू की महत्त्वपूर्ण कृतियों का संपादन एवं समीक्षा हुई थी और उन्होंने अपना उपनाम 'नियाज' रखा। परन्तु वे उर्दू नहीं पढ़ सकते है। उन्होंने देवनागरी लिपि में ग़ज़लें लिखी है। एक उदाहरण देखिए-

*''शामें-गम की न जाहिरात करो,*
*अब तो बोझिल न कायनात करो ॥''*(14)

साई बाबा के व्यक्तितत्व एवं जीवन-दर्शन से प्रभावित होकर 'सुमनांजलि' रचना प्रकाशित हुई जिसमें मंगलाचरण से प्रारंभ होकर ब्रह्मा, शंकर, गणेश, शारदा, कृष्ण और साई बाबा की स्तुति की गई है जो भजनों, गीतों, ग़ज़लों और दोहों का संग्रह है। 'सुमनांजलि' का एक भजन अवलोकनीय है-

*''तुम बिन कौन हमारो साईं*
*तेरी कृपा बिना मेरे प्रभु*
*जाय न मन की छाईं।।*
*तुम बिन कौन.....।''*(15)

मिश्र जी ने हिन्दी और उर्दू-दोनों भाषा-शैलियों में सुन्दर रचनाएँ की है। भावों

की उदात्तता, भाषा की प्राञ्जलता और छन्द तथा लय का निर्वाह मिश्र जी के काव्य की प्रधान विशेषता है। कवि के जीवन-दर्शन का प्रभाव उनकी कविता पर भी पड़ा है। उन्हें तथा उनकी कृतियों को अनेक साहित्यिक संस्थाओं ने सम्मानित एवं पुरस्कृत किया है। मिश्र जी का अधिकांश साहित्य अभी अप्रकाशित है। अभी तक प्रकाशित साहित्य ने उन्हें गुजरात के अग्रगण्य कवियों में स्थान दिलाया है।

***डॉ0 अम्बा शंकर नागर***

डॉ0 अम्बाशंकर नागर हिन्दी-जगत् के प्रतिष्ठित आचार्य, कवि, चिन्तक, सम्पादक एवं समीक्षक हैं। इनका जन्म 6 अगस्त, 1925 ई0 को जयपुर, राजस्थान के नागर परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से हुई। इन्होंने एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ***'गुजरात की हिन्दी-सेवा'*** इनका शोध प्रबन्ध का विषय है और इन्होंने अपने शोधार्थियों से भी इस विषय पर शोध-कार्य करवाया है। इन्होंने चित्रकला एवं संगीत कला की भी विधिवत् शिक्षा ली है। संगीत की शीर्षस्थ संस्था 'सुरसिंगार संसद, बम्बई' ने उन्हें संगीत की सर्वोच्च 'सारंग देव फैलोशिप' से सम्मानित किया है। बड़ौदा एवं अहमदाबाद के विश्वविद्यालयों में वर्षों तक हिन्दी-विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष तथा भाषा साहित्य भवन के निदेशक के रूप में सन् 1985 ई0 में सेवानिवृत हुए। इस समय में गुजरात राज्य की हिन्दी साहित्य अकादमी तथा हिन्दी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष तथा गुजरात विद्यापीठ के 'भारतीय भाषा संस्कृति संस्थान' के मानद निदेशक हैं। इन्होंने तीन बार विदेश यात्रा भी की है और वहाँ भी वे सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए हैं।

डॉ0 नागर ने गुजरात के प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कवियों और उनके हस्तलिखित ग्रंथों की खोज की है। उनके शताधिक शोध-लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। ***'गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रन्थ', 'दयाराम सतसई'*** (टीका सहित) ***'गुजरात के सन्तों की हिन्दी वाणी', 'रसिक रंजन'*** जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का इन्होंने संपादन किया है। उन्होंने बाल-साहित्य भी लिखा है। इनके द्वारा संपादित पुस्तकें गुजरात के साथ-साथ पूरे भारत में विभिन्न स्कूलों में पिछले 30 वर्षों से पढ़ाई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने हिन्दुस्तानी कोश, गुजराती-हिन्दी द्विभाषी कोश तथा त्रिभाषी कोश की रचना भी की है।

डॉ0 रघुनाथ भट्ट के शब्दों में ***''वे बहुश्रुत, बहुविद, विद्वान साहित्यकार एवं बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी हैं।''***[16] नागर जी के मित्रों के सबल आग्रह पर अब तक इनकी दो ही काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। इनमें एक काव्य-संकलन ***'चाँद-चाँदनी और कैक्टस'*** (सन् 1971 ई0 में) और दूसरा प्रबन्ध काव्य ***'प्रम्लोचा'*** (सन् 1995 ई0 में) दोनों

ही कृतियाँ हिन्दी-जगत में खूब चर्चित रही है।

'चाँद-चाँदनी और कैक्टस' में डॉ0 नागर द्वारा समय-समय पर विभिन्न परिस्थितियों में लिखी गई कविताओं का प्रथम संकलन है। इन कविताओं में भोगे हुए क्षणों की अभिव्यक्ति, युग के यथार्थ के प्रति आक्रोश, तिरस्कार और घृणा की तीव्र अभिव्यक्ति के साथ-साथ जीवन के उत्साह तथा आशावादिता का स्वर भी मुखर हुआ है। इसमें प्रेम और शृंगार की कविताओं में मानवमन की कोमलतम स्थिति की विभिन्न मुद्राओं का निरूपण हुआ है। पूरा संकलन दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग को 'चाँद-चाँदनी' शीर्षक दिया है जिसमें 32 कविताओं तथा दूसरे भाग 'कैक्टस' में 23 कविताओं का समावेश हुआ है। 'चाँद-चाँदनी' भाग की सभी कविताओं में प्रेम के विभिन्न पहलुओं-प्यार की परिभाषा, प्यार के रूप, प्रेमियों की कोटियाँ, प्रेम की अद्वैतता, सर्वोपरिता, नित्य नवीनता, प्रेम का गणित आदि पर रसनिष्पन्दी शैली में बिम्बात्मक चित्र प्रस्तुत किए है।

'दो घड़ी हँस-बोल लें हम' और 'तू कर हृदय की बात' में कवि ने मिलन के क्षणों को भावुकता से साकार किया है। 'दो घड़ी हँस-बोल लें हम' में प्रेमी-प्रेमिका के मिलन से सारी सृष्टि आह्लादित हो रही है। देखिए-

*''निरख नभ में जा रही है चाँद की बारात,*
*और भू पर चाँदनी छिटकी हुई अवदात*
*गंधवाही पवन प्रेरित सुरभि की यह वृष्टि,*
*करती अतीन्द्रियलोक की अद्भुत अपूरब सृष्टि,*
*कितनी मधुर है मिलन की प्रिय आज की यह रात.....*

o o o

*बैठ तारों से इस यामिनी में आज हम तुम*
*जो सदा उलझी रहीं उन गुत्थियों को खोल लें हम।''*(17)

'एक अनुभूति' कविता में कवि ने मिलन से मिली तृप्ति का वर्णन किया है-

*''तुमसे मिलकर*
*अक्सर मुझे*
*ऐसा महसूस हुआ है:*
*कि जैसे सुरतरु*
*मेरे गुलदस्ते में उगा है !*
*और कामधेनु*

*तथास्तु कहती*
*मेरे द्वारे खड़ी है*
*तृप्तकाम हूँ मैं !''*[18]

मिलन के साथ-साथ विरह का भी इस खण्ड में चित्रण किया है। 'आज मन मायूस है' कविता में नायक 'स्वर्ण-मृग' के लोभ में 'सीता' को गँवाने के कारण पछता रहा है। वह उदास और मायूस है-

*''आज मन मायूस है और उदासी*
*लिहाफ-सी लिपटी हुई है।*
*जानता हूँ। कहीं कोई अंग। उघड़ा रह गया है*
*(और सर्द पड़ता जा रहा है)*
*ढँक नहीं पाता जिसे मैं।''*[19]

'मगर तुम न आए' कविता में विरहीमन का आधुनिक उपालंभ है। देखिए-

*''मैंने / तुम्हारे लिए / यह सब क्यों किया !*
*तुम से तो / ये बगुले अच्छे है,*
*जो मेरे तट पर / झख मारा करते हैं।''*[20]

नागर जी की रचनाओं में उनका संगीत-ज्ञान भी झलकता है। 'चाँद-चाँदनी' भाग की कविता में साजों की जुगलबन्दी के बिम्ब से प्रेम की परिभाषा दी है-

*''प्यार / दो साजों की / जुगलबन्दी है,*
*जिसमें हर तार / मिल के बजता है,*
*बेसुरे तारों को / खूँटियाँ खींचो*
*जो बेमेल हों, मिलाते जाओ, जिसे.....''*[21]

साथ ही 'रंग रसिया' गीत में विरहानुभूति को संगीत के उपकरणों से जोड़ दिया है। नृत्य, संगीत और साहित्य की त्रिवेणी में कवि ने षडज, ऋषभ, धैवत, निषाद, गांधार, मध्यम और पंचम के सात स्वरसप्तकों के साथ धिनगिन, तिनगिन, किटतक-गदगिन, नादिर नादिर तोम दिर दिर दिर के तालों को मिला कविता को संगीत से सँवारा है-

*''पंचम पिक-कूजन है मेरा। धवैत धवल हास है तेरा,*
*सब सपने हों साकार, मीत मन बसिया।''*[22]

'त्रिपथगा' में कवि ने प्रेम के तीनों रूपों को गंगा के तीनों रूपों से जोड़ा है। हिमालय से निकलने पर गंगा छोटी होती है घाटियों को पार करती हुई बलवती धारा बन

जाती है और अन्त में मंथर-मदिर हो समुद्र में मिल जाती है, उसी प्रकार प्रेम की धारा हृदय से उद्भूत होते समय छोटी लगती है फिर परिस्थितियों के आवेग में उद्दाम बन प्रेम सागर में अद्वैतता प्राप्त कर लेती है। इस कविता में कवि ने भारतीय-संस्कृति के अनुरूप दाम्पत्य-प्रेम का शालीन एवं व्यापक वर्णन किया है-

*''जिसे वरो, उसे हरो*
*और उसी को अनुसरो और नमन भी करो।''*(23)

'कैक्टस' भाग की कविताओं में चिन्तात्मकता है। वर्तमान समस्याओं को लेकर समाज के विभिन्न अंगों की असलियत को अनावृत करने में गहरे व्यंग्य और मर्मभेदी हास्य का पुट इन कविताओं की विशेषता है। डॉ0 नागर जी ने वर्तमान के मनुष्य के दोगलेपन को उजागर किया है-

*''आज का मनुष्य मनुष्य नही / लुच्चा है, लफंगा है*
*ऊपर से सफेद पोश / अन्दर से नंगा है।''*(24)

इस भाग की अधिकांश कविताएँ युग-बोध से अनुप्राणित है जिसमें वर्तमान की विसंगतियों-विडम्बनाओं से त्रस्त युग का वर्णन है। एक उदाहरण देखिए-

*''बात-बात में मनमुटाव, संशय, शंकाएँ,*
*गलतफ़हमियाँ, घोर निराशाएँ, कुंठाएँ*
*इन अवरोधों में से जो खेती है किश्ती*
*जागृत कर भावी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ,*
*बलिहारी है श्रद्धा के उस पतवार की।*
*कितनी अनजानी हैं राहें प्यार की ॥''*(25)

कवि ने नई भाव-भंगिमा से मिथकीय शब्दों के सार्थक प्रयोगों ने इन कविताओं को दोहरे, तिहरे अर्थबोधों से भरकर भाषा-शिल्प के नए आयाम छूए हैं। 'आज' कविता में गीता के अर्जुन के अन्तर्द्वन्द्व को दोहराया गया है-

*''लगता है / महाभारत का / पुनरावर्तन हो रहा है।*
*भारत में वास्तव में आज देश का हर भीष्म चुप है,*
*हर माली मौन है, हर पति शांतनु है, हर पत्नी*
*सत्यवती है और हर पुत्र व्यास द्वैपायन है।''*(26)

डॉ0 रघुनाथ भट्ट के अनुसार, 'चाँद-चाँदनी और कैक्टस' की ***''सारी कविताएँ परिपक्व अनुभूति के प्रवाह को शाश्वत और सामयिक जीवन-कूलों की मर्यादा में***

*परिभाषित करती हुई पाठक की चेतना को परम्परा के साथ जोड़कर जीवन के गूढ़ प्रश्नों को, जीवन की ज्योति को प्रकट करने के साथ-साथ वर्तमान जीवन की असंगति और विसंवादिता को व्यंग्य के पैने और धारदार हथियार से भीतरी तह तक स्फारित करने का सजग प्रयत्न करती है।''(27)*

'चाँद-चाँदनी और कैक्टस' कविता इस संकलन की शीर्ष कविता है जो दोहरे, तिहरे अर्थबोधों से भरी हुई है। कविता प्रेमत्रिकोण के साथ-साथ सांमती और समाजवादी दृष्टिकोण भी व्यंजित करती है। प्रस्तुत कविता में चाँदनी आकाश को छोड़ धरती पर आ गई -

*''कल रात / गगन की अट्टालिका पर*
*चाँद को सोया छोड़*
*चाँदनी धरती पर उतर आई।''(28)*

उसकी इस नादानी पर संसार हँस रहा है, उसे ताने मार रहा है। चाँदनी के इस कदम पर लोगों की मानसिकता का कवि ने इस प्रकार वर्णन किया है-

*''भोर भये-*
*चाँद चाँदनी को खोजने आया*
*तो चकोरों ने यूँ चुगली की-*
*'कल रात कैक्टस का पता पूछती फिरती थी चाँदनी।''(29)*

प्रस्तुत कविता में चाँद, चाँदनी, गगन, धरती और कैक्टस ऐसे शब्द हैं जो कवि और कविता के सम्बन्धों की सूक्ष्म अभिव्यंजना करने में समर्थ हैं। आज गगनधर्मी कविता कैक्टसगर्भा बन गई है। अपनी ध्वन्यात्मकता एवं अनेक अर्थबोधों के कारण यह इस संग्रह की श्रेष्ठ कविताओं में से एक है।

नागर जी की कविताओं में यथार्थ के स्वरों में कोरी निराशा या घृणा न होकर लोक-कल्याण और मानव की श्रेष्ठता की दिशा का उद्घोष भी विद्यमान है।

'प्रम्लोचा' प्रबन्ध काव्य में प्रणय और प्रत्यभिज्ञान का ऊर्जस्वित रूप प्रकट हुआ है। इस प्रबन्ध काव्य में मनुष्य के देवत्व प्राप्त करने की एकान्तिक तपः साधना और उसके सांसारिक रागात्मकता में आकण्ठ-निमग्न होने की कथा है। कवि ने प्रबन्ध काव्य को 'प्रादुर्भाव', 'प्रणय' और 'प्रत्यभिज्ञान' तीन सर्गो में विभाजित किया है। इस प्रबन्ध काव्य की कथा में कण्डुमुनि को उनके गुरु तपस्या के लिए एकान्त में छोड़ देते है और वे तपस्या से अनेक सिद्धियों के स्वामी बन जाते है। इन्द्र उनकी सिद्धियों से डर तपोभंग के लिए अप्सरा

प्रम्लोचा को भेजते है। प्रम्लोचा के रूप-सौन्दर्य को देख मुनि अभिभूत हो जाते हैं। वे तप: साधना भूल तनु-आराधना में निमग्न हो जाते है। इस तरह आठ सहस्त्र वर्ष प्रहर की तरह बीत जाते है। अचानक प्रत्याभिज्ञान के आलोक से कण्डु की संस्कार-चेतना जागृत हो जाती है और वे आत्मग्लानि से भर जाते हैं-

*"सर्वनाश ! / तो क्या*
*आठ सहस्र वर्ष तक / सम्मोहित था मैं*
*स्नान, ध्यान, संध्या, वंदन / स्वाध्याय आदि से-*
*विरत रहा मैं - / इस सुदीर्घ कालवधि में !*
*तो क्या काम - विमोहित था मैं ?*
*विवेक था अपहृत मेरा / इस सीमा तक ?"*(30)

प्रम्लोचा कामोपभोग के फल को स्वर्ग की ओर छलांग मारकर पादपों में बिखेर देती है। इस बिखरन से 'मारीषा' का जन्म होता है जो आगे चलकर प्रचेताओं के माध्यम से सृष्टि-प्रवर्तन का कारण बनी। प्रम्लोचा लौट जाती है। यही पौराणिक कथा है जो इस प्रबन्ध का आधार है। नागर जी ने अपने प्रबन्ध काव्य में प्रकृति के सुरम्य, सजीव बिम्ब प्रस्तुत किए हैं-

*"गोधूलि हो चली / अंशुमाली ने / प्रिय प्रतीची के /*
*मुख पर मल दी रोली / आम्रकुंज में / छिपी हुई*
*काली कोयल / सहसा पंचम में बोली और निशा ने /*
*निशानाथ की आगवानी में / बिखरा दी। तारों की*
*झोली।"*(31)

डॉ0 नागर जी ने संयोग शृंगार के आलंबन और उद्दीपनों का भावपूर्ण चित्रण किया है-

*"रोम-लता / हो उठी कंटकित / त्वचा-रूधिर चीत्कार उठे /*
*देह-दुर्ग के ढहे कँगूरे / आवेगों के ज्वार उठे /*
*आलिंगन दृढ़ हुए / कस गए / वस्त्राभरण / विदीर्ण*
*हुए समरांगण। बन गई सेज / नख-दंतक्षत उत्कीर्ण हुए।"*(32)

इस प्रबन्धकाव्य का भावपक्ष, कलापक्ष जितना सौन्दर्य-मण्डित एंव समृद्ध है उतना ही इसका दार्शनिक पक्ष सबल और सूक्ष्म है। कवि ने नारी को नर से अधिक सक्षम बताया है-

*''नारी तो / शक्ति का / अजस्र स्रोत है /*
*कारयित्री ऊर्जाएँ / प्रतिभाएँ भावयित्री /*
*सर्जक होने के नाते / प्रकृति प्रदत्त है उसको /*
*तन मन दोनों में / नारी नर से / बहुत अधिक सक्षम है।''*(33)

कवि ने प्रम्लोचा के माध्यम से प्रत्यभिज्ञान के क्षणों में कण्डु को जीवन की महत्ता बताकर सृष्टि-कल्याण के लिए प्रेरित किया है-

*''छिन्न करो / अपनी सब कुंठाएँ / उन्मुक्त करो/ अन्तर के रूद्ध द्वार*
*व्यष्टि साधना छोड़/ समष्टि का हित करो तपस्वी।''*(34)

इस प्रबन्ध काव्य में नागर जी ने भारतीयता के मानवीय रूप की परिपूर्णता का वर्णन किया है। डॉ0 गोवर्द्धन शर्मा के अनुसार ***''चेतना के उच्चतम रूप की एक नई परम्परा का प्रवर्तक यह प्रबन्ध काव्य है।''***(35)

***अविनाश श्रीवास्तव***

गुजरात के आधुनिक, अभिजात्य और बौद्धिक हिन्दी रचनाकारों में अग्रगण्य श्री अविनाश समर्थ एवं यशस्वी कवि, समीक्षक, लघुकथाकार, कहानीकार, संपादक एवं पत्रकार है। इनका जन्म 7 जनवरी, 1936 को रायबरेली (उ0प्र0) में हुआ। इन्होंने एम.ए., एल.एल. एम. किया है और भारतीय राजस्व सेवा में सहायक आयुक्त, आयकर के पद से निवृत हुए।

अविनाश जी के अब तक(1997 तक) नौ काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं- ***'मानसिक सन्निपात और टूटे हुए एवरेस्ट', 'समान्तर रेखाओं का त्रिकोण'***(1974), ***'पिछली बहार के सूरजमुखी'***(1977), ***'ठहरी हुई धूप'***(1978), ***'छूटे तटबन्धों पर पुनः'***(1981), ***'परिवेश गगन बदले क्षण-क्षण'***(1994), ***'दिन की थाली में परोसी शाम'***(1996), ***'पिघले हुए मौन'***(1997), ***'आँखों में डूबते सूरज'***(1997),।

अविनाश जी सुदर्शन व्यक्तित्व एवं जवारीदार आवाज के धनी हैं। इन्हें अंग्रेजी, गुजराती, बंगला और रूसी भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। उन्होंने अंग्रेजी और गुजराती से कुछ अनुवाद भी किए है। इनकी कविताएँ देश-विदेश में अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुई है। ये अनेक संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत हो चुके है।

श्री अविनाश की कविताओं में ऋतुगंध के यायावरी हस्ताक्षर और सामाजिक वर्जनाओं के व्यंग्यात्मक कशाघात स्पष्ट दिखाई देते हैं-

*''प्राण में फिर/गीत पंछी चहकते हैं/शोख पुरवैया/बचा*
*नजरें-गंध वातायन अहर्निश खोलती है/...../हृदय में*

*बिम्ब उगते है।''*(36)

-'एक धागे में सभी ऋतुएँ पिरोए' शीर्षक कविता से

इनकी कविताओं में अभिशप्त एवं संत्रस्त मानव की समस्याओं का यथार्थ चित्रण, शैलीगत नावीन्य और नए-नए अर्थों को ध्वनित करने वाला अभिनव प्रतीक-विधान दिखाई देता है। वस्तुस्थिति की कवि ने प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति की है-

*''रंग-बिरंगी कोमल-कठिन-तरल-बेढ़ंगी*
*गाँठें ही गाँठें, अहं की सारी, पीठ पे लादे,*
*सर पे ढोये, सर में छिपाये।''*(37)

'मानसिक सन्निपात और टूटे हुए एवरेस्ट', 'समान्तर रेखाओं का त्रिकोण', 'पिछली बहार के सूरजमुखी', 'ठहरी हुई धूप' और 'छूटे तटबन्धों पर पुनः' संग्रहों की कविता में समकालीन कवियों की तरह यथार्थ से टकराने एवं जूझने के सामर्थ्य, संकल्प की अपेक्षा घोर निराशा और अंधकार है-

*''अवकाश के क्षणों की संगिनी वेदना,*
*सुख की परिभाषा से मंडित वेदना,*
*आदि और अन्त से अनावृत वेदना,*
*प्रश्नवाचक और पूर्णविराम से अलंकृत वेदना / और सुख?*
*उपजीवी, आश्रित, साक्षेप, भ्रमित।''*(38)

अविनाश जी ने प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग से हताशा की अनुभूति को सम्प्रेषणीय बना दिया है-

*''हर सुबह विश्वास का सूरज उगे संभव नहीं*
*हर अभाव से श्राप का सेबल बने, मुमकिन नहीं।''*(39)

अविनाश जी के काव्य-संग्रह 'परिवेश गगन बदले क्षण-क्षण' की अधिकांश कविताएँ क्षण-क्षण परिवर्तित होते गगन के मनोरम चित्र अंकित करती हैं- हेमन्त, फागुन, बसन्त, पतझड़, जेठ, आषाढ़..... प्रकृति के बदलते ऋतु चक्र में पलाश, केसर क्यारी, पनघट हवा उद्विग्न धरती, पोखर दमकती दामिनी, सप्तरंगी इन्द्रधनुष.....और पल-पल बदलते गगन के नित नए रूप। वर्षा की सरसता का एक चित्रांकन दृष्टव्य है-

*''पुरवइया, सन...सनन...सनन...सन*
*सावन करता है अभिनन्दन*
*झरता नीर निरन्तर छप छप*
*रस के पगे हुए है कण कण''*(40)

कवि ने प्रकृति के माध्यम से अपने युग की मानसिकता तथा अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की है। अविनाश जी ने अपनी कविताओं में लोकजीवन और ग्रामीण परिवेश को भी स्थान दिया है। 'ठहरी हुई धूप' में कवि द्वारा विरह-विदग्ध नारी के मनोभावों का वर्णन लोक जीवन की अनुगूंज लिए है-

*''गंधों के उपवन में*
*मुरझाये फूल*
*नयनों में छलक रहे*
*पतझर के शूल।''*(41)

विष्णु प्रभाकर जी के शब्दों में, ***''आपकी कविता में लोक-गंध और संगीत रहता है वह सम्प्रेषणीयता को सहज बना देता है''***(42) अविनाश जी की कविताओं में युगीन परिस्थितियों और मानव-मन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है-

*''यह कैसा बन्धन?*
*आज की चित्रकला अमूर्त है*
*कविता अगम्य है*
*परिवार असहाय है*
*अमूर्त्तता अगम्यता*
*अस्पष्टता, असाध्यता, अराजकता*
*के गुणों से विभूषित समाज में*
*खेतों में बाड़''*(43)

इनके काव्य में निराशा और त्रासदी के बहुआयामी चित्र हैं। कवि की सौन्दर्य-दृष्टि तथा संवेदना का प्रसार ग्रामांचल से नगरांचल तक व्याप्त है। उन्होंने प्रकृति के सुरम्य चित्रण के साथ नगरीय जीवन की विद्रूपता को भी रेखांकित किया है। नए प्रतीकों, बिम्बों का चित्रण, ध्वन्यात्मकता, लयात्मकता, संगीतात्मकता उनकी काव्य-शैली की विशेषता है। युगीन विडम्बनापूर्ण स्थितियों के प्रति संवेदना, घनी निराशा और मानव-मन के राग-विरागों की अनुभूति और अभिव्यक्ति के कारण अविनाश जी का आधुनिक कवियों में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

***कमल पुंजाणी***

पश्चिमांचल के डॉ0 कमल पुंजाणी का जन्म 14 जनवरी, 1942 को जामनगर में हुआ। इन्होंने हिन्दी में एम.ए. तथा ***'हिन्दी का पत्र साहित्य'*** विषय में शोध-कार्य किया। और जामनगर में प्राध्यापक हो गए।

डॉ0 कमल पुंजाणी प्रसिद्ध कवि, समीक्षक, लेखक और अनुवादक हैं। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखा है। इनके ***'प्रतिबिम्बित इन्द्रधनुष'***(1975), ***'क्षितिज से दूर'***(1978), ***'विवशता से बँधे हुए'***(1986), ***'इन्दु और बिन्दु'*** काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। साहित्य के अतिरिक्त संगीत, ज्योतिष, अध्यात्म, शिक्षा, इतिहास, दर्शन आदि में भी इनकी रुचि है।

इन्होंने समकालीन भावबोध को अछांदस कविताओं में व्यक्त किया है। इनकी कविताएँ छोटी, सरल और सारगर्भित होती हैं। कवि ने वर्तमान समय में एकांत जीवन की समस्याओं का वर्णन 'क्षितिज से दूर' संग्रह में इस प्रकार किया है-

*''कमरे का नुकीला एकान्त / चुभता है*
*आलपिन की तरह / रातभर*
*मैं उसे / रोशनी की आँच में*
*तपाता हूँ / मगर, / सुबह होते ही*
*वह सड़क बनकर / मुझे*
*दू....र तक*
*घसीट जाता है !''*(44)

पुंजाणी जी ने जीवन की कड़वी सच्चाइयों को प्रकृति के उपादानों के माध्यम से अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। मनुष्य और प्रकृति का सृष्टि के आरम्भ से ही साथ रहा है। यदि प्रकृति झुलसती है तो उससे सम्बद्ध सभी जड़-चेतन, मनुष्य झुलस जाते हैं। पर वर्तमान का मुरझाना हमारी नियति नहीं है, इसलिए हमें प्रयत्न करना पड़ता है पर थोड़ी-सी असावधानी भी हमें अंधकार में धकेल देती है। 'क्षितिज से दूर' शीर्षक कविता में प्रकृति के माध्यम से कवि ने इन्हीं तथ्यों का वर्णन किया है-

*''बंजर की झुलसाती रेत*
*झुलस जाते है*
*खरगोशी शाम के पाँव*
*o o o*
*कोई चुपके से लिख देता है...*
*कई अनछुए क्षितिजों के नाम*
*जिनमें से*
*.... कुछ को*

*काट देती है*

*रात की कंटीली छाँव।''*[45]

भौतिकता की दौड़ में चारों तरफ शोषण का कुहासा फैला हुआ है, मानवता खत्म हो रही है। धरती को बचाने के लिए अपूजित निस्तेज मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा करनी होगी। 'पावन घड़ी' शीर्षक कविता में कवि का यही अभिप्रेत है-

*''क्यों बनाये हैं*

*शैल-शिखरों पर*

*संगमरमरी शब्दों के मन्दिर?*

*मूर्तियाँ*

*अपूजित, निस्तेज पड़ी हैं''*[46]

कमल जी की कविताओं में युगीन विडम्बनाओं को भोगते हुए भी भविष्य के प्रति विश्वास, निष्ठा और जूझने के सशक्त स्वर है। नूतन सृजन के लिए मानवीय एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को चुनकर स्वान्तः सुखाय और जनकल्याण की भावना को बल देना होगा-

*''कभी तो बन्द करना पड़ेगा*

*लाशों का व्यापार.....''*[47]

इनकी कविताओं में अन्तर्मन की सूक्ष्म संवेदनाओं और युगीन समस्याओं को बिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। डॉ0 सुरेश प्रसाद सिन्हा के शब्दों में ***''कवि पुंजाणी की रचनाएँ प्रासंगिक हैं। वर्तमान के खुरदुरेपन को व्यक्त करते हुए मंगलमय भविष्य की कामनाओं से अनुप्राणित हैं।''***[48]

***डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल***

गुजरात के जाने-माने कवि, हाइकुकार एवं साहित्यकार डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल का जन्म बरेली के फतहगंज गाँव में 23 फरवरी, 1930 ई0 को हुआ। इन्होंने एम.ए. तथा ***'हिन्दी उपन्यास और राजनीतिक आन्दोलन'*** विषय पर शोध-कार्य किया।

डॉ0 अग्रवाल बचपन से ही कविता करते थे और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखते थे। ये कवि सम्मेलनों और विचार गोष्ठियों में सक्रिय भाग लेने लगे। डॉ0 अग्रवाल की प्रथम कृति ***'शाश्वत क्षितिज'*** (कविता-संग्रह) सन 1985 ई0 में प्रकाशित हुई।

इनकी अन्य प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं- 1) ***'टुकड़े-टुकड़े आकाश' (हाइकु-संग्रह, 1987), 2) 'बस ! तुम ही तुम' (गीत-संग्रह, 1987), 3) 'खामोश हूँ मैं',***

*(काव्य-संग्रह, 1987), 4) 'प्यासी धरती, खाली बादल' (काव्य-संग्रह, 1993), 5) 'अकह' (काव्य एवं हाइकु-संग्रह, 1994), 6) 'अर्घ्य' (25 भाषाओं में अनुदित हाइकु-संग्रह, 1995), 7) 'सबरस' (हाइकु-संग्रह, 1997), 8) 'मोड़ पर... '(काव्य-संग्रह,1997), 9) 'इन्द्रधनुष' (हाइकु-संग्रह, 2000), 10) 'अस्ति-नास्ति' (हाइकु-संग्रह, 2001)।*

इसके अतिरिक्त इन्होंने अनेक काव्य-संग्रहों का संपादन तथा शोध, समीक्षा विषयक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। आजकल वे एक 'हाइकु' पत्रिका का संपादन भी कर रहे हैं। जापानी काव्यरूप 'हाइकु' को हिन्दी में पुष्पित-पल्लवित करने में डॉ0 अग्रवाल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कवि के रूप में वे गुजरात के प्रथम प्रतिनिधि हाइकुकार हैं। हाइकु के अतिरिक्त गीत, ग़ज़ल और मुक्त छन्द में भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। इसके अतिरिक्त इनके शोध-प्रबन्ध एवं कई समीक्षात्मक लेख प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने 4 पुस्तकों का संपादन किया है तथा 'हाइकु-भारती' (त्रैमासिक पत्रिका) का संपादन कर रहे हैं।

वे अपने साहित्यिक सेवा-कार्य के कारण विभिन्न विश्वविद्यालयों, साहित्य-सम्मेलनों तथा विविध साहित्यिक-सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए हैं। 'साहित्य महामहोपाध्याय', 'साहित्यलंकार', 'साहित्य शिरोमणि' आदि सम्मानोपाधियों तथा 'महाकवि जायसी सम्मान' से ये सम्मानित हुए हैं। ये अनेक साहित्यिक संस्थाओं के सदस्य तथा संचालन समितियों के सदस्य रहे है। वर्तमान में ये नैतिक प्रचारिणी सभा, अहमदाबाद के मंत्री; साहित्य-भारती, अहमदाबाद के संयोजक; गुज0 वि0 वि0 की हिन्दी बोर्ड के सदस्य; हिन्द प्राध्यापक परिषद एवं भारतीय हिन्दी परिषद के आजीवन सदस्य; इं0 गां0 रा0 मुक्त वि0 वि0 के एकेडेमिक काउन्सलर; गुजरात विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर एवं पीएच.डी. निर्देशक हैं।

'शाश्वत क्षितिज' डॉ0 अग्रवाल का तथा हिन्दी में प्रकाशित सर्वप्रथम हाइकु-संग्रह है जिसमें 207 हाइकु संग्रहित हैं। इसका प्रथम हाइकु ही 'शाश्वत क्षितिज' शीर्षक को सार्थक करता है, यथा-

*"ओर न छोर /कहाँ ढूँढूँ क्षितिज / कहाँ नही है?"*

और

*"बर्फ से ढँके / शिखरों का सौन्दर्य / शाश्वत गीत।"*[49]

इस संग्रह के हाइकुओं में आध्यात्मिकता, सौन्दर्य-चेतना, गतिशीलता, प्रकृति का मानवीकरण, मानव का प्रकृतिकरण के साथ-साथ जीवन के विविध भाव, सच्चाई, आयाम, जीवन-मृत्यु, सुख-दुख, प्रेम, विरह, व्यंग्य, आत्म-निरीक्षण तथा मिथकीय प्रतीकों के नए रूप

मिलते हैं-

*''पूर्ण में पूर्ण / जोड़ा, घटाया, गुना / पूर्ण ही रहा।''*(50)

और

*''बातें करती / हरियाले लान पै / पड़ी कुर्सियाँ।''*(51)

'टुकड़े-टुकड़े आकाश' काव्य-संग्रह में 144 हाइकुओं का संकलन है। समग्रता में आस्था रखने वाले कवि को धरती और आकाश के टुकड़ों से पीड़ा होती है। प्रथम हाइकु में ही इस पीड़ा की अभिव्यक्ति होती है-

*''कर तो रहे / आकाश के टुकड़े ! / रक्खोगे कहाँ?''*

और

*''यादों के लम्हें / कड़वा मीठा स्वाद / दर्दीला गीत।''*(52)

लेकिन टुकड़े-टुकड़े आकाश के बीच कहीं समग्रता भी है। डॉ0 विष्णु ओझा के अनुसार ***''टुकड़े-टुकड़े आकाश' - में केवल कृत्रिम विभाजन, विघटन, स्वार्थान्धता आदि की पीड़ा ही नहीं है, संयोग-वियोग स्मृति-शिकायत, प्रतीक्षा, विषाद आदि सब कुछ है।''***(53)

डॉ0 अग्रवाल के 'अकह' (1994) काव्य-संग्रह के (दो भागों में विभक्त) पूर्वार्द्ध में 102 हाइकु हैं। पूर्वार्द्ध भाग में हाइकुओं द्वारा जीवन की विषमताओं, विसंगतियों, व्यर्थताओं पर हल्के व्यंग्य के साथ-साथ प्रकृति के और समकालीनता के बिम्ब बनाएँ है जो मन को छू लेते है। कुछ हाइकु -

*''शीशों के घर / इकट्ठे कर रहे/ 'अणु' पत्थर।,''*

*''वीरान रास्ते / ठठरियाँ गवाह / सूखा पड़ा है।''*(54)

*और*

*''जलता नीड़/हवा दे रहे पत्ते/उसी पेड़ के।''*(55)

'अर्घ्य' (1995) में डॉ0 अग्रवाल जी के 65 श्रेष्ठ हाइकुओं का सत्रह भारतीय एवं सात विदेशी भाषाओं में अनुदित कर संकलन किया गया है। 1997 में प्रकाशित 'सबरस' हाइकु-संग्रह है जिसमें पूर्व चर्चित परम्परा का ही निर्वाह हुआ है-

*1) ''बन्द हो दंगे / किन्तु घृणा के दाग / कभी न जाते।''* (56)

*2) ''निमित्त बना / लिखता मैं ! सर्जक?- / कोई और है।''*(57)

श्री कृष्ण कान्त निलोगे ने 'ऋतुचक्र' में उनकी समीक्षा करते हुए लिखा है- ***''मूल (जापानी) हाइकु कवि की तरह डॉ0 अग्रवाल अपने हिन्दी हाइकुओं में बिम्बों***

*को उभार देते हैं, अनुभूति को मुखर करते हैं लेकिन उनकी व्याख्या नहीं करते।''*(58)

'खामोश हूँ मैं' काव्य-संग्रह में अग्रवाल जी द्वारा चालीस कविताओं का संकलन हुआ है। 'नकाब', 'समयबोध' और 'अहमदाबाद की तलाश' लम्बी कविताएँ है जो अपने आप में विशिष्ट हैं। पहले कभी 'अहमदाबाद' मुस्कुराता था और आज 'भारत का मानचेस्टर' कहलाने वाला अहमदाबाद कल-कारखानों, मशीनों, दंगे-फसाद, बन्द के शोर में खो गया है। यह देख कवि का हृदय व्यथित हो उठा है। ऐसे समय के एक बुद्धिजीवी का शब्द चित्र देखिए-

*''क्योंकि बुद्धिजीवी तो, संत्रास पहनता है*
*अनास्था ओढ़ता है, अस्तित्वहीनता जीता है*
*आत्मदया खाता है, उदासीनता में रहता है।''*(59)

मनुष्य आंकाक्षाओं के आवेग में आकाश में उड़ा जा रहा है। वह 'भीड़' का अंग हो गया है और अपनी पहचान को ही खोता जा रहा है। भौतिकता की आस में वह किसी को नहीं पहचानता-

*''फिर भी दिल-दिमागों में हैं*
*आसमाँ भर उम्मीदें;*
*अनजाने, अनसुने, अनभोगे सुख की तलाश;*
*धरती पर उगकर भी*
*-धरती पर हैं ये कहाँ?*
*इतनी छोटी-सी बात*
*-क्या मैं नहीं जानता?*
*सच मानें आप-*
*यहाँ कोई किसी को नहीं पहचानता।''*(60)

('पहचान' कविता से)

डॉ0 अग्रवाल के काव्य-संग्रह 'बस ! तुम ही तुम' में विप्रलम्भ शृंगार की अभिव्यंजना हुई है। छायावादी शैली में रचे गीतों, मुक्तकों, ग़ज़लों और गीतांशों में प्रेम और शृंगार का भावपूर्ण चित्रण हैं। कहीं मनुहार है, कहीं वेदना की कसक है-

*''रात-दिन संघर्षमय तूफान के भीषण झकोरे।*
*जिन्दगी की इस अमावस के नयन में स्याह डोरे।*
*कल्पना की तूलिका ने स्वप्नमय जो चित्र खींचे*
*भाग्य की लहरों में घुल कर आज निकले पृष्ठ कोरे।''*(61)

'प्यासी धरती: खाली बादल' - अग्रवाल जी की 47 कविताओं का संग्रह है जिसमें प्रणय, राजनीति, यथार्थ-बोध, पद-लिप्सा, मशीनीकरण से उपजी भौतिकता आदि विभिन्न विषयों को कविताओं का आधार बनाया गया है। आज का साधारण नागरिक अभिमन्यु है जो हर पल अन्याय, झूठ आदि महारथियों से घिर कर मारा जाता है-

*''अपने अपने युग के अभिमन्युओं को मारकर*
*अपनी अपनी नपुंसक विजय पर*
*हर्षोल्लास मनाते रहे हैं।''*(62)

('चक्रव्यूह' शीर्षक से)

डॉ0 विष्णु ओझा के शब्दों में -*''प्यासी धरती' जन-साधारण की आकांक्षाओं, आवश्यकताओं और नियति (प्रकृति-विकृति-नियति) का प्रतीक है तो 'खाली बादल' नेताओं, शासकों, समाज-कर्णधारों, धर्मदण्ड़कों, आचार्यों आदि का प्रतीक हैं।''*(63) ये खाली बादल उत्ताप, छल, तृष्णा, घुटन ही अधिक देते हैं। स्वतन्त्रता-पश्चात् हमारी आकांक्षाएँ बढ़ गई हैं। नेता जन-कल्याण की अपेक्षा जनता पर बोझ बन अपनी स्वार्थ-सिद्धि में लीन है-

*''कुछ कम नही होता*
*आदमी का अपना ही बोझ।*
*ऊपर से लदी कुर्सी,*
*कुर्सी पर नेता,*
*कभी कुश्ती लड़ता,*
*कभी बादाम खाता,*
*चमचे जुटाता ॥''*(64)

('गुनहगार' कविता से)

इस संग्रह में राष्ट्रीय विघटन, हिंसा, दमन, शोषण, पीड़ित मानवता के मूल्य-ह्रास, सामाजिक वैषम्य, शांसकीय दायित्वहीनता, निपट अवसरवादिता, विज्ञान की विनाशक शक्ति जैसी बुराइयों से व्यथित कवि ने अपने भावों की शब्दों के रूप में अभिव्यक्ति की है।

कवि के 'अकह' काव्य-संग्रह के उत्तरार्द्ध भाग में किशोरावस्था की मस्ती से भरे गीतों का संकलन है। इसे 'स्वाति' शीर्षक दिया है। इसमें गीत, मुक्तक, ग़ज़लें हैं। 'जाने की बात' शीर्षक कविता में जीवन की यही मस्ती छलक रही है-

*''बहती जो बांसती बयार,*

*सुधियों के सपने महकाती,*
*कोकिल मदमस्त बनी डोले,*
*हर डाल पात से बतियाती,*
*देखो तो भँवरे कमलों का,*
*यौवनरस पीकर इतराते।''*(65)

'मोड़ पर' काव्य-संग्रह में कवि की अछान्दस 50 कविताएँ है। कवि ने दायित्व बोध से अनुप्राणित हो इस संग्रह में जीवन के विभिन्न पक्षों की कटु आलोचनाएँ की हैं। एक उदाहरण देखिए-

*''युद्ध-*
*केवल कुरुक्षेत्रों में ही नहीं होते!*
*युद्ध तो चलता रहता है*
*हृदय की हर धड़कन के समान*
*घर-बाहर, मन-शरीर, गली-सड़क।''*(66)

('युद्ध' शीर्षक से)

भाषा, भाव और शिल्प की दृष्टि से डॉ0 अग्रवाल की कविताएँ सराहनीय हैं। उन्होंने छांदस और अछांदस दोनों प्रकार की कविताएँ लिखी हैं। उन्होंने किसी वाद और काल में बंध कर लिखने की अपेक्षा युगानुसरण किया है। उनकी कविताओं में जीवन और जगत के यथार्थ और आदर्श की दार्शनिक व्याख्या को बड़ी मुखरता से अभिव्यक्ति मिली है। इनके गीतों और कविताओं में गेयता, पाठात्मकता, बिम्बात्मकता ने भाव-सौन्दर्य बढ़ा दिया है। हिन्दी साहित्य में डॉ0 अग्रवाल जी का प्रदाय महत्वपूर्ण है।

### *डॉ0 किशोर काबरा*

गुजरात के हिन्दी-जगत के लोकप्रिय कवि श्री किशोर काबरा जी कवि, समीक्षक, लघुकथा-लेखक, अनुवादक एवं संपादक हैं। इनका जन्म 26 दिसम्बर, सन 1934 को मन्दसौर (म.प्र.) में हुआ। इन्होंने एम.ए. तथा ***'रीतिकालीन काव्य में शब्दालंकार'*** विषय पर शोध -कार्य किया है। 30 वर्षों तक अध्यापन से जुड़े रहने के बाद स्वैच्छिक निवृति ले साहित्य को समर्पित हो गए।

किशोर काबरा जी की सवा सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं- ***'उत्तर महाभारत' (महाकाव्य, 1990 में प्रकाशित), 'उत्तर रामायण' (महाकाव्य, 1994), 'खट्टे अंगूर' (काव्य-संग्रह, 1994), 'परिताप के पाँच क्षण'***

*(खण्डकाव्य, 1979), 'धनुष भंग' (खण्डकाव्य, 1982), 'नरो वा कुंजरो वा' (प्रबन्ध काव्य, 1994), 'किशोर सतसई' (काव्य-संग्रह, 1997), 'जलते पनघट:बुझते मरघट' (काव्य-संग्रह, 1972), 'साले की कृपा' (हास्य-व्यंग्य कविताएँ, 1975), 'सारथि, मेरे रथ को लौटा ले' (काव्य-संग्रह, 1997), 'टूटा हुआ शहर' (काव्य-संग्रह, 1983), 'ऋतुमति है प्यास' (काव्य-संग्रह, 1990), 'हाशिये की कविताएँ' (काव्य-संग्रह, 1995), 'मैं एक दर्पण हूँ' (काव्य-संग्रह, 1996), 'चन्दन हो गया हूँ' (काव्य-संग्रह, 1999), 'तितली के पंख' (बाल-साहित्य, 1972), 'टिमटिम तारे' (बाल-गीत, 1975), 'बाल रामायण' (कथाकाव्य, 1979), 'बाल कृष्णायन' (कथाकाव्य, 1989), 'आज यौवन ने पुकारा देश को' (काव्य-संग्रह, 1985), 'हम सब पंछी' (बाल-काव्य, 1992), 'नई कवितावली' (काव्य-संग्रह)।*

इन्होंने 12 बाल पुस्तकें, 12 अनुदित ग्रंथ तथा 'भाषा-सेतु' पत्रिका का संपादन किया है। प्रबन्ध काव्यों में उन्होंने रामायण, महाभारत और भागवत को आधार बनाया है। मुक्तक कविताओं में युगीन संदर्भों का चित्रण किया है। काबरा जी कवि-सम्मेलनों के लोकप्रिय और प्रतिष्ठित मंचीय कवि हैं तथा हिन्दी संस्थान तथा अन्य अनेक साहित्यिक संस्थाओं से पुरस्कृत एवं सम्मानित हुए हैं। इन्हें 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार'; 'महाकवि राष्ट्रीय आत्मा पुरस्कार', कानपुर; 'अर्चना पुरस्कार', कलकता; 'जयशंकर प्रसाद पुरस्कार', अहमदाबाद; 'मारवाड़ी सम्मेलन पुरस्कार', मुम्बई; 'एन.सी.ई.आर.टी. बाल पुरस्कार', नई दिल्ली; 'गरिमा पुरस्कार' आदि अनेक समान मिले हैं। ये 'साहित्यकलाश्री', 'साहित्य शिरोमणि', 'विद्यावाचस्पति', 'राष्ट्र भाषा आचार्य', 'साहित्य श्री', 'साहित्यमणि' आदि सम्मानित उपाधियों से अलंकृत हुए हैं।

'उत्तर महाभारत' में पाँचों पांडवों और द्रौपदी के महाप्रस्थान और स्वर्गारोहण की कथा है जिसमें युधिष्ठिर को छोड़ अन्य सभी हिमालय की बर्फ में गल जाते हैं। मृत्यु से साक्षात्कार के समय सभी तटस्थ दार्शनिक की भाँति आत्मलोचन करते हैं। इस कथा को कवि ने प्रतीकात्मक अर्थ से भी जोड़ने का प्रयत्न किया है। पाँच पांडवों को पाँच कर्मेन्द्रियों तथा पाँच ज्ञानेन्द्रियों के तथा द्रौपदी को मन के प्रतीक माने हैं। अन्य अर्थ में द्रौपदी कामवासना की तथा युधिष्ठिर मनुष्य की अन्तर्निहित आध्यात्मिक अन्वेषणशीलता के परिचायक माने गए हैं। उदाहरण दृष्टव्य है-

*"लग रहा ऐसा कि जैसे-*
*पाँच प्राणों को समेटे*

*हृदय की धड़कन*
*सुषुम्ना की अगोचर सीढ़ियों पर चढ़ रही हो।*
*लग रहा ऐसा कि जैसे-*
*पंच तत्त्वों से बँधी काया*
*मनोमय कोष पर अस्तित्त्व अपना मढ़ रही हो।*
*लग रहा ऐसा कि जैसे-*
*पंच चामर छंद में गूँथी हुई हो रागिनी,*
*पंच नद के साथ जैसे बह रही मंदाकिनी।''*(67)

ग्रंथ के सातवें और अन्तिम सर्ग में कवि ने रचना के सांकेतिक अर्थों की इस प्रकार व्याख्या की है-

*''काम का पहले पतन*
*फिर क्रोध का*
*फिर लोभ का*
*फिर मोह, मद, मत्सर*
*-यही ऊर्ध्वीकरण है।*
*द्रौपदी का और पाँचों पांडवों का*
*यह क्रमिक इतिहास है।''*(68)

'उत्तर रामायण' प्रबन्ध काव्य द्वारा दो घटनाओं - सीता बनवास तथा शंबुक वध का राम के आचरण और सोच के साथ पाठकों की सोच का तालमेल बिठाना कवि का अभिप्रेत रहा है। 'उत्तर रामायण' के मूल में कवि का मूल उद्देश्य राम के प्रत्येक आचरण का औचित्य स्थापित करना है। ग्रंथ की भूमिका में भी उन्होंने इस बात का संकेत दिया है कि वे राम के कार्य को लेकर फैले लोकापवाद से राम के आचरण का मूल्यांकन नही करेंगे। अपने आस्थावादी दृष्टिकोण के कारण उन्होंने सीता की अन्तर्निहित क्षमाशीलता, भीषण यातनाओं को सहकर भी अपना संतुलन बनाए रखने की उनकी असाधारण क्षमता को राम के बचाव के लिए एक कवच के रूप में इस्तेमाल किया है। कवि ने इस भावना को वाल्मीकि के रूप में इन शब्दों में व्यक्त किया है-

*''राम से भी अधिक इस साकेत की कुंठित प्रजा ने*
*दु:ख दिया मेरी सिया को।*
*मैं सभी से पूछता हूँ-*

*राम के वनवास पाते ही*
*भरत की माँ अभागी कैकेयी परिताप के आँसू बहाकर*
*हो गई थी शुद्ध गंगाजल सरीखी।*
*मंथरा का भी कुटिल मन घोर पश्चाताप में जलकर*
*खरा कुन्दन हुआ था।''*(69)

'परिताप के पाँच क्षण' खण्ड काव्य में काबरा जी ने महाभारत के एक प्रसंग-भीष्म पितामह की मृत्यु पूर्व की मनः स्थिति का विश्लेषण किया है। भीष्म पितामह के आदर्शों की मानवीय अर्थवत्ता के सामने अम्बा के रूप में प्रश्न उठाया गया है। भीष्म की चेतना के ही एक अंग-अम्बा के प्रश्नों द्वारा उनका अपना आत्मालोचन है। उदाहरण दृष्टव्य है-

*''प्रौढ़ता के पूर्व सारी वासनाएँ तृप्त होकर*
*बदल देंगी ध्येय अपना*
*और मानव-जाति के ऊँचे महत्तम लक्ष्य को ही*
*मान लेंगी श्रेय अपना, प्रेय अपना,*
*और फिर वार्धक्य पूरी साधना का सहज फल होगा,*
*हिमाच्छादित शिखर-सा शान्त*
*परमानंदमय आलोक-सा विश्रान्त।*
*बोलो पुत्र !*
*फिर कोई समस्या देश को या विश्व को*
*पीड़ित करेगी ?''*(70)

भीष्म को अम्बा की उपस्थिति का अहसास होता है जो उन पर प्रश्नों की बौछार कर रही है-

*''औरतें उपहार में देना*
*तुम्हारी दमित कुंठा का*
*उजागर पक्ष है।*
*भोग सकते खुद नहीं*
*हाँ,*
*भोग के साधन*
*जरूरतमंद के अंतःपुरों में भेजना*
*शायद तुम्हारा लक्ष्य है।''*(71)

काबरा जी ने अतीत के पात्रों भीम और अम्बा की अवतारणा से आज के पुरुषों के खोखले आदर्शों और आज की नारी की अतृप्त आकाक्षाओं और उपेक्षित नारी के प्रतिशोध और आक्रोश के युग-सत्य को वाणी दी है। 'धनुष भंग' खण्डकाव्य में कवि ने सीता स्वयंवर की पौराणिक कथा से लिए कथानक में वशिष्ठ और निमि के संघर्ष द्वारा लोकजीवन और लोक-संस्कृति के प्रति अपने गहरे लगाव की व्यंजना की है। उदाहरण देखिए-

*"खेत और खलिहान*
*बैल-हल-हँसिया और हथौड़ा मिलकर*
*अगर कहीं मूरत बन पाएँ,*
*बेटी सीते !*
*वह तेरी सूरत से बिल्कुल मिलती होगी।*
*धनुष-भंग क्या हुआ-*
*हो गया शस्त्र पराजित*
*श्रमिक और हलधर के सम्मुख।"*(72)

काबरा जी ने धनुष भंग के प्रतीकात्मक रूप से निःशस्त्रीकरण एवं युद्धजन्य रक्तपात की व्यर्थता का प्रभावी वर्णन किया है। 'नरो वा कुंजरो वा' में कवि ने गुरु द्रोण द्वारा भौतिक अभावों से विचलित हो अर्द्धसत्य का सहारा ले राज्याश्रय प्राप्त कर सुख-सुविधा-एँ जुटाने की घटना को प्रतीक-रूप में आधार बनाया है। 'चार सत्य' शीर्षक में कवि के अनुसार वह भर्त्सना के योग्य है-

*"ऋषि ने, कवि ने, कलाकार ने,*
*राज्याश्रय ले लिया,*
*तो फिर वह मरा हुआ है।*
*उससे क्या आशाएँ आप लगा बैठेंगे ?*
*उसका सारा चिन्तन-दर्शन,*
*मनन और संयोजन-सर्जन*
*स्तुतियों के छंदों-गीतों से भरा हुआ है।"*(73)

किशोर काबरा जी ने प्रबन्ध काव्यों के अतिरिक्त 'जलते पनघट : बुझते मरघट', 'सारथि, मेरे रथ को लौटा ले', 'टूटा हुआ शहर', 'मैं एक दर्पण हूँ', 'हाशिए की कविताएँ', 'ऋतुमती है प्यास' आदि काव्य-संग्रहों में स्वतन्त्र कविताएँ भी है। इनमें इन्होंने आधुनिक युग की राजनीतिक विसंगति, खोखली आदर्शवादिता, विषाक्त नगरीय जीवन-व्यवस्था आदि की कटु

अनुभूतियों की व्यंग्यपूर्ण मार्मिक आलोचना की है। उदाहरण देखिए-

*''बन चुका है आजकल*
*पैसा हमारी जिन्दगी का फलसफ़ा*
*जो तीन-चौथाई सफ़े को*
*खा गया है;*
*और सारा खेल है जिस आदमी के वास्ते,*
*वह*
*हाशिये पर आ गया है।''*(74)

('हाशिया' शीर्षक से)

इनके काव्य-संकलनों के बहुत से गीतों में प्रकृति का भावप्रवण चित्रण हुआ है। बिम्बों और प्रतीकों की विविधता भी प्रकृति-चित्रण में मिलती है। 'आँख की गहराइयाँ' शीर्षक कविता में कवि ने प्रकृति का रंग-बिरंगा चित्रण किया है-

*''कूक श्यामल, आम सोनल और हरियल पत्तियाँ,*
*एक ऋतु में तीन रंगों से रंगी अमराइयाँ।''*

और

*''पौस में भी लू चली, जब आँख से तुम दूर थे,*
*अब दिखे तो जेठ में भी चल पड़ी पुरवाइयाँ।''*(75)

('चन्दन हो गया हूँ' से)

काबरा जी ने बाल-काव्य भी लिखें है जिनमें 'तिल्ली के पंख', 'टिमटिम तारे', 'बाल रामायण', 'बाल कृष्णायन', 'खट्टे अंगूर' जैसी काव्य-पुस्तिकाएँ है। बाल-कविता का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

*''अच्छे-अच्छे प्यारे फूल,*
*सुन्दर-सुन्दर न्यारे फूल।*
*लाल, गुलाबी, नीले, पीले,*
*कितने बढ़िया सारे फूल।*
*डाल-डाल पर चमक रहे हैं।*
*जैसे चाँद-सितारे फूल।*
*गेंदा, चंपा, जूही, बेला,*
*सब आँखों के तारे फूल।''*(76)

डॉ0 काबरा ने छन्दोबद्ध और अछांदस - दोनों प्रकार की कविताएँ लिखी हैं। डॉ0 काबरा की काव्यकला की प्रधान विशेषता सधी हुई लय का निर्वाह तथा अलंकारों का प्रयोग है। शाश्वत सत्य और युगधर्मिता के कुशल चितेरे किशोर जी ने परम्परा और समकालीनता के सहारे क्षणिका से खण्डकाव्य और मुक्तक से महाकाव्य तक की यात्रा की है। गुजरात के समकालीन कवियों में किशोर काबरा जी का स्थान अग्रगण्य है।

***रामकुमार गुप्त***

गुजरात में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कवि, लेखक, समीक्षक एवं चिन्तक डॉ0 रामकुमार गुप्त जी का जन्म सन् 1935 में बयाना, भरतपुर (राज0) में हुआ। ये एम.ए., पीएच.डी. हैं। ये गुजरात विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत हुए हैं। सम्प्रति ये गुजरात विद्यापीठ में 'हिन्दी चेयर' पर मानद प्राध्यापक हैं तथा विभिन्न सामाजिक-साहित्यिक कार्यो से जुड़े हुए हैं। इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं-

***1) 'बिन्दिया के बोल' (1971), 2) 'क्षण का सौदागर' (1977),***
***3) 'धुएँ का शहर' (1984)।***

इनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इन्होंने अनेक पुस्तकों का संपादन भी किया है। वे 'भाषा सेतु' के प्रबन्ध संपादक हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद द्वारा इन्हें 'विद्या वाचस्पति' की उपाधि दी गई है। ये अन्य संस्थाओं द्वारा भी पुरस्कृत और सम्मानित हुए हैं। 'बिन्दिया के बोल' गुप्त जी का प्रथम प्रकाशित काव्य-संग्रह है। इस संग्रह की कविताएँ उनके युवा हृदय के प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्यानुभूति की समन्वित अभिव्यक्ति है। इनके गीतों में व्यक्तिनिष्ठ प्रेमसौन्दर्य का सुन्दर चित्रण हुआ है-

***"बिन्दिया बादल में छिप जाए,***
***गोरी घूँघट में शरमाए,***
***रूप की पूनम बाँहों में,***
***सपनों का संसार लुटाये,***
***आज मन बहका-बहका गाए।"***[77]

('आज मन बहका बहका गाये' शीर्षक से)

उन्होंने प्रेम के साथ प्रकृति के भी विभिन्न रूपों का चित्रण किया है। प्रकृति के प्रतीक एवं बिम्बों के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति की है। एक उदाहरण देखिए-

***"कितने सावन सरसे-बरसे,***
***मेरी गागर फिर भी प्यासी,***

*ओ परदेसी मेघ गगन के*

*तुम बिन सारी रात उदासी।''*(78)

गुप्तजी ने आधुनिक युग के नगरीय-जीवन की विडम्बनाओं को भी प्रकृति के माध्यम से चित्रित किया है-

*''लगता है इस साल,*

*वसंत को पैरेलिसिस हो गया है।*

*मंहगे बाजार से त्रस्त*

*वसंत भूखा ही रहा।*

*वसंत बेचारे का फूटा नसीब है।''*(79)

'क्षण का सौदागर' इनका दूसरा काव्य-संग्रह है। महानगरीय जीवन में प्रत्येक क्षण का अपना महत्त्व है। क्षण की व्याख्या गुप्त जी ने इन शब्दों में की है-

*''क्षण,*

*जो गरम-गरम बूँदी-सा,*

*घी में तले पकौड़े-सा*

*स्वादिष्ट-मसालेदार।''*(80)

महानगरीय जीवन अत्यन्त जटिल और क्षणिक है। वहाँ हर पल-क्षण का महत्व है। भाग-दौड़ के जीवन में हर क्षण जीना-मरना पड़ता है। इसी स्थिति का गुप्त जी ने वर्णन किया है-

*''मुझको इतना अवकाश कहाँ,*

*मैं बरस-युगों की बात करूँ।*

*मैं तो हूँ-क्षण का सौदागर।*

*क्षण में जीता, क्षण में मरता।''*(81)

'धुएँ का शहर' काव्य-संग्रह में गुप्त जी द्वारा भोगे हुए महानगरीय जीवन की हताशा, संत्रास, अजनबीपन और कुंठाओं का कविता के रूप में यथार्थ चित्रण है। गुप्तजी के शब्दों में अहमदाबाद शहर का वर्णन देखिए-

*''चारों ओर मिलों की चिमनियाँ,*

*मुहँ खोले भूतों की परछाइयाँ-सी,...*

*दूर-दूर साँपिन-सी रेंगती सड़कें,...*

*तंग गलियों में किलबिलाते लोग*

*फुटपाथों पर दौड़ते अजनबी चेहरे !'*[82]

गुप्त जी की कविताओं में विषय-विविधता तथा शैलीगत नवीनता है। नए बिम्बों, प्रतीकों के द्वारा आधुनिक भाव बोध की सशक्त कविताएँ इन्होंने लिखी हैं। बौद्धिकता, रागात्मकता की झलक दिखाई देती है। इन्होंने जीवन-मूल्यों के विघटन तथा सम-सामयिक युग-चेतना की बिम्बात्मक प्रस्तुति की है।

***डॉ0 घनश्याम अग्रवाल***

डॉ0 घनश्याम अग्रवाल पश्चिमांचल के चर्चित कवि, उपन्यासकार एवं सम्पादक हैं जिन्होंने कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, समीक्षा, निबन्ध, विचारात्मक लेख आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखा है। इनका जन्म 1 अप्रैल सन् 1940 ई0 को जावरा (म0प्र0) में हुआ। हिन्दी से एम.ए. तथा ***'ढोला-मारू रा दूहा व्याकरणिक रूप-विवेचन'*** विषय पर शोध-कार्य करने के बाद सरकारी कॉलेज में प्राध्यापक हो गए और बहाउद्दीन कॉलेज, जूनागढ़ से सेवा-निवृत हुए।

डॉ0 अग्रवाल ने 600 से अधिक गीतों, कविताओं और मुक्तकों की रचना की है। इनका पहला कविता-संग्रह ***'धरती गाये रे'*** सन् 1965 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त ***'सच तो यही है'***(1997), ***'नई कविता'***, ***'शब्द-यात्रा'***(1998) आदि काव्य-संग्रह चर्चित हुए हैं।

'धरती गाये रे' - काव्य-संग्रह में चीनी और पाकिस्तानी आक्रमणों से अपने देश को बचाने के लिए कवि ने ओजपूर्ण कविताओं से प्रत्येक भारतवासी के हृदय में अपने आपको मिटा देने की प्रेरणा दी है। डॉ0 मधुसूदन मेहता के शब्दों में ***''ऐसा लगता है जैसे आदिकाल का चारण कवि युद्ध के मैदान में खड़ा हो वीरों को मर-मिटने की प्रेरणा दे रही हो।''***[83] कवि राष्ट्र को बचाने के लिए ओजस्वी वाणी में आह्वान करता है-

***''आजादी नही मिलती बिना सरफरोशी के,***
***आजाद भारत के लिए अब लोहू चुकाना है।''***[84]

'धरती गाए रे' संग्रह की कविताएँ भारत-भूमि को समर्पित एक अनन्य राष्ट्रप्रेमी और देशभक्त के रूप में कवि के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है-

***''शुभ्र किरीट हिमालय जिसका***
***गगन भेद्य तिरंगा,***
***जिसकी गोदी में बहती हैं***
***गंग, ब्रह्म और जमुना,***

*स्वर्ग-सुमन सा जिसका मुखड़ा*
*जिसका श्याम शरीर,*
*ऐसी धरती, ऐसी धारा.....''*(85)

कवि के अनुसार सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की नींव पर ही विश्व में जीवन होना चाहिए-

*''सत्यं, शिवं और सुन्दरम्*
*ही ज़िन्दगी की नींव है*
*इस नींव पर ही विश्व का*
*नव महल रचना चाहिए,*
*इन्सान को इन्सान से, बस प्यार केवल चाहिए।''*(86)

डॉ0 घनश्याम अग्रवाल की एक अन्य चर्चित काव्य-संग्रह है - 'शब्द यात्रा' जिसमें नए शब्दों, नए उपमानों, नए प्रतीकों और अस्तित्ववादी विचारधारा की सुन्दर और सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। यथा-

*''ये वृक्ष*
*कुछ जो जवान हैं*
*बूढ़े हैं कुछ*
*ये गाँव-कुएँ की मेड़ें, खेत की सरसों*
*ये शहर उदास से*
*हँसते से*
*अपने में खोए से*
*क्या साथ आएँगें।''*(87)

इस संग्रह में कवि ने राष्ट्र की दुर्दशा से त्रस्त व्यक्ति की परेशानियों, वर्तमान प्रजातांत्रिक प्रणाली, राजनीति, वर्तमान परिस्थितियों में व्यक्ति, जीवन और यथार्थ की सच्चाइयों को सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से उकेरा है। कवि मानव-हितैषी है और कहीं भी निराशा को हावी नहीं होने दिया है। वह प्रभु से प्रलय मचाने की प्रार्थना करता है ताकि धरती को नवसृष्टि का वरदान मिले-

*''तेरा अभिशाप बने वरदान की सृष्टि का*
*फिर से नव सृष्टि सजे*
*तेरी सत्ता का फिर से प्रलंयकर डमरू बाजे,*

*तू फिर से गाजे-*
*बस तू ही*
*तू!''*[88]

'युंगाकन' काव्य-संग्रह कवि द्वारा संपादित है जिसमें 'अस्तित्व के टीले' शीर्षक कविता में उनका स्वाभिमानी रूप प्रकट होता है-

***''किसी अस्तित्व के आगे***
***दबते हम नहीं***
***किसी के पैर की दस अँगुलियों पर टेक कर***
***माथा उठायें हम नहीं***
***हम ज्ञेय हैं जानो।''***[89]

प्रतीकात्मकता और बिम्बात्मकता इनकी भाषा की अन्य विशेषता है। राजस्थान के एक सुप्रसिद्ध कवि श्री सत्यनारायण बीजावत ने 'सुबह की धूप' कविता के लिए लिखा है कि ***''प्रकृति रूपी दुल्हन को उषा के रूप में देखकर कवि ने भोर की धूप को नौ बिम्बों में प्रकट किया है।''***[90] कवि द्वारा प्रकृति-चित्रण का मोहक रूप प्रस्तुत है-

***''कि आया चाँद भी है आज अपने द्वार पर देखो,***
***उठाकर चाँदनी के मुख से घूँघट द्वार पर देखो,***
***बताने को कि बेला रूठने की खत्म होती है,***
***हृदय के द्वार पर रति की कहानी शुरू होती है।''***[91]

('मौसम शीर्षक कविता से)

डॉ0 घनश्याम अग्रवाल जी ने छन्दोबद्ध और अंछादस दोनों रूपों में काव्य-रचना की है। इनकी भाषा सरल, ओजमयी, विषयानुकूल है। सार्थक शब्द-प्रयोगों से कवि ने अपने भावों और कथ्यों को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया है। आडम्बरहीनता, सरलता, स्पष्टता इनकी कविता की विशेषता है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता, प्रकृति और पुरुष के मांसल सौन्दर्य के साथ ही जीवन के यथार्थ का प्रतीकात्मक आलेखन हुआ है। कुंठाग्रस्त वातावरण और दुराचार तथा अनीति, गन्दी राजनीति की भर्त्सना करते हुए दुखी और त्रस्त मानव के प्रति उन्हें सच्ची सहानुभूति है।

***जयसिंह 'व्यथित'***

श्री जयसिंह बहादुरसिंह राजपूत 'व्यथित' का जन्म सन् 1937 में विक्रमपुर मौजा तेरयें (जि0 सुलतानपुर, उ0प्र0) में हुआ। इन्होंने बी.ए., बी.एड्, साहित्यरत्न, विद्यावाचस्पति

किया है। उनकी कर्मभूमि गुजरात है। ये गुजरात हिन्दी विद्यापीठ, अहमदाबाद के कुलपति, आदि जाति छात्रालय, अहमदाबाद के संचालक और 'रैनबसेरा' हिन्दी मासिक पत्रिका के संपादक हैं। ये 'दलित संस्थान जागृति ट्रस्ट'; 'गोस्वामी साहित्य मंच', बम्बई; 'मानस संगम', कानपुर द्वारा अपनी कृतियों के लिए सम्मानित हुए हैं। ये 'राष्ट्रभाषा रत्न', 'साहित्यश्री', 'विद्यावाचस्पति', 'लेखकश्री', 'अवधभूषण', 'साहित्य शिरोमणि' आदि अनेक मानद उपाधियों से सम्मानित हुए हैं।

उनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- *1) 'गीत निर्झर' (काव्य-संग्रह, 1979), 2) 'गीत निर्झर' (बाल संस्करण, 1979), 3) 'आर्तनाद' (खण्डकाव्य, 1979), 4) 'दलितों का मसीहा' (प्रबन्ध काव्य), 5) 'राघवेन्द्र'(प्रबन्ध काव्य), 6) 'बालकृष्ण' (खण्डकाव्य, 1992), 7) 'युग दर्पण' (काव्य-संग्रह), 8) 'श्री हनुमान तीसिका'(काव्य-संग्रह), 9) 'कैकयी के राम' (खण्डकाव्य, 1994), 10) 'युग चिंतन' (काव्य-संग्रह), 11) 'नेताजी' (खण्डकाव्य), 12) 'अनुभूति के स्वर', 13) 'घनश्याम विजय' (खण्डकाव्य)।*

सामाजिक और व्यक्तिगत व्यथा से व्यथित होकर अपना उपनाम ***'व्यथित'*** रखने वाले जयसिंह जी की ***'काव्यनुभूति में आपबीती और जगबीती का अनुभव संसार है।*** [92]

इनकी प्रथम कृति 'गीत निर्झर' में शोषित और दलित वर्ग की पीड़ा से व्यथित हुई अनुभूतियों को कविता के रूप में प्रकट किया है। इस संग्रह में 'व्यथित' जी ने नया जग लाने का आह्वान किया है। इस संग्रह में बापू, नेताजी, विनोबा भावे, लोकनायक जयप्रकाश जैसी प्रेरणादायी रचनाएँ भी हैं।

'युग दर्पण' में 37 गीतों का संकलन है जिसमें युगीन समस्याओं को उजागर करते हुए क्रान्ति करने का सन्देश है। 'व्यथित' जी अपनी कविताओं के माध्यम से समाज का पथ प्रदर्शक बन समाज की बुराइयों को दूर करना चाहते है। अपने करारे व्यंग्य-बाणों से समाज में व्याप्त अन्याय, दोगलेपन और विषमताओं को हटाकर युग-दर्पण में युग का ओजपूर्ण प्रतिबिम्ब देखना चाहते हैं।

'आर्तनाद' तीन सर्गो-'हुंकार', 'चिन्तन' और 'समन्वय' में विभाजित है। इसमें राम, रावण, शूर्पणखा, विभीषण आदि प्राचीन पात्रों को आधुनिक सन्दर्भ में नवीन दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया है। आधुनिक सन्दर्भ में, राम अनुभूति और रावण भौतिकता का प्रतीक है, जिसमें सन्तुलन होने पर ही जनजीवन आर्तनाद से मुक्त हो सकता हैं। एक उदाहरण

देखिए-

*''द्वन्द्व युद्ध चल रहा भंयकर, दावानल है धधक रहा।*
*हृदय सभी के हुए प्रदूषित, जन-मानस है झुलस रहा।''*[93]

'राघवेन्द्र' इनका दूसरा खण्डकाव्य है जिसमें इन्होंने राम द्वारा शबरी, अहिल्या, केवट, जटायु का उद्धार करने वाले आदर्श और स्वच्छ चरित्र के माध्यम से वर्तमान समाज में व्याप्त नारी-समस्या, वर्ण-भेद, शोषण-उत्पीड़न, आचार-व्यवहार विषयक समस्याओं को उद्घाटित किया है। राम के आदर्शों का अनुसरण करने वाले उनके तथाकथित भक्त ऊँच-नीच में विश्वास करते हैं। इसमें 'व्यथित' जी का उद्देश्य राम के भक्तों द्वारा राम के आदर्शों को भी अपने जीवन में अपनाते हुए समाज की बुराइयों और अपने मन की विसंगतियों को मिटाना है।

'दलितों का मसीहा' में शोषित और दलित वर्ग के लिए मसीहा बन कर उभरे बाबा साहब अम्बेडकर का जीवनवृत्त है। 'व्यथित' जी के अनुसार-*''बाबा साहब समानता एवं शोषणविहिन समाज-रचना के पुरस्कर्ता थे। समाज के शोषित, पीड़ित लोगों के दुख दर्द को देखकर उनका हृदय काँप उठता था। इसलिए वे जीवन पर्यन्त सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक समानता के लिए संघर्षरत रहे।''*[94] अस्पृश्यता, छुआछूत, असमानता का निवारण करते हुए समानता के लिए निरन्तर प्रयासरत रहे डॉ0 अम्बेडकर के जीवन-चरित्रांकन के द्वारा अनेक युगों का चिरंतन सत्य उजागर किया है-

*''मानव-मानव एक जगत में, एक रक्त की है धारा।*
*एक हृदय की धड़कन सबमें, एक जगत है उजियारा ॥''*[95]

'बालकृष्ण' में कवि का उद्देश्य प्राचीन पात्रों कृष्ण तथा कृष्ण के बालजीवन के प्रसंगों के माध्यम से युवापीढ़ी के सामने खड़ी राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियों का सामना करते हुए आधुनिक काल की समस्याओं को दूर कर उनका पथ-प्रदर्शन करना है। 'मुक्ति' सर्ग के माध्यम से मुक्ति केवल मथुरा या गोकुल और द्वापर युग की न होकर हर युग में मानवजाति की मुक्ति का सन्देश दिया है-

*''सबमें हो संकल्प यही, सब समता का संचार करें।*
*मानव के हित दानव से लड़ मुक्त गगन निष्काम करें।''*[96]

'श्री हनुमान तीसिका' में श्री राम की शरण में जाने के लिए उनके भक्त हनुमान जी का 'व्यथित' जी ने गुणगान किया है। यह रचना मानसिक पीड़ा का नाश कर आत्मिक सुख देने वाली है। कवि ने हनुमान जी के कर्मों के कारण उनकी महानता का वर्णन किया

है-

*''हनुमत वीर महाबलशाली भक्त शिरोमणि ज्ञानी*
*सेवा, त्याग, समर्पण के हित सबरस जीवन दानी है।''*[97]

'कैकेयी के राम' 'व्यथित' जी का उत्कृष्ट खण्ड काव्य है। पाँच सर्गों में विभक्त यह रचना कवि के मानवीय चिंतन, स्वस्थ संतुलित दृष्टिकोण तथा सूक्ष्म विचारों को प्रौढ़, गंभीर प्रासादिक भाषा में प्रस्तुत करती है। राम-बनवास और दशरथ-मरण का कारण बनी कैकेयी उपेक्षित और घृणित रही है। 'व्यथित' जी ने कैकेयी को बुद्धिमती, विवेकशील, दूरदर्शी, जनहितकारी आदर्शनारी के रूप में चित्रित कर अपने स्वस्थ, मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। कैकेयी ने राम की चारित्रिक सम्पूर्णता तथा यथार्थ के निकट रहने की मानसिकता को विकसित करने, समाज के कल्याण के लिए, राक्षसों का संहार करने के लिए उन्हें वनवास भेजा और स्वयं पापिनी, कुलघातिनी, कलंकिनी जैसे शब्दों से तिरस्कृत, अपमानित हुई।

प्रा0 कमल मेहता के अनुसार -***''इस काव्य में कैकयी के नारी मन के गहनतम रहस्यों से निःसृत वेदना का कवि ने औदार्य के साथ चित्रण किया है।''***[98] कैकेयी के कार्य-कलाप में कहीं पर भी उसका निजी स्वार्थ नहीं है। व्यापक लोकमंगल और परजनहिताय की भावात्मक लहरों की सुरसरिता सम कैकेयी, रामचरित्र को निखारने में रघुकुल की भव्यता का पालन करती है। स्वयं उपेक्षित और तिरस्कृता रहकर भी वह राम को लोकनायक बनाने में पूरा समर्पण देती है।[99]

इन्होंने अपने कविताओं में पौराणिक सन्दर्भों एवं समकालीन राष्ट्रीय प्रश्नों को सरल और संवेद्य भाषा में प्रस्तुत किया है। इन्होंने आम बोलचाल की भाषा, गेय तर्जों और छन्दों में जनसाधारण को ध्यान में रखते हुए जनसाधारण के लिए काव्य-रचना की है।

***मुकेश रावल***

श्री मुकेश रावल गुजरात के चर्चित कवि, लघुकथा-लेखक एवं समीक्षक हैं। इनका जन्म सन् 1946 में नड़ियाद में हुआ। इन्होंने एम.ए.(प्रथम श्रेणी में प्रथम) किया और इस समय आर्ट्स कालेज, आणंद (गुजरात) में प्राध्यापक हैं।

इन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में लिखा है। इनकी हिन्दी में प्रकाशित काव्य-कृति है- ***'मुट्ठी भर आक्रोश'***(1985)।

इनकी तेरह प्रांतों की पत्रिकाओं में एक हजार रचनाएँ प्रकाशित हैं जिसमें 200 कविताएँ, 200 क्षणिकाएँ और 700 हाइकु हैं। पैंतालिस काव्य-संग्रहों में इनकी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। तेईस लघुकथा-संग्रहों में इनकी लघुकथाएँ प्रकाशित हुई हैं।

इन्हें देश की विविध साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं ने सम्मानित किया है- 1) 'श्रेष्ठ गीतकार एवं श्रेष्ठ कवि', 2) 'साहित्य श्री', 3) 'साहित्य सारस्वत', 4) 'बीसवीं शताब्दी रत्न', 5) 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', 6) 'राष्ट्रभाषा गौरव', 7) 'साहित्य शिरोमणि', 8) 'लघुकथा मार्तण्ड', 9) 'विद्या वाचस्पति', 10) 'साहित्य सम्राट', 11) 'साहित्यालंकार', 12) 'साहित्य भूषण', 13) 'विद्यालंकार', 14) 'लघुकथा रत्न', 15) 'हाइकु सम्राट' व 16) कवि संत रैदास समिति से 'कवि रत्न' जैसी उपाधियों से अलंकृत हुए है।

ये ***'कल का आज'*** नामक लघुकथा-संग्रह के सह संपादक भी है। इनके विपुल स्तरीय और वैविध्यपूर्ण काव्यसर्जन के कारण विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, बिहार ने उन्हें 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित किया है। इसी विद्यापीठ की पाँच पुस्तकों (पाठ्य) में कविताएँ तथा कथाएँ प्रकाशित हुई हैं।

गुजरात के आधुनिक काव्य में गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, हाइकु आदि काव्य-रूपों में ये हाइकु की ओर विशेष उन्मुख हुए हैं। हिन्दी में भगवतशरण अग्रवाल जी के पश्चात् इन्होंने ही संख्या और गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ हाइकु लिखे हैं। भारत की विविध पत्रिकाओं में इनके 900 हाइकु प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने 1965 में लिखना प्रारंभ किया। इनकी प्रथम काव्य-रचना 'शुभ दीपावली' हिन्दी पत्रिका 'हरियाणा की आवाज' में चण्डीगढ़ में सन् 1973 में प्रकाशित हुई। इन्होंने तुकान्त व अतुकान्त कविताएँ, लम्बी कविताएँ, क्षणिकाएँ, हाइकु लिखे हैं।

इनके हाइकुओं में जीवन के विभिन्न सोपानों से प्रवाहित होने वाली चिन्तन-धारा की झलक है। मुकेश जी के हाइकुओं में बुद्धि तथा भावनाओं का सुन्दर समन्वय है। इन्होंने व्यक्ति और समाज के विभिन्न आयामी जीवन के पक्षों को सहज रूप से उद्घाटित किया है। इन्होंने प्रेम, मानवीय करुणा, जीवन की नश्वरता, सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं से सम्बद्ध सैकड़ों हाइकु लिखें हैं। प्रकृति के विभिन्न रूपों का भी सहजता और सरलता से निरूपण किया है। इनके हाइकुओं में सौन्दर्यानुभूति के साथ चिन्तन-गांभीर्य भी है।

### *श्री रामचेत वर्मा*

श्री रामचेत वर्मा पश्चिमांचल के प्रतिष्ठित गीतकार, ग़ज़लकार, सम्पादक और चिंतक हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के दरियापुर गाँव में सन् 1937 को हुआ। इन्होंने एम.ए. (हिन्दी) किया है।

इनकी प्रकाशित काव्य-कृतियाँ है- ***'छंद छंद रागिनी'*** (गीत - संग्रह, 1978),

2) ***'मखमली पंख , कंटीली राह'*** (काव्य-संग्रह, 1983)

इन्होंने 'अम्बर' पाक्षिक पत्रिका का 6 वर्ष तक सम्पादन किया है। ये साहित्यालोक के अध्यक्ष भी रहे हैं। अपनी सधी हुई बुलंद आवाज के कारण कवि मंच के सुकंठ कवि हैं। रामचेत वर्मा जी मूलत: गीतकार और ग़ज़लकार हैं। इनकी कविताओं में वर्तमान नेताओ के झूठे वचनों, दोगली नीतियों, स्वार्थान्धता तथा दूषित राजनीति और मठाधीशों की खोखली आदर्शवादिता के कारण समाज में पनप रहे साम्प्रदायिक विष के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है। इनकी कविताओं में प्राकृतिक परिवेश और सामाजिक यथार्थ के बीच लयात्मक एवं बिम्बात्मक सम्बन्ध दिखाई देते हैं। आजादी के इतने वर्षो बाद भी देश के आम नागरिकों की दयनीय दशा देख कवि का संवेदनशील हृदय करुणार्द्र हो समाज में मानवता जगाना चाहता है-

***''नंगे बदन, मुरझाई नजर,***
***जिन्दगी भर रहे जिनके प्यासे अधर***
***यार मेरे कोई शरम तो करे।***
***इन अभागों पर कोई रहम तो करे।''***[100]

***डॉ0 विष्णु 'विराट'***

ब्रजभाषा में काव्य-रचना करने वाले डॉ0 विष्णु 'विराट' चतुर्वेदी गुजरात के समर्थ कवि, लेखक, लोकगीतकार, संपादक और संयोजक हैं। इनका जन्म 1 जुलाई 1946 में मथुरा, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनकी माताजी का नाम कमला देवी तथा पिताजी का नाम बैजनाथ अधिकारी (मथुरा में राजाधिराज श्री द्वारकाधीश मन्दिर में आजीवन मुख्य अधिकारी) था। इन्होंने एम.ए., पीएच.डी., साहित्याचार्य, वेदान्ताचार्य, साहित्यवारिधि और बी.एड. किया है। वर्तमान समय में ये महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा में रीडर; गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा के निदेशक; हिन्दी साहित्य अकादमी (गुजरात) के साहित्यकार प्रतिनिधि; बाबा आम्बेडकर युनिवर्सिटी, अहमदाबाद की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य; अखिल भारतीय स्वर साहित्य संगम, दिल्ली के महासचिव हैं।

इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं- ***1) 'गोस्वामी हरिराय जी और उनका ब्रजभाषा साहित्य' (शोध-प्रबन्ध), 2) 'फैली पलाश के कानन लौं' (काव्य-संग्रह ब्रजभाषा में, 1993), 3) 'ब्रज बीथिन में' (ब्रजभाषा-काव्य-संग्रह 1993), 4) 'निर्वसना' (लघु प्रबन्ध काव्य), 5) 'विराट सतसई' (700 दोहों का संग्रह), 6) 'ग़ज़लें और ग़ज़लें', 7) 'धूम्रवन से लौट आई लाल परियाँ' (नवगीत-संग्रह), 8) 'ब्रजनवगीत', 9) 'बाल***

*वाटिका' (बाल काव्य-गीत 1993), 10) 'कर्ण' (खण्डकाव्य), 11) 'एक रण वैचारिकी है शेष' (प्रबन्ध कविता), 12) 'तारक संग्राम (आधुनिक कविता)', 13) 'हाथ से छूटे कबूतर' (नवगीत-संग्रह), 14) 'लीला चीर हरण की' (व्यंग्य काव्य), 15) 'समय साक्ष्य है', 16) 'तमसा के तट', 17) 'हाथ से छूटे कबूतर'।*

*इसके अतिरिक्त इनके उपन्यास, कहानियाँ, लेख, बाल उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं। 'टूटती लकीरें' (उपन्यास), 'बन्द कमरे की धूप' (उपन्यास), लगभग 50 बाल उपन्यास, 'महर्षि अरविंद' (जीवन दर्शन), 'रानी लक्ष्मीबाई' (इतिहास), 'भगवान श्री कृष्ण' (पुराण), गुजरात में प्राप्त हिन्दी पाण्डुलिपियों का विवरण, शताधिक कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा शताधिक लेखादि प्रकाशित हुए हैं।*

इन्होंने कई पुस्तकों और ग्रन्थों का संपादन किया है-

*'गोविन्द सागर',*

*'पुष्टि माधुर्य,*

*'गनपतजी स्मृति ग्रन्थ',*

*'सूर सरसि' (भूमिका डॉ0 विद्या निवास मिश्र),*

*'युगल किशोर अभिनन्दन ग्रंथ',*

*'आचार्य अभिनन्दन ग्रंथ',*

*'पुष्टि मार्गीय कीर्तन संग्रह'।*

डॉ0 विष्णु विराट चतुर्वेदी अपनी काव्य रचनाओं के कारण बहुत चर्चित रहे है। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में, पीएच.डी. एवं डी.लिट. के अनेक शोधप्रबन्धों में, अनेक विद्वान साहित्यकारों के ग्रंथों में, राष्ट्रीय संगोष्ठियों में विशेष व्यक्ति के रूप में इन पर विशद चर्चाएँ हुई है।

ये 'आर्शीवाद पुरस्कार', बम्बई से; उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा हिन्दी-संस्थान का नामित ब्रजभाषा पुरस्कार 'श्रीधर पाठक पुरस्कार' से; ब्रजभाषा मण्डल द्वारा 'शिखर सम्मान' मथुरा से; 'साहित्य वारिधि सम्मान' अलीगढ़ से; तथा 'भारतेन्दु सम्मान' कोटा से सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए हैं। ये राष्ट्रीय स्तर के मंचीय कवि हैं जो अपनी अद्भुत स्मरण-शक्ति के साथ स्वरचित ओजपूर्ण लम्बी कविताएँ प्रस्तुत करते हैं। इनकी काव्य-प्रतिभा की प्रशंसा लोकनायक जयप्रकाश नारायण, पद्मश्री गोपाल प्रसाद व्यास, श्री नारायण चतुर्वेदी, प्रो0 अम्बाशंकर नागर जैसे राष्ट्र के प्रतिष्ठित अधिकारियों तथा विद्वानों ने मुक्त कंठ से की है।

*''डॉ0 विराट के सवैयों का रस लेता रहा, ब्रजभाषा की सौंधी सुगंध में सरोबार होकर उसके लालित्य का आनन्द बहुत दिनों बाद मिला। अब कहाँ है ब्रजमाधुरी का रस लेने वाले और ब्रजभाषा की कोमलकान्त पदावली का समझने वाले।''*

*-डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक, दिल्ली*

*''तुम्हारो तो ब्रजभाषा में मोय हू तें अधिक अधिकार है बड़े टकसाली छंद लिखो हो, धन्य है तुम्हारी प्रतिभा।''*

*-पद्मश्री गोपाल प्रसाद व्यास*

*''विष्णु जी मेरे स्नेह भाजन हैं, वे हिन्दी साहित्य, विशेष रूप से ब्रजभाषा साहित्य के प्रचार और प्रसार में तथा निरंतर साहित्य सेवा में लगे हुए हैं। भाषा में कहीं भी कृत्रिमता नहीं है, भाषा में कहीं कहीं सत्य नारायण कविरन्त की स्मृति ताजा हो जाती है।''*

*प्रो. विद्यानिवास मिश्र*

*''आखर के गढ़िया बढ़िया सुकवि विराट विष्णु, ऐसे गुगीन कौं गुजरात में 'नागर' नवाजिय''*

*-प्रो. अम्बाशंकर नागर*

इन्होंने अपनी मातृभाषा-ब्रजभाषा की काव्य-कृतियों में अपनी मौलिक और सक्षम प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इन्होंने ब्रजभाषी काव्य-कृतियों में जहाँ एक ओर कृष्ण-लीलाओं के पारम्परिक स्वरूप का चित्रण किया है तो दूसरी ओर वे आधुनिक बोध से अनुप्राणित हैं। इन के ब्रजभाषा-काव्य के पारम्परिक स्वरूप का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

*''मैं बन जाउँगी छाँव कदंब की, तू मोहि कान्हर काँध चढ़ाय लै।*
*मैं तोहि काजर जानि कै आँजि लौं, तू अधरान पै मोहि रचाय लै।*
*मैं तोहि आँचर में कसि लौं, मोहि बाँधि कहूँ पटका में पचाय लै।*
*मैं कटि-किंकिनी तोहि बनाय लौं, तू मोहि बाँसुरी जानि बजाय लै।''*(101)

डॉ0 विष्णु 'विराट' का ब्रजभाषा-काव्य के साथ-साथ खड़ी बोली-काव्य में भी समर्थ प्रदान रहा हैं। इन्होंने खड़ी बोली में प्रबन्ध काव्यों के साथ-साथ मुक्तक कविताओं की रचना की है। अपनी प्रबन्ध-कृतियों में इन्होंने मिथकीय प्रयोगों से पौराणिक पात्रों को नये सन्दर्भो में प्रस्तुत किया है।

डॉ0 ओमप्रकाश यादव ने विष्णु विराट जी की पौराणिक सन्दर्भो से जुड़ी कृतियों

की समीक्षा की है। डॉ0 ओम प्रकाश यादव के अनुसार-*''डॉ0 विष्णु विराट ने अपनी काव्य कृतियों में पौराणिक सन्दर्भों की प्रासंगिकता को सार्थकता प्रदान की है, इनकी कुछ विशिष्ट काव्य कृतियाँ के विवरण द्रष्टव्य है-*

*एक रण वैचारिणी है शेष*

यह काव्य कृति महाभारत के समर्थपात्र कर्ण की मानसिकता के अन्तर्द्वन्द्वों को प्रस्तुत करती है, व्यक्ति की आत्मकेन्द्रित मनोव्यथा का यह एक जीवन्त अध्याय है, जिसमें कवि ने मिथक के अभिनव प्रयोग से अपनी उदान्त वैचारिकी को एक विस्तृत फलक पर काव्यांकित किया है।

युद्ध का निषेध कवि के चिन्तन का केन्द्र बिन्दु रहा है, कर्ण की वैयक्तिक वर्जनाएँ, आरोपित अवरोधों एवं अभियोगों के प्रति उद्वेलित उसका आत्मद्वन्द्व कविता की प्रमुख पहचान बन कर उभरा है, कहीं-कहीं तो कवि ने बाह्य चित्रांकन और काल्पनिक दृश्य संयोजना से ही कर्ण के आत्मद्वन्द्व का सार्थक बिम्ब प्रदान किए है, यथा :-

*''इस विजन में / प्रेत जैसा / कर्ण / अपना शव उठाए/*
*घूमता है।''*

या फिर

*''शौर्य का / कैसा बना उपहास /इन रणवाँकुरों के लोथ/*
*अब दुर्गन्ध ते है / कर्ण अपनी भुजाओं को सूँघता है।''*

कथा क्रम में महाभारत के अन्य पात्रों के माध्यम से भी कवि ने कुछ प्रासंगिक तथ्य उद्घाटित किए है, एक स्थान पर कर्ण कुन्ती को सम्बोधित करते हुए कहता है:-

*''और तुम जो बो रही हो / इस धरा पर / ये अनीति - बीज /*
*ये व्यभिचार के क्षण / स्वार्थ का ये संविधानी चक्र / से कालुष्य /*
*लिप्सा / आचरण की भ्रष्ट सृष्टी का हलाहल / और ये षड्यन्त्र का-*
*दुर्व्यूह / कुन्ती / कल तलक ये नई संसृति में /हरा होकर उगेगा/*
*पीढ़ियों को विरासत होगी तुम्हारी / आचरण-मर्यादा तोड़ेगा तुम्हारा*
*नाम / तुम इतिहास को / इतना चबाओ मत / कि कल का नया -*
*सूरज / दृष्टि ही खो दे / तुम्हारी इस कृपा से।''*

आत्म घुटन और आरोपित संत्रास से व्यथित हुआ कर्ण एक कापुरुषी आक्रोश जीने के लिए बाध्य हो जाता है यथा :-

*''दूर है आयुध क्वचित / वह कर्ण आयुध है स्वयं /*

*इस युद्ध क्षण में।''*

कवि प्रासंगिक परिवेश में साम्राज्यशाही और भ्रष्टाचारी शक्तियों को रेखांकित करता हुआ अपनी आशंका व्यक्त करता है :-

*''कौन अपने शीत वाणों से / धधकती पीठ ठंडी कर रहा है /*
*पीढ़ियों की आग / क्या यूँ ही बुझेगी ?/क्या युवा आक्रोश-*
*यूं जमता रहेगा ?/ भ्रष्ट स्वारथ की / अपावन संधियों में ?*
*कौन नंगा हो गया / इस महारण में / द्रोण का दौर्वल्य।*
*अथवा भीष्म की अतिबृद्ध कांक्षा का / अनिर्णय?''*

युद्ध वर्जना की हिमायत करता हुआ कवि आह्वान करता है-

*''रोक दो ये यज्ञ / जिसमें होम होते वीर / यव, घृत, काष्ठ*
*जैसे / रोक दो ये अग्नि / अपने राष्ट्र का पौरूष्य जिसमें राख-*
*होता / रोक दो ये युद्ध / जिसमें भस्म होता / स्वत्व संसृति*
*सभ्यता का / रोक दो / दुर्नीति की संयोजना ये / रोक दो /*
*अंधत्व का अभिषेक।*
*यह महाभारत नहीं /*
*यह शक्ति सत्ता का कलुष है / व्यभिचार-गाथा /*
*यह प्रवंचित लालसा की / स्वार्थ वृत्ति / यह नराधम / मानसी-लिप्सा/*
*हलाहल।''*

सत्ता के शोषण और दमन के प्रतिकार में कर्ण का यह चीत्कार कृष्ण के आगे कितना प्रासंगिक अनुभव किया जा सकता है -

*''कृष्ण / मेरी पीठ पर ये नागफनियाँ / देह में रोपी हुई /*
*निर्लज्जता है / किस तरह / वन-वीहणों का / चलन है यह /*
*किस तरह हम ग्रास हैं / लिप्सा / क्षुधा के / हम पराई आग पर /*
*बस रोटियां हैं / आग से उतरे / किसी के गर्भ में जाकर गलेंगे /*
*ये नियति है।''*

सम्पूर्ण कविता मिथक प्रयोग का अप्रतिम उदाहरण है, कविता का शीर्षक *''एक रण-वैचारिकी है शेष''* कवि के अभिप्रेत को स्पष्ट कर देता है, नवें दशक की पौराणिक आख्यानक कविताओं की शृंखला में विराट की यह कृति विशेष रूप से विवेच्य और उल्लेखनीय है।

*निर्वसना*

महाभारत की मुख्य नारी पात्र द्रौपदी को लेकर हिन्दी में अनेक कविताओं की सृष्टि हुई है, इस शृंखला में कवि की *''निर्वसना''* कविता ही ध्यान आकर्षित करती है, ''विराट'' की कथ्य शैली और आन्तरिक उद्वेगों का काव्य प्रकाशन अपने आप में एक विरल घटना है, परम्परित कथा वस्तु में अपने अभीष्ट कथ्य को प्रासंगिकता के साथ काव्यांकित करना ''विराट'' की अपनी पहचान है, ''निर्वसना'' में यह तथ्य अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है।

भारी शोषण और नारी व्यथा की आन्तरिक छटपटाहट का यहाँ बड़ा ही सार्थक प्रयोग किया गया है, नारी हृदय के चीत्कार का यह कथ्य दृष्टव्य है:-

*''हवा के ये थपड़े / आँधियाँ / झंझा /*
*ये सूखी डालियाँ काँटे, / गले के हार / बाहें /*
*नागफनियाँ / वारुणी बंधन / सभी मिल खींचते हैं / वस्त्र /*
*इस निर्वसन-तन से / सभी इस देह-मृग को / बींध डालेगें*
*नयन-शर से /चबाने को सभी उद्यत खड़े / इन मांस खंड़ों को /*
*नयन को / इस कान की लव को /...''*

''निर्वसना'' समग्र रूप से नारी संत्रास की एक विरल प्रस्तुति बन कर उभरी है, नारी मनोव्यथा का बड़ा ही जीवन्त व साभिप्राय प्रयोग किया गया है।

*तमसा के तट* - बाल्मीकि आश्रम तमसा नदी के किनारे बसा था, यहीं पर वनवास के दंड से अपराधित सीता आश्रय ग्रहण किये हुए थी, यहीं पर लव-कुश का जन्म हुआ था।

समग्र कविता में विराट ने सीता द्वारा समाज को आपेक्षित किया है, समाज के रूढ़ गठन को तोड़ने की हिमायत की है, सीता के ही स्वरों में :-

*''मैं बहुत अकेली रही / प्रतीक्षा में अनकल / पर आप नहीं आए /*
*सत्ता व्यामोह त्याग / तुम नारि नहीं हो / इसीलिए समझोगे कब ?*
*नर रहित नारियों की अनन्त पीड़ाओं को / हे लोक नाथ /*
*आक्षेप लादता एक पुरुष / बन गया आपकी राजनीति का संविधान /*
*इस निहित-स्वार्थ में / यह अबला / बलिदान हुई।''*

*''तमसा के तट''* पर कवि चल चित्रों की संयोजना में तथा आक्षेप-प्रत्याक्षेपों में ही अधिक व्यस्त रहा है, अपने अभिप्रेत कथ्य को वह अधिक समर्थता से व्यक्त संभवत:

नहीं कर पाया है।

*पितृऋण*

लघु प्रबन्धात्मक इस छान्दस कविता में कवि ने ''महाभारत'' के एक विशिष्ट वृद्ध पात्र भीष्म पितामह के आत्म मंथन को व्यक्त करने का यत्न किया है, अन्य कविताओं की भाँति ''पितृऋण'' भी भीष्म पितामह की दमित कांक्षाओं का असंतोष ही है, जिसमें यह टूटा और हारा हुआ व्यक्ति अपने सम्पूर्ण दलित और कुंठित अतीत की विस्मृतियों के ऊहोपोह को जी रहा है - यथा:

*''वह जीत-जीतकर हार गया हर बार युद्ध,*
*वह युद्ध-युद्ध उठा स्वयं आवाद शिरा..*
*वह सांस-सांस संघर्ष कर रहा सुभर वीर,*
*अब डूब रहा है दिनकर-सा धीरे-धीरे।''*

यौन कुंठाओं के प्रति कवि एक वृद्ध व्यक्ति की क्षीण कांक्षाओं को रेखांकित करता हुआ कहता है :-

*''ढलती काया की क्षीण वासनाओं के ज्वर,*
*कितना-कितना निर्बल कर देती है, मन को,*
*कितना-कितना दुख देती उचित वर्जनाएं*
*नर कितना विचलित हो जाता है, इस क्षण में।''*

अपने अतीत के निर्णयों के प्रति भीष्म के मन में वितृष्णा है, वह कह उठता है-

*''आजीवन ब्रह्मचर्य की मैंने सपथ गही*
*कैसा मैंने कर डाला एँ अविवेकी-मन।''*

अपनी दमित कांक्षाओं के प्रति उसे घोर असंतोष है, वह कहता है :-

*''वारूणी पिये मेरी प्रमत्त कांक्षाओं ने /*
*कैसे-कैसे दुर्लध्य ज्वार-उपजाए थे /*
*मैं कैसे-कैसे सिन्धु तैरता रहा सदा*
*फिर भी रेतीला मन प्यासा का प्यासा है।''*

अन्त में भीष्म संतानोत्पत्ति के अभाव में पितरों के ऋण को चुकाने के लिए जब व्यग्र हो उठता है, तो अपने प्राणों का उत्सर्ग करके ही पितृऋण चुका पाता है, यथा :-

*''मैं आज अकेले ही चिथड़े-चिथड़े मन से,*

*अंजुलि में पावन पीड़ा का पानी लेकर,*
*अब तुम्हें दे रहा हूँ तर्पण लेटे-लेटे,*
*आकंठ्य बाण से बिंधा हुआ मैं देवव्रत।*(1)
*□-एँ पिता ! विकारी मन के तामस प्रजनन से,*
*दुर्गाह्य पितृऋण भार समर्पित करता हूँ,*
*लो ग्रहण करो आत्मीयजनों के शव सहस्र,*
*कुरुक्षेत्र भरा पूरा है, लुंठित लाशों से ?''*

अन्त में कवि विष्णु विराट ने भीष्म पितामह के देहत्याग की घटना को बड़ा ही सार्थक बिम्ब प्रदान किया है यथा :-

*''कातर पीड़ाओं ने विदग्ध कर दिया हृदय,*
*आरक्तानन वह भीष्म सूर्य-सा धधक उठा,*
*हाथों से कसकर पकड़ प्राण के पंछी को,*
*जा उड़ जा, कहकर छोड़ दिया नीलाम्बर में।''*

समग्र कविता मिथक पर आधारित है, किन्तु अपने अनिर्णीय क्षणों का द्वन्द्व, दमित कांक्षाओं के प्रति असंतोष तथा विगत भोग्य के प्रति छटपटाहट ने इस कविता को एक नया आयाम प्रदान किया है, कविता छान्दस होते हुए भी तुकान्त नहीं है, फिर भी कवि का छन्द मोह कविता को शिल्प की दृष्टि से रूढ़ बना देता है।

***समरांगण में***

यह कविता नितांत मौलिक कथा वस्तु पर आधारित है, लेकिन इसके पात्र रूढ़ एवं पौराणिक है, रावण और सूर्य का संवाद ही कविता की मूल कथा वस्तु है, रावण का अहंकार और सूर्य का गाम्भीर्य कविता में एक नई प्रतिस्पर्धा और तुलनात्मक शक्ति के औचित्य को काव्यांकित करता है, कवि का कथ्याभिप्राय मात्र यौद्धिक विभीषिका को रोकना और युद्ध का निषेध करना ही है, कवि ने स्पष्ट कहा है:-

*''है-युद्ध, क्रुद्ध मनकी ईर्ष्या का प्रतिरोधन,*
*है युद्ध अमिट कालिख, विनाश, की परिभाषा,*
*है युद्ध अशुद्ध विकारों का मन पर प्रहार,*
*है युद्ध स्वार्थ के हेतु नीच नर जिज्ञासा।''*

***सागर पथ दे : तथा सीता स्वप्न***

प्रस्तुत काव्य भी विष्णु विराट की ऐसी कविताएँ हैं, जो पौराणिक चरित्रों पर आधा

रित है, ये दोनों कविताएँ रामायण की कथा वस्तु पर रची गई हैं, ''सागर पथ दे'' में राम का समुद्र पार करने का अभियान है, और 'सीता स्वप्न' में सीता की अन्तर्वेदना को काव्यांकित किया गया है।

इस प्रकार विष्णु 'विराट' की मिथक रचनाएँ अधिकांशतः पात्रों की मनोव्यथा को ही व्यक्त करती हैं, साथ में युगीन परिवेश का स्पर्श उन्हें सार्थक प्रासंगिकता से भी जोड़ देता है।''(102)

विष्णु 'विराट' जी की कविताओं में राष्ट्रीय-सामाजिक अस्मिता के गौरव के प्रतिष्ठापन के साथ प्रजातन्त्र की विद्रूपताओं, विसंगतियों तथा भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति आक्रोश के स्वर हैं। राजनीतिक भ्रष्टाचारों के कारण आम आदमी की दयनीय स्थिति का विराट जी ने इन शब्दों में चित्रण किया है-

*-''लाठी का जोर जुलम, है भारी*
*पंचायत ढा रही सितम।*
*टूट टूट जाता है हर घड़ी*
*एक आदमी हजार गम।''(103)*

विराट जी का कविमन आधुनिक समय की विपत्तियों से डर कर पीछे हटने वाला नहीं है। अपने स्वाभिमान को व्यक्त करते हुए उन्होंने वीररस से युक्त ओजपूर्ण शैली में काव्य-रचना की है-

*''वक्ष पर तूफान के शत-शत बवंडर झेलते हैं,*
*हम विकल उत्ताल लहरों में विहँस कर खेलते हैं।*
*सौम्य हैं, शालीन हैं, हम दूर तक बिखरे हुए हैं,*
*हम शिकंजे में प्रलय के व्याल को पकड़े हुए हैं।''(104)*

***द्वारका प्रसाद साँचीहर***

डॉ0 द्वारका प्रसाद साँचीहर गुजरात के प्रतिष्ठित गीतकार, ग़ज़लकार एवं समीक्षक हैं। इनका जन्म 1949 में काँकरोली (उदयपुर-राज0) में हुआ। इन्होंने एम.ए. तथा पीएच.डी. किया है। वर्तमान में ये अहमदाबाद के एम.पी. आर्ट्स एंड कॉमर्स कालेज में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने ***'छायावादोत्तर कविता'*** विषय पर शोध-कार्य किया है।

इनके शोध-प्रबन्ध के अतिरिक्त गुजराती कविता-संग्रह, नाट्यानुवाद, छह समीक्षा ग्रंथ, गीत-संग्रह और काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए है। इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह है- ***'गीत रजनीगंधा के' (गीत-संग्रह, 1997), 'अवाक के चाक पर' (काव्य-संग्रह)।***

इन्हें अपने गीत-संग्रह के लिए हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया है। गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा द्वितीय पुरस्कार भी मिला है। इसके अतिरिक्त ये कवि सम्मेलनों तथा आकाशवाणी के सुकण्ठ कवि हैं।

द्वारका प्रसाद जी मूलत: गीतकार हैं। उन्होंने प्रेम, प्रकृति और वेदना को ही मुख्य विषय बनाया है। उनके जीवन और कृतित्व में उन्मुक्तता, मस्ती तथा कबीर-सा फक्कड़पन दिखाई देता है। ये मूलत: प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। इनके भावुक कवि-हृदय ने प्रेम की व्यापकता और सौन्दर्य का मांसल वर्णन किया है-

*''साँसों में महक उठे अंबुआ के बौर,*
*उदित हुआ गालों पर लज्जा का भोर,*
*अलसायी पलकों ने राज़ भी बताया है।*
*नयनों में साजन का सपना मुस्काया है ॥''*(105)

द्वारका प्रसाद जी ने अपनी कविताओं में बिम्बात्मक लाक्षणिकता के द्वारा प्रकृति को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है-

*''गोधूली बेला में प्रेम-लगन फेरा है,*
*पँखियों के कलरव ने आसमान घेरा है।*
*पाटल-सी पलकों में लाज भरे बोल हैं,*
*सखियों के संग साथ छूटे अनमोल हैं।''*(106)

इनकी कविताओं में घोर वैयक्तिकता है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत भावों को कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। वे अपने व्यक्तिगत एकांत में स्वयं से बतियाते रहते हैं-

*''मन उन्मन है, उन्मन जीवन,*
*मौन, मौन को गाता रहता।*
*खिड़की-द्वार-गवाक्ष बंध है,*
*मैं मुझसे बतियाता रहता।''*(107)

उन्होंने अपनी वैयक्तिक भावनाओं के साथ वेदना को भी अपने गीतों में उकेरा है। संगीत और लय में पिरोये गीतों में वेदना को प्रकृति, पौराणिक पात्रों तथा परम्परागत प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। साँचीहरजी द्वारा इतिहास के माध्यम से हुई वेदना की अभिव्यक्ति का उदाहरण देखिए-

*''धर्मराज रोये कुंती की आँख बही-*

*जब कर्ण सरीखे मुझको अंजलि देती है,*
*लाक्षागृह-सा अब तन जलता है धाँय-धाँय,*
*क्या फिर भी प्यासी द्रुपदसुता की वेणी है ?*(108)

इन्होंने गीतों के साथ-साथ ग़ज़लें भी लिखी है। अपनी ग़ज़लों में नूतन युगबोध के स्वर तथा नए भावों की अभिव्यक्ति के लिए शिल्पगत नए प्रतिमानों का इन्होंने प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिए-

*''ऐ हवा ! लौट के आये तो ज़रा बतलाना।*
*खड़े हैं हम भी बियाबाँ में चिनारों की तरह ॥''*(109)

इनके गीतों में सहजता, सरलता और मर्म मधुरता है। उन्होंने गीतों में छंद और ग़ज़ल में बहरों का यथाशक्ति निर्वाह किया है। साथ ही अछांदस कविताएँ भी लिखी है। इनकी कविताएँ अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रभावी और ताजगी से परिपूर्ण है। इनकी ग़ज़लों में उर्दू-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण देखिए-

*''वक्त कालीन है उसको यूँ तहाकर रख दें*
*अभी तो फर्श नहीं तल्ख़ गुब्बारों की तरह।''*(110)

इनकी रचनाएँ अनुभूति और अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रभावी और ताजगी से परिपूर्ण हैं।

*सुलतान अहमद*

डॉ0 सुलतान अहमद पठान पश्चिमांचल के यशस्वी, जनवादी चेतना के कवि, ग़ज़लकार और समीक्षक हैं। इनका जन्म 1958 को अहमदाबाद में हुआ। इनकी एम.ए. तथा पीएच.डी. की शिक्षा-दीक्षा भी यहीं पर हुई। इन्होंने ***'स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी प्रभाव की कलात्मक उपलब्धियाँ'*** विषय पर शोध कार्य किया। एम.ए. करने के बाद इन्होंने दाहोद और ईडर के कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। वर्तमान में सुल्तान जी सरसपुर आर्ट्स कॉलेज में व्याख्याता के पद पर कार्य कर रहे हैं।

इन्हें काव्य-लेखन की प्रेरणा अपने शिक्षकों-रामकुमार यादव जी एवं घनश्याम मिश्र द्वारा मिली। इन्होंने 1970 से लिखना प्रारंभ किया। 'सुख-दुःख' सन् 1970 में लिखी इनकी प्रथम रचना है जो अप्रकाशित है। इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं-***'कलंकित होने से पूर्व' (कविता-संग्रह, 1982), 'खामोशियों में बन्द ज्वालामुखी' (ग़ज़लें, 1986), 'उठी हुई बाहों का समुद्र' (कविता-संग्रह, 1989), 'कहानीकार निर्मल वर्मा' (समीक्षा, 1989), 'दीवार के इधर-उधर' (कविता), 'नदी की चीख़' (ग़ज़ल)।***

1996 में इन्हें 'परिवेश सम्मान' से सम्मानित किया गया है। कविताएँ एवं ग़ज़लों के अतिरिक्त इनके नाटक, लेख, साक्षात्कार, लघु कथाएँ, संस्मरण आदि भी 'पहल', 'हंस', 'दस्तावेज', 'नया पथ', 'आजकल', 'उद्भावना', 'परिवेश' आदि हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

श्री सुलतान अहमद प्रगतिशील विचारधारा के जागरूक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका उद्देश्य कविता के द्वारा युगीन संत्रस्त एवं अभिशप्त मानवता के मूल कारणों की तलाश करना और उन्हें बदलना है। इनकी कविताओं में किसी पौराणिक आख्यान, मिथकीय परिकल्पना, का आधार नहीं है तथा दूसरों का मनोरंजन करना इनका हेतु नहीं है। उनके अनुसार-

*".....उन*
*चमगादड़ों के लिए नहीं लिखूंगा*
*जो सुविधावृक्ष की*
*दीर्घ डालियों पर औंधे*
*लटके*
*भर दुपहरिया भी*
*कोई सच्चाई नहीं*
*देख पाते*
*और चाहते हैं*
*कविताएँ ईजाद*
*की जाती रहें....."*(111)

सुलतान अहमद की कविताएँ जनवादी चेतना का जीवन्त स्वर हैं। भारतीय समाज में फैले साम्प्रदायिकता के जहर, उसके कारणों और उसके पीछे छिपे उन स्वार्थ में अन्धे राजनेताओं और धनपतियों के कुत्सित कृत्यों को अपनी दीर्घ कविता 'दीवार के इधर-उधर' में उघाड़ा है। सत्तालोलुप राजनेता और सत्ताधारी अपने निहित स्वार्थ के लिए विभिन्न धर्मों के लोगों की सादगी का नाजायज लाभ उठाते हैं और उनकी सहज सांप्रदायिक भावनाओं को भड़का कर धर्म के नाम पर दंगे करवाते हैं। सुलतान अहमद जी ने साम्प्रदायिकता की दीवार के इधर-उधर बसे 'हम' के माध्यम से अपनी युगचेतना का परिचय दिया है-

*"दीवार के इधर*
*हम हिन्दू हो जाते हैं*

*दीवार के उधर*
*हम मुसलमान हो जाते हैं*
*चन्दू और सुलेमान*
*दोनों को सिखाते हैं नफरत, शुब्हा और डर*
*हमेशा*
*एक-दूसरे के लिए'*[112]

सुलतान जी ने अपनी कविताओं में मौजूदा व्यवस्था के प्रति आक्रोश जताया है। पूंजीवादी व्यवस्था सर्वहारा वर्ग का शोषण करते हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखती है। पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग की भावनाओं का विरोध करते हुए उनकी उपेक्षा करता है-

*''तुम्हारे कान बहरे हैं*
*हमारी अभिव्यक्ति के लिए*
*तुम्हारी आँखे अंधी हैं / हमारी ऊँचाई के लिए*
*तुम्हारी चमड़ी कुंद है/ हमारी अग्नि के लिए*
*सिर्फ सक्रिय है / तुम्हारी जुबान*
*हमारे विरोध के लिए।'*[113]

अहमद जी ने कविताओं के साथ-साथ ग़ज़लें भी लिखी हैं जिनका कथ्य विस्तृत नहीं है। शोषितों के प्रति सहानुभूति होने के कारण उनकी कविता की प्रधान विशेषता मानवीय सरोकार है। अहमद जी शोषितों की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण करके उनके प्रति सहानुभूति नहीं जताते वरन् व्यवस्था और परिस्थितियों का उत्साह से सामना कर उसे बदल देना चाहते हैं-

*''अपनी अंतरात्मा पर जमी*
*असंख्य चट्टानी परतों को*
*निकाल सकते हैं*
*इनकी अन्तिम तहों में*
*दबी-कुचली-सोयी हुई*
*अमृतमयी स्रोतस्विनी*
*उसकी धाराएँ*
*शुष्क मरुभूमियों की ओर*
*बहा सकते हैं*

*लाओं ! बसुला हमें दे दो।''*(114)

आधुनिक युग में हिन्दी ग़ज़ल को आम आदमी के सुख-दुःख से जोड़ने की दुष्यन्त कुमार की परम्परा को सुलतान अहमद ने आगे बढ़ाया है। उनकी ग़ज़लों में आम आदमी की युगीन विंसगतियों में चित्रण के साथ-साथ परिस्थितियों से लड़ने का भाव भी है-

*''दुःख जो देखे हमारी बस्ती के,*
*दिलसमन्दर का भी दहल जाए।*
*फिर से कोशिश करें चलो मिलकर,*
*अबके शायद जहाँ बदल जाए।''*(115)

इनकी कविताओं, ग़ज़लों में अनुभूति पक्ष अभिव्यक्ति से प्रबल होने के कारण सीधी-सरल भाषा में कही बात नश्तर का काम करती है। हिन्दी और उर्दू दोनों भाषा-शैलियों और ग़ज़ल की बड़ी, मध्यम और छोटी तीनों बहरों पर सुलतान अहमद का काबू है।

*डॉ0 नलिनी पुरोहित*

गुजरात की प्रतिभा-सम्पन्न कवयित्री एवं लेखिका डॉ0 नलिनी पुरोहित का जन्म राँची में 1955 को हुआ। इन्होंने रसायनशास्त्र से एम.ए. और पीएच.डी. किया है। कुछ समय राँची में व्याख्याता पद पर कार्य करने के बाद से महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में कार्यरत हैं।

इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- *'अनुभूति' (1993 में प्रकाशित काव्य-संग्रह), 'मंथन' (काव्य-संग्रह)।*

इसके अतिरिक्त गुजराती में भी दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। इन्हें संगीत, नृत्य तथा चित्रकला में भी रुचि है। ये आकाशवाणी राँची तथा आकाशवाणी बड़ौदा से भी जुड़ी हुई हैं। इन्हें ध्रुव प्रकाशन, अहमदाबाद द्वारा 'साहित्य सारस्वत' से सम्मानित किया गया है। इनकी कविताएँ हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती रही हैं।

*रसायन शास्त्री डॉ0 नलिनी पुरोहित की कविताओं में रंग बदलती दुनियाँ की रासायनिक विलक्षणताएँ विद्यमान हैं।.. कवयित्री ने जीये हुए, भोगे हुए क्षणों को वाणी दी है, जो कभी डिजोल्व होते हैं, कभी प्रेसिपिटेट होते हैं और कभी सुनिश्चित तापमान और दबाव में परखनली से उफन कर बाहर आकर कविता बन जाते हैं।*(116)

इनकी कविताएँ जीवन की विसंगतियों के कारण सुख-दुख की सहजानुभूति हैं। इन्ही के शब्दों में *''पीड़ा से डूबते मन ने हमेशा शब्दों का सहारा लिया; गूंथा,*

*पिरोया, पता ही न चला कब कविता बन गई।''*(117)

'अनुभूति' में इनकी 149 कविताओं का संकलन हुआ है। इनकी कविताओं का विषय-विस्तार व्यापक है। इनकी कविताओं में व्यक्ति और समाज से जुड़ी जीर्ण-शीर्ण परम्पराओं एवं रूढ़ियों के प्रति आक्रोश है। जीवन और मृत्यु शाश्वत सत्य है। जीवन-मृत्यु के प्रति इनका दर्शन इन पंक्तियों में मिलता है-

*''जब जीवन के*
*रास्ते हों बन्द.....*
*न रहे कहीं द्वन्द्व*
*तब गले लगाना मुझे*
*बन.....*
*मेरी जिन्दगी का*
*आखरी छंद।''*(118)

इन्होंने समकालीन समाज और परिस्थितियों को उजागर किया है। भ्रष्ट राजनीति और स्वार्थ में अंधेराजनेता धर्म की आड़ लेकर मनुष्यों को आपस में लड़ा रहे हैं। गौतम, महावीर दूसरों के लिए जीए थे और आज व्यक्ति अपने लिए जी रहा है। अतः समाज में भूख, हिंसा, अशांति, दहेज प्रथा आदि कुरीतियाँ व्याप्त हो गई हैं। एक उदाहरण देखिए-

*''...कि सीता आज वन में भेजी नहीं जाती*
*घर में जला दी जाती हैं;*
*द्रौपदी पाण्डवों को नहीं,*
*दहेज की लपटों को सौंप दी जाती हैं।''*(119)

नलिनी जी ने प्रकृति से सम्बन्धित कविताएँ लिखी हैं। कहीं प्रकृति के मनोरम चित्र अंकित किये हैं तो कहीं प्रकृति के माध्यम से अपने भावों को उजागर किया है। एक उदाहरण देखिए-

*''झरना बनने निकली थी*
*नदी बनकर रह गई*
*और एक दिन/समुद्र में जा मिली।''*(120)

इन्होंने प्रेम, विरह, समझौते को अपने ढंग से निरूपित किया है-

*''प्रेम-/ सावन की पहली बौछार-सा*
*विरह-/जेठ की तपती दुपहर-सा*

*क्लेश-/बेमौसम टपकती बारिश-सा*

*समझौता-/ हर क्षण-आती जाती धूप छाँव सा।*[121]

'मंथन' में इनकी 85 नई कविताओं का संकलन है। संक्षिप्तता, सारगर्भिता और ऋजुता इनकी कविताओं की विशेषता है। विषय की दृष्टि से मानव-मन के राग-विराग, प्रकृति, आधुनिकता बोध और नारी के संवेदनशील मन की आकांक्षा और व्यथा को इन्होंने अपनी छोटी-छोटी कविताओं में उतारा है।

*डॉ0 दयाचन्द जैन*

व्यवसाय से चिकित्सक होने के साथ ही काव्यानुरागी डॉ0 दयानन्द जैन का जन्म सन् 1935 में खंडवा (मध्य प्रदेश) में हुआ। इन्होंने एम.बी.बी.एस. तथा साहित्य विशारद किया है। बचपन से ही कविता के प्रति लगाव था जो आज भी अखंडित रूप से है। अहमदाबाद में अपना चिकित्सा-व्यवसाय शुरु करने के साथ ही प्रख्यात ग़ज़लकार भगवानदास जैन से मुलाकात हुई। इस कारण प्रारंभिक सृजन-काल के दिनों में आर्थिक संकटों तथा अन्य जीवन-संघर्षों के कारण काव्य-साधना में आए व्यवधानों से उनकी ***'मुरझाती हुई काव्य-वल्लरी को'***[122] पुनर्जीवन मिला।

इनके कृतित्व को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है - ***अ) स्वतन्त्र काव्य-संग्रह - 'रोशनी की तलाश'(1980), 'दर्द का रिश्ता' (ग़ज़ल संग्रह 1994), 'पटाक्षेप होने तक'(1998)। ब) सहयोगी काव्य-संकलन- 'नयी धरती:नया आकाश', 'पँखेरु पश्चिम के', 'बूँद बूँद घट में', 'बहुरंगी हिन्दी गज़लें', 'साठोत्तरी हिन्दी गज़लें', 'पछुवाँ के हस्ताक्षर', 'गज़लपुरा'। 'कतरनों के शिलालेख' तथा 'चेतना'*** में भगवानदास जैन तथा दयाचन्द जैन के संयुक्त काव्य-संग्रह है। ***स) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताएँ और ग़ज़लें।***[123]

इन्हें हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा काव्य प्रतियोगिता में प्रमाण-पत्र मिला है। आकाशवाणी, अहमदाबाद से भी इनकी कई कविताएँ प्रसारित हुई हैं। डॉ0 जैन का प्रारंभिक जीवन काफी संघर्षमय रहा है। पिताजी के देहान्त तथा आर्थिक संकटों से जूझते हुए उन्होंने काव्य-लेखन किया। अत: उनके संघर्षपूर्ण जीवन की झलक उनकी कृतियों में मिलती है। डॉ0 जैन ने दोहे, गीत, मुक्तक, ग़ज़ल, नई कविता - छादंस-अछांदस दोनों काव्य-रूपों में काव्य-रचना की है। वे गीतकार से ग़ज़लों की तरफ उन्मुख हुए हैं।

डॉ0 जैन की कविताओं और ग़ज़लों में विषय-वैविध्य है। बीसवीं शताब्दी के अभावग्रस्त व्यक्ति को रोटी नसीब होना चाँद पा लेने के बराबर है-

*''इस बीसवीं सदी ने बुरा हाल कर दिया,*
*उखड़े हुए नवाब-सा गोया हुआ है चाँद।*
*भूखों के हाथ जब कभी आई हैं रोटियाँ,*
*उनको लगा कि हाथ में बोया हुआ है चाँद।''(124)*

आज शहरीकरण के विस्तार ने मनुष्य को जंगली और असभ्य बना दिया है। जंगलों को काटकर शहरीकरण के लिए मनुष्य स्वयं जंगली बनता जा रहा है, असभ्य बन पर्यावरण को दूषित कर रहा है-

*''जंगल को काटकर*
*जब से शहरीकरण हुआ है*
*आदमी ने जंगल*
*अपने में रोप लिया है.....''(125)*

मशीन की तरह आदमी की भागती-दौड़ती जिन्दगी से उपजी आपाधापी और कुंठाओं का डॉ0 जैन ने बड़ा कलात्मक चित्रण किया है-

*''पी रहे हैं प्यास, पर पानी नहीं है,*
*वासना है, प्यार का मानी नहीं है।*
*इस महानगरी की अद्‌भुत रीत वाले,*
*कनसुरे गाते मिले ये गीत वाले।''(126)*

डॉ0 जैन ने कथ्य की विविधता के साथ भाषा में भी विविध शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने अरबी-फारसी के साथ-साथ संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। उदाहरण देखिए-

*''जितना दूध पिलाया माँ ने, उतना गरल हुआ क्यों?*
*मुद्राएँ थी कैसी, मानव इतना विरल हुआ क्यों?''(127)*

'दर्द का रिश्ता' इनका चर्चित ग़ज़ल-संग्रह है जिसमें विषय-वैविध्य परिलक्षित होता है। डॉ0 जैन ने कहीं सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को वाणी दी है तो कहीं भ्रष्ट राजनीति के कारण कुर्सी के चापलूसों पर प्रहार किया है। आम आदमी के अभावों के साथ ही पूंजीपतियों द्वारा शासित व्यवस्था पर प्रहार किया है। आजादी के 55 वर्षों के बाद भी देश में बेबसी छाई है-

*''बेबसी इस मुल्क के सर यूँ मढ़ी है,*
*तस्वीर में निर्वस्त्र यह किसने जड़ी है।*

*रहनुमा खुदगर्ज़ सारे हो गए हैं,*
*मंजिले-मकसूद की किसको पड़ी है।''*(128)

गीतों और ग़ज़लों के अतिरिक्त इन्होंने लघुकविताएँ, दोहे और मुक्तक भी लिखे हैं। एक मुक्तक में डॉ0 जैन ने प्रकृति और प्रणय का उत्तम चित्रांकन किया है-

*''कुमुदिनी ने सलोने चाँद को आँचल सुलाया है*
*चंद्रमा ने कुमुदिनी को हिया में ही बसाया है।*
*जगत जिसको भ्रमित हो दाग समझा है-*
*वही तो नेह में गाढ़ी कुमुद की एक छाया है।''*(129)

डॉ0 दयाचन्द जैन के गीत संगीतात्मकता और मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत हैं। उनकी ग़ज़लें सरल, सीधी और सधी हुई हैं। इनकी अछांदस कविताओं में अनुभूति की तीव्रता है। साथ ही नए बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिए-

*''व्यक्ति और व्यक्तित्व*
*ज्यामिति से अलग कुछ भी नहीं*
*वही कोण त्रिभुज आड़ी-तिरछी*
*छोटी-बड़ी अथवा समान्तर रेखाओं में /*
*बँटा है और अंततः*
*पूरे वृत से घिरा है*
*एक-दूसरे से जुड़ा है।''*(130)

डॉ. जैन की 'धूप' कविता बिम्ब-विधान की दृष्टि से उत्कृष्ट रचना है। इनका साहित्य परिमाण की दृष्टि से स्वल्प होने पर भी गुणवत्ता और अर्थवत्ता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इनकी कविताओं में जीवन और जगत से जुड़े प्रश्नों तथा उनके समाधानों को स्पष्टता और सरलता से प्रस्तुत किया है।

***भगवानदास जैन***

गुजरात के हिन्दी ग़ज़लकार भगवानदास जैन का जन्म अहमदाबाद में सन् 1938 में हुआ। इन्होंने प्रथम श्रेणी में एम.ए. तथा साहित्यरत्न किया। अहमदाबाद में शिक्षा पूरी करने के बाद वे प्राध्यापक हो गए। सरदार बल्लभभाई आर्ट्स कालेज, अहमदाबाद से प्राध्यापक पद से सेवानिवृत हुए। इनकी कविता-लेखन के साथ-साथ संगीत और चित्रकला में भी रुचि है। भगवानदास जैन कवि होने के साथ-साथ सफल अध्यापक, अच्छे वक्ता तथा प्रबुद्ध समीक्षक भी हैं।

इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'रोशनी की तलाश' (दयाचन्द जैन के साथ संयुक्त काव्य-संग्रह), 'जिन्दा है आईना' (ग़ज़ल-संग्रह, 1992), 'आस्था के स्वर'(काव्य-संग्रह), 'कटघरे में हूँ' (ग़ज़ल-संग्रह, 1998)।***

इसके अतिरिक्त 20 से अधिक साहित्यिक-समीक्षात्मक लेख तथा 13 सहयोगी कविता-संकलनों में कविताएँ तथा ग़ज़लें प्रकाशित है। इन्होंने सह संपादन तथा कई पुस्तकों के हिन्दी में अनुवाद भी किए हैं। इन्हें गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा 'जिन्दा है आईना' और 'कटघरे में हूँ' के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

जैन साहब निबंध, समीक्षा, संपादन आदि गद्य विधाओं में भी सिद्धहस्त है किन्तु कविता के प्रति आरंभ से लगाव रहा है। इन्होंने छन्दमुक्त कविताएँ, क्षणिकाएँ, दोहे, मुक्तक, गीत, ग़ज़लें सभी लिखे हैं परन्तु गीत और ग़ज़लें अधिक प्रिय रही हैं। 'जिन्दा है आईना' में जैन जी ने 'अपनी बात' में ग़ज़लों के प्रति अपने लगाव को व्यक्त भी किया है- ***''गद्य की अपेक्षा पद्य और पद्य में भी गीत-गज़लों के प्रति मेरी अभिरुचि छात्रावस्था से रही है। संभवत यही कारण है कि अपनी बात कहने के लिए मुझे गज़ल का माध्यम विशेष रूप से रास आया।''***

जैन जी की प्रारंभ से ही सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति रही है। वे अपने सामाजिक दायित्व के प्रति सजग और सावधान हैं जिसके कारण उन्होंने शोषितों के प्रति अपनी अनुभूतियों को अपनी ग़ज़लों में साहस के साथ अभिव्यक्त किया है। आज मनुष्य एक मशीन बन कर रह गया है-

***''निष्प्रयोजन दौड़ता है अहर्निश***
***यह मनुज है या अचेतन यन्त्र है।''***(131)

अपनी कविताओं और ग़ज़लों में कवि ने गरीब और शोषित वर्ग की समस्याओं, अभावों का स्वाभाविक और मार्मिक वर्णन किया है। कवि ने आज के शोषित, गरीब आम आदमी के जीने के साधनों का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है-

***''आह, पीड़ा, यातना, रंजोअलम, आँसू, घुटन,***
***आज जीने के लिए लो पेश यह सामान है।''***(132)

इन्होंने अपनी ग़ज़लों में वर्तमान युग की विसंगतियों और विद्रूपताओं को सहज और निराले ढंग से व्यक्त करते हुए वर्तमान समय में मनुष्य के एकाकीपन की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है। एक उदाहरण देखिए-

***''चेहरों की भीड़ में यहाँ तनहा है आईना,***

*खुद अपने आँसुओं पै ये हँसता है आईना।''*(133)

आज औद्योगिकरण तथा विज्ञान के चमत्कारों से उपलब्ध भौतिक सुख-सुविधाओं से तीव्र गति से शहरीकरण हुआ है। इसके कारण समाज में रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अपराधीकरण बढ़ा है। शहरीकरण और सुख-सुविधाओं की उपलब्धिओं के बावजूद आम आदमी आज भी अभावग्रस्त है। मानवीय मूल्यों और नैतिक भावनाओं का ह्रास हो रहा है। कवि ने शहर को मरघट के समान माना है जहाँ लोग अपनी संवेदनाओं को मार कर जी रहे हैं-

*''मरघट है दोस्त हम जहाँ मर-मर के जी रहे,*
*कहते हो तुम इसे शहर कहने की बात है।''*(134)

देश आजाद होने के बाद भी भ्रष्ट राजनीति के कारण गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, आदि विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है। अपराधी तत्त्वों का राजनीति में बोलबाला है। जैन जी ने कविताओं में आज की भ्रष्ट राजनीति के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया है। राजनेता स्वयं भ्रष्ट है जो देश को खोखला कर रहे हैं। जैन जी ने राजनीति के विभिन्न पक्षों को उजागर किया है। एक उदाहरण देखिए-

*''मंत्रणाएँ शान्ति की फिर हो रही हैं,*
*देश में षड्यंत्र की संभावना है।''*(135)

भगवानदास जैन क़ी कविताओं में दृढ़ संकल्प, आशा और विश्वास के स्वर भी हैं।

*''यदि सृजन की चेतना है बलवती तो,*
*शून्य से भी सृष्टि का निर्माण होगा।''*(136)

और

*''धो डालें हम नीर को, करें हवाएँ साफ*
*वर्ना भावी पीढ़ियाँ, नहीं करेंगी माफ ॥''*(137)

'कटघरे में हूँ' ग़ज़ल-संग्रह में कवि ने स्वयं कटघरे में खड़े होकर अपने कवि-दायित्व से सम्बन्धित प्रश्नों का बेबाकी से उत्तर दिया है। इसमें समसामयिक ग़ज़लें है जिसमें जीवन और जगत के प्रति गहन चिन्तन झलकता है।

भगवानदास जैन की ग़ज़लों और काव्य-संग्रहों की भाषा भावानुकूल, सबल और पाठकों के हृदयों को सीधा स्पर्श करती है। आम बोलचाल तथा जनता की भाषा है। मिश्रित हिन्दी भाषा में उर्दू के शब्दों तथा आँचलिक शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

*रमाकान्त शर्मा*

*'एक मस्तमौला, फक्कड़, देश-प्रेमी, क्रान्तिकारी, आधुनिक कविता के वैतालिक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक, भारतीय संस्कृति के संरक्षक तथा एक महामानव'*[138] डॉ0 रमाकांत शर्मा का नाम गुजरात में रहकर हिन्दी की निष्ठापूर्ण सेवा करने वालों में उल्लेखनीय है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बखरा गाँव (देवरिया, जिला) में हुआ। एम.ए. पीएच.डी. करने के बाद सन् 1957 से गुजरात में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यशील रहे डॉ0 शर्मा आर्ट्स कॉलेज, मियागाँव करजण से सेवानिवृत हुए हैं। अध्ययन, शोध-समीक्षा, गद्य-काव्य और कविता-लेखन में रुचि होने के कारण इन्होंने अध्यापन और प्रशासन करते हुए अनेक समीक्षात्मक शोध और काव्य-संग्रह प्रकाशित किए हैं।

इनके प्रकाशित पुस्तकें और काव्य-संग्रह हैं- *'छायावादोत्तर हिन्दी काव्य '(शोध प्रबन्ध), 'अशब्द अर्थ' (1969), 'उगते शब्द' (1970), 'नवद्वीप' (1972), 'सब की माटी'(1977), 'एक अर्थ' (1972), 'मौत से दो हाथ' (1996), 'अथेति' (1996), 'उगती सुबह' (1997), 'हाथ आँखों वाले' (1999), 'सूर्य मैं ही हूँ' (2000), 'चंदन वृक्ष' (गद्य काव्य)।*

सेवानिवृति के बाद अब ये साहित्य के प्रति पूर्णतया समर्पित हैं। अपनी उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं के कारण इन्हें देश-विदेश की अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया हैं- 'अन्तर्राष्टीय हिन्दी समिति', अमेरिका द्वारा सम्मान-फलक (ताम्र-पत्र) , गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा 'अथेति' के लिए प्रथम पुरस्कार-सम्मान और ताम्र-पत्र , गुजरात हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 'गरिमा सम्मान'।

'अशब्द अर्थ' इनका पहला काव्य-संग्रह है। *''अशब्द अर्थ' काव्य मिट्टी भारतीयता की मिट्टी की सोंधी सुगन्ध से सुगन्धित है।'*[139] इस संग्रह की भूमिका में कवि ने स्वयं स्वीकार किया है कि *''ये कविताएँ इसी भूमि की टूटन और उर्वर विकास की कहानियाँ हैं।''*

'उगते शब्द' उनका दूसरा काव्य-संग्रह है जिसे कवि ने *''दुधमुँहे-भोले शब्दों का आकार माना है''*[140] इस काव्य-संग्रह में कवि के प्रेम, जीवन, आस्था के प्रति व्यापक दृष्टिकोण के साथ प्रकृति के मनोरम चित्रों का दर्शन होता है। जीवन में नवनिर्माण के लिए प्रेम की सर्जनात्मक शक्ति की आवश्यकता को कवि ने अपनी कविता 'जन-जीवन' में इस प्रकार व्यक्त किया है-

*''प्रेम-पुष्प की भीख माँगता*
*जन-जीवन का गान कवि मैं''*[141]

और

*''गान यह सम्मान है*
*मानव हृदय के सत्य का,*
*सत्य यह है प्रेम जग का*
*प्रेम ही सारांश जीवन ॥''*(142)

'नवद्वीप' इनका तीसरा काव्य-संग्रह है। इसमें एकाकी जीवन की पीड़ा के साथ नव-निर्माण की सर्जनात्मक चेतना के स्वर मुखरित हुए हैं। इसमें कवि को वैभव-विलास या *''लक्ष्मी की गोद''*(143) में बैठने की अपेक्षा जड़ताओं से लड़ने की प्रबल कामना है-

*''मेरे चरणों में सजीवता है*
*शिलाएँ रूप ले*
*निखरती हैं,*
*हाथों की रेखाएँ,*
*लक्ष्मण-रेखा बन*
*जड़ता से लड़ती हैं ॥*(144)

इस संग्रह की कविताएँ कवि की प्रौढ़ता की प्रतीक हैं।

'सबकी माटी' शर्मा जी की प्रौढ़ कलात्मक अभिव्यक्ति है। डॉ0 गुलाब सिंह के अनुसार *''इसने भारतीय-जीवन के व्यापक मानव मूल्यों के साथ नए भारतीय जीवन की समस्याओं को भी स्पर्श किया है। मूल से ही मनुष्य सर्जनात्मक प्रतिभा से पूर्ण सहज ही प्रेम, दया, क्षमा और सौन्दर्य की वृतियों को चाहने वाला एक उत्कृष्ट जीव है।...'सब की माटी' की रचनाएँ मानव व्यक्तित्व की श्रेष्ठता को अभिव्यक्त करने वाली मधुर कृतियाँ हैं।''*(145)

'मौत से दो हाथ' में शर्माजी ने मौलिक, परम्पराविहिन, व्यक्तिगत और सामाजिक-जीवन की प्रामाणिक अनुभूतियों से उत्पन्न कविताएँ हैं।

'अथेति' अमेरिका-यात्रा केसमय लिखी गई 118 कविताओं का संकलन है। इसमें ''धरती का स्वर्ग'' कहलाने वाले अमेरिका की संवेदनाविहीन, भोगवादी सभ्यता का वर्णन किया है। साथ ही पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति से प्रभावित होते भारतीयों को सही राह दिखाने को कवि-हृदय कृत संकल्प है। शर्मा जी के अनुसार भौतिक सुविधाओं से सम्पन्न अमेरिका में आदमी खो गया है-

*''इतना परायापन*
*धरती का स्वर्ग।*
*इस देश में*
*काँटे-सा चुभता है ॥''*(146)

क्योंकि

*''खाने-पीने का क्या मजा?*
*सब कुछ है, आदमी कोई नहीं ॥''*(147)

इस काव्य-संग्रह में विदेश में रहते हुए भी कवि भारत से जुड़ा हुआ अनुभव करता है। डॉ0 नागर के अनुसार ***''आपकी कविताएँ एक ओर गाँव की मिट्टी से अनुप्राणित हैं तो दूसरी ओर वे महानगरीय जीवन की जटिलताओं से ओत-प्रोत हैं। आपका जीवन-दर्शन कविता के बिम्ब एवं प्रतीकों के अवगुण्ठन में मुखर हो उठता है। भाषा-शैली कथन की वक्रता तथा नए टटके बिम्बों का पद-पद पर प्रयोग, शर्माजी की कविता की विशेषताएँ हैं।''***(148)

इनको संगीत का भी समुचित ज्ञान है। इन्होंने मुक्त छंद में कविताएँ लिखी हैं। इनकी कविताओं में युगीन संदर्भों के साथ-साथ आस्था और जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है।

***बसन्त कुमार परिहार***

गुजरात के चर्चित कवि, नाटककार, लेखक, सम्पादक और पत्रकार बसन्त परिहार जी का जन्म 1935 को स्यालकोट में हुआ जो अब पाकिस्तान में है। इन्होंने एम.ए. (प्रथम वर्ग में प्रथम), एम.एड., साहित्यरत्न किया है। इन्होंने अहमदाबाद के साथ रूबी-मस्कट-विदेश में हिन्दी का अध्यापन कार्य किया है। अब पूर्णतः साहित्य को समर्पित हो स्वतन्त्र लेखन कर रहे हैं।

इनके लिखे चार नाटक - ***'रैन भई चहुँ देश', 'पूर्ण-विराम', 'दीमक के पहाड़', 'जहाज का पंछी'*** रंगमंच पर मंचन करने तथा शिल्प की दृष्टि से देश-विदेशों में लोकप्रिय हुए हैं। कवि के रूप में इनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं- ***'अधनंगा सूरज' (काव्य-संग्रह, 1986), 'चट्टान पर अंकित इबारत' (काव्य-संग्रह, 1994), 'चिन्दी-चिन्दी अस्तित्व' (काव्य-संग्रह, 1994), 'कैनवास पर फैलते रंग' (तीन लम्बी कविताएँ, 2000)।***

इसके अतिरिक्त कई पुस्तकों में इनके लेखादि प्रकाशित हुए हैं। 'आकार' नामक

त्रैमासिक पत्रिका का संपादन भी किया है। 'शब्द लोक' संस्था के एक स्थापक सदस्य हैं। ***'सिटी ऑफ डार्क शैडोज़'*** नामक अंग्रेजी कविताओं का संग्रह भी लिखा है, जो प्रकाशित है।

### *डॉ0 नवीन प्रकाश सिंह 'नवीन'*

इनका जन्म सन् 1942 में सीतापुर (उ0प्र0) में हुआ था। सन् 1980 के आसपास आप बड़ौदा में ओ.एन.जी.सी. में स्थानान्तरित होकर आ गए और भूविज्ञान में पीएच.डी. करके आप जी.एम. (जनरल मैनेजर) तक के पद पर पहुँच गए।

नवीन जी की काव्य-कृति 'मुट्ठी भर आकाश' साहित्यकारों में विशेष चर्चित रही है। आप गुजरात हिन्दीप्रचारिणी सभा के अध्यक्ष हैं तथा हिन्दी साहित्य अकादमी में सदस्य रहे हैं। आप राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों के संयोजक रह चुके हैं। अनेक कवि सम्मेलनों का संचालन भी कर चुके हैं।

आपकी कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से युक्त तथा सांस्कृतिक आस्थाओं से संलग्न रही हैं। कुछ कविताएँ तो मंच से प्रसारित होकर अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं जैसे-'मैं वृक्ष हूँ' 'वह धरती मेरे नाम नहीं'।

नवीन जी हिन्दी प्रचार एवं प्रसार के प्रबल समर्थक रहे हैं, विज्ञान सम्बन्धी आलेखों का हिन्दी में रूपान्तरण करना तथा हिन्दी में ही शोध लेखादि लिखने में वह दक्ष हैं। इनका दूसरा काव्य-संग्रह निकट भविष्य में सामने आ रहा है। 'चक्रव्यूह' कविता में भारतीय संस्कृति के जीवन-दर्शन को ओजपूर्ण शब्द-वैभव के साथ प्रस्तुत किया है-

***''शंखनाद कर रहीं दिशाएँ, समरभूमि हर घर-आँगन है,***
***चक्रव्यूह रच रहा अँधेरा द्वार तोड़ने कठिन पड़ेंगे।***
***रोक न पाएगा यह आँधी अब अभिमन्यु अकेला कोई,***
***शुभ प्रभात की बेला होगी, जब कृष्णार्जुन साथ लड़ेंगे।''***[149]

### *रहमत अमरोहवी*

श्री रहमत उल्लाखान 'रहमत अमरोहवी' का जन्म सन् 1929 में अमरोहवा (उ0प्र0) में हुआ। ये देश की अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित हुए हैं। इनकी उर्दू में चार पुस्तकों के अतिरिक्त हिन्दी की प्रकाशित काव्य-कृतियाँ है- ***'इज़ाफ़ा' (दूसरी आवृति, 1993), 'इसी माहौल में' (1993), 'त्रिवेणी', 'रतजगे' (हिन्दी ग़ज़ल-संग्रह)।***

इनका एक शेर देखिए-

*''मुहब्बत ज़िन्दगी की इक कड़ी है, मगर इस राह में मुश्किल बड़ी है।*
*ग़ज़ल और तंगदामानी का शिकवा, सलीका हो तो गुंजाइश बड़ी है।''*(150)

*दिनेशचन्द्र सिन्हा*

गुजरात के प्रतिभाशाली कवि, उपन्यासकार, पुरातत्वविद् एवं चिन्तक डॉ0 दिनेशचन्द्र सिन्हा का जन्म सन् 1941 में लखनऊ में हुआ। इन्होंने एम.ए. (समाजशास्त्र, इतिहास एवं पुरातत्व), एल.एल.बी., डिप्लोमा तमिल में, पोस्ट इंटरप्रेटरसि (चीनी भाषा), पीएच. डी. किया है। अभी ये भारत सरकार के गृह मंत्रालय में उच्च पद पर आसीन है।

इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- ***'जीवन क्या जो एकाकी है' (1995), 'समय काल के अम्बर पर' (1997), 'परमात्मा' (1999), 'भ्रम' (1999)।***

इन्होंने अपनी कविताओं में भारत की सांस्कृतिक चेतना एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि पर आज की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक समाधान सहज रूप से किया है। वृक्ष को ईश्वर रूप मानते हुए सिन्हा जी ने अपनी कविता में तरूवर को नया रूप दिया है-

*''हरे-भरे वस्त्रों में सजकर,*
*जीवन की पहचान बने तुम,*
*मूक खड़े थे वर्षों से, अब-*
*मूर्तिमंत भगवान बने तुम।''*(151)

*डॉ0 शिवा कनाटे*

डॉ0 शिवा कनाटे गुजरात के प्रतिभा-सम्पन्न कवि, एवं ग़ज़लकार हैं। इनका जन्म सन् 1953 को इन्दौर (म.प्र.) में हुआ। ये एम.बी.बी.एस. डॉक्टर हैं। इनके दो प्रकाशित हिन्दी काव्य-संग्रह हैं- ***'नदी के तट की बालू पर' (1998), 'शब्दोत्सव' (1998)।***

इनकी रचनाओं का पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा संचार माध्यमों से प्रसारण भी हुआ है। इनकी कविताओं में नए बिम्ब-प्रतीकों के माध्यम से समकालीन सन्दर्भों और शाश्वत सम्बन्धों का वर्णन हुआ है। 'शब्दों की नाव' कविता में इनकी रचना-शैली का उदाहरण दृष्टव्य है-

*''समय की नदी में*
*छोड़ दी है मैंने शब्दों की नाव*
*तुम्हारी तरफ़ ....।*
*नाव कभी डूब गई*
*तो भी*

*शेष रह जाएगी*

*अर्थों की लहरें.....।''*(152)

***नवनीत ठक्कर 'अल्प'***

डॉ0 नवनीत आर. ठक्कर 'अल्प' गुजरात के चर्चित कवि, समीक्षक एवं चिन्तक हैं। इनका जन्म सन् 1940 में देथली (जि. खेड़ा-गुजरात) में हुआ। ये एम.ए.,पीएच.डी., एम. एड. तथा हिन्दी सेवक हैं।

नवनीत जी के हिन्दी शोध-समीक्षा विषयक ग्रन्थ, गुजराती ग़ज़ल-संग्रह तथा अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- ***'स्याही भीगे पल' (1995), 'तनहा लमहों की सुर्खरू लकीरें' (1996), 'अहसास सजे अलफाज' (1997), 'चिलमनी यादों के महरूमी साये' (1999)।***

ये 'हिन्दी गरिमा पुरस्कार', 'कुसुम हिन्दी-साधक सम्मान', 'राष्ट्रीय भाषा प्रहरी', 'शान्ति-साधना पुरस्कार', तथा हिन्दी साहित्य अकादमी (गुजरात राज्य) द्वारा पुरस्कृत तथा सम्मानित हुए हैं। इनकी कविताओं में जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं के प्रति सुधा -रवादी दार्शनिक भाव व्यक्त हुआ है। जीवन के उतार-चढ़ाव को 'परिताप' कविता में इस प्रकार रेखांकित किया है-

*''अब सियाही बादलों से ग्रस्त, सोने जा रहा हूँ !*

*लो चलो, अब अस्त होने जा रहाँ हूँ !*

*हाँ चलो, अब ध्वस्त होने जा रहा हूँ !''*(153)

***श्रीमती लक्ष्मी अम्बालाल पटेल***

श्रीमती लक्ष्मी अम्बालाल पटेल का जन्म सन् 1954 में विसनगर (गुजरात) में हुआ। इन्होंने बी.ए., बी.एड., एल.एल.बी. किया है। इनकी हिन्दी में प्रकाशित कृतियाँ हैं- ***'प्यासे नगमें (ग़ज़ल-संग्रह', 1985), 'काग़जी रिश्ते' (ग़ज़ल संग्रह, 2000)।***

***समरथलाल जैन 'गुलजार'***

इनका जन्म सन् 1929 में आलोट (रतलाम-म.प्र.) में हुआ। इन्होंने मैट्रिक किया है तथा स्वयं का व्यापार है। इनके अब तक के प्रकाशित हिन्दी काव्य-संग्रह हैं- ***'रसगंगा' (काव्य 1986), 'रसधार' (काव्य 1993), 'रसकलश' (काव्य, 1993)।***

'गुलजार' जी की रचना-शैली 'चाह' कविता में इस प्रकार उजागर हुई है-

*''छल-प्रपंच मायावी जीवन,*

*वह तेरा धन, यह मेरा धन,*

*तृष्णाओं में बंदी मन को सहज मुक्ति अब लौटा दो!*
*बचपन मेरा लौटा दो!'*[154]

*रशीद मीर*

ग़ज़लकार डॉ0 रशीद मीर का जन्म सन् 1950 में पडाल, जिला-खेड़ा (गुजरात) में हुआ। इन्होंने एम.ए. और पीएच.डी. किया है।

इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं-*'ठेस' (ग़ज़ल-संग्रह, 1985), 'चीत्कार' (ग़ज़ल-संग्रह, 1987), 'अधखुला द्वार' (ग़ज़ल-संग्रह, 1998), 'धूप के रंग'* ।

इसके अतिरिक्त इन्होंने गुजराती में भी पुस्तकें लिखी हैं। ये ग़ज़ल त्रैमासिक 'धषक' के संपादक है। इन्होंने तीन अन्य पुस्तकों का संपादन किया है। ये अनेक साहित्यिक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत हुए हैं।

*विजय कुमार तिवारी*

विजय कुमार तिवारी का जन्म 1963 को अहमदाबाद में हुआ। ये गुजरात के सशक्त नवोदित ग़ज़लकार हैं। ये एम.ए., बी.एड. हैं। इनकी ग़ज़लों में विचारात्मकता, दायित्वबोध है तथा बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। इनके हिन्दी के प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह हैं- *'निर्झर' (1991), 'फल खाए शजर' (1999)।*

*विनोद दीक्षित*

समर्थ कवि, समीक्षक एवं सम्पादक विनोद दीक्षित जी का जन्म 1947 को सीकर (राजस्थान) में हुआ। ये हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए., पीएच.डी. हैं। इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- *'उछालें और गुलचियाँ' (कविता-संग्रह), 'आकाश में सात रंग', (कविता-संग्रह)।*

इनकी कविताओं में महानगरीय संत्रास तथा गाँवों की दुर्दशा का प्रतीकात्मक रूप में मिथकीय भाषा के द्वारा चित्रण किया गया है।

*विनोद भट्ट*

श्री विनोद भट्ट गुजराती के समर्थ लेखक, व्यंग्यकार/अनुवादक और सम्पादक हैं। इनका जन्म अहमदाबाद में सन् 1938 में हुआ। इन्होंने बी.ए., एल.एल.बी. किया है तथा आयकर सलाहकार है। इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- *'सुना-अनसुना' (व्यंग्य), 'बैताल छबीसी' (व्यंग्य)।*

*सुरेश शर्मा 'कांत'*

श्री सुरेश शर्मा 'कांत' पश्चिमांचल के प्रतिष्ठित ग़ज़लकार, गीतकार, कहानीकार

और वृतचित्र निर्माता है। इनका जन्म सन् 1942 में बैम बीरपुर-अतरोली (अलीगढ़ - उत्तर प्रदेश) में हुआ। ये बी.एस.सी. और पूना से ध्वनि इंजीनियरिंग (सिनेमा) में स्नातक हैं। इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ है- ***'जाती बार न मुख मोड़ो' (दीर्घ काव्य-कृति), 'सच कहना'।***

इसके अतिरिक्त 'नयी धरती नया आकाश' व ***'बूंद-बूंद घट में'*** में सह लेखन किया है। ये हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद तथा राष्ट्रपति से पटकथा-लेखन के लिए पुरस्कृत हुए हैं। इनकी काव्यकृतियों में छायावादी प्रेम तथा आधुनिक जीवन की सामाजिक, राजनैतिक, साम्प्रदायिक विसंगतियों का प्रभावी चित्रण हुआ है। गीतात्मकता और ध्वन्यात्मकता इनकी काव्यगत विशेषता है। प्रणय-निवेदन करती कविता 'तुम और मैं' में इनके हृदय-उद्गार व्यक्त हुए हैं-

***''मोड़कर धारा नदी की, सागरों को बाँधकर,***
***ज्वार-भाटों से उफनते हर भँवर को पारकर,***
***मोतियों से झिलमिलाते आँसुओं की झील में-***
***मैं तुम्हारे दो नयन में डूब जाता हूँ,***
***रूप, तेरे द्वार की साँकल बजाता हूँ।''***(155)

***कांतिलाल शाह***

डॉ0 कांतिलाल शाह का जन्म डभोई (जिला बड़ौदा) में सन् 1935 में हुआ। ये एम.ए., पीएच.डी., हिन्दी साहित्य रत्न हैं। ये बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना तथा हिन्दी साहित्य अकादमी, गुजरात राज्य द्वारा पुरस्कृत हुए हैं।

इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं-***'बहते किनारे' (71 हिन्दी ग़ज़लों का संग्रह, 1998), 'चौराहों पर रुका सफर' (हिन्दी कविता-संग्रह, 2000)।***

***डॉ0 ऋषिपाल श्रीमान 'ऋषि'***

ग़ज़लकार डॉ0 ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'(सन् 1957 को जन्म) ने एम.एस.सी., पीएच.डी. किया है। इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'शबनमी अहसास (ग़ज़ल-संग्रह, 1996), 'हवा के काँधे पे' (ग़ज़ल-संग्रह, 2000)।***

इन्हें इनकी काव्य-रचनाओं के लिए पुरस्कृत भी किया गया है। इनकी ग़ज़लों में विचार-भावों की प्रभावात्मकता है। सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

***अश्विनी कुमार पाण्डेय***

गुजरात के चर्चित गीतकार, ग़ज़लकार अश्विनी कुमार पाण्डेय जी का जन्म

तिलोई - रायबरेली (उत्तर प्रदेश) में सन् 1955 में हुआ। ये बी.एस.सी., बी.एड., एल.एल. बी., विद्या-वाचस्पति हैं। इन्होंने आकाशवाणी, साहित्यिक गोष्ठियों में काव्यपाठ किया है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

इनकी प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं- ***'अहसास के साये तले' (ग़ज़ल-संग्रह-1993), 'खूँटी लटकी धूप' (दोहा-संग्रह, 2000)।***

ये 'साहित्य विद्यालंकार' तथा 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि से सम्मानित हुए हैं। इनकी कविताओं में भाव-भाषा तथा बिम्ब योजना का संतुलन है। 'गुजरात की हवाएँ' रचना में पाण्डेय जी की अभिव्यंजना दृष्टव्य है-

***''जीना हमें सिखाती गुजरात की हवाएँ।***
***पल-पल को गुनगुनाती गुजरात की हवाएँ।***
***लगता कि जैसे मिश्री कानों में घोलती हों,***
***जीवन के गीत गाती गुजरात की हवाएँ।''***[156]

### *डॉ0 इन्दिरा दीवान*

गुजरात की चर्चित उपन्यासलेखिका, सम्पादिका, कवयित्री और समाज-सेविका डॉ0 इन्दिरा दीवान का जन्म सन् 1935 में हैदराबाद में हुआ। इन्होंने एम.ए., एल.एल.एम., साहित्य रत्न, पीएच. डी. की है।

इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृति हैं- ***'दर्द' (सचित्र काव्य-संग्रह)।***

ये मूलतः उपन्यास लेखिका हैं। इनकी लघु कविताओं में उन्होंने जीवन की सच्चाइयों को लीक से हटकर देखा है तथा स्वयं को परखने का प्रयास किया है। ये कई साहित्यिक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत और प्रशंसित हुई हैं।

### *कुन्दन माली*

गुजरात के चर्चित अनुवादक, आलोचक तथा कवि कुन्दन माली का जन्म 1957 में उदयपुर (राजस्थान) में हुआ। ये अंग्रेजी में एम.ए., एम.फिल, इतिहास में एम.ए. तथा बी. जे.एम.सी. हैं।

इनकी प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं- ***'इतने दिनों तक' (काव्य-संग्रह, 1989), 'यह दुनिया तुम्हारे बाद' (काव्य-संग्रह), 'जग रो लेखो' (काव्य-संग्रह, 1989), 'सागर पांखी' (काव्य-संग्रह)।***

इसके अतिरिक्त देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में इनकी कविता/अनुवाद/आलोचना/निबन्धों का प्रकाशन हुआ है। आकाशवाणी से भी इनकी रचनाओं का प्रसारण हुआ

है। इन्हें आलोचनाओं के लिए पुरस्कृत भी किया है।

***चन्द्रपाल सिंह यादव***

श्री चन्द्रपाल सिंह यादव का जन्म 1959 में फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इन्होंने संस्कृत, हिन्दी एवं दर्शनशास्त्र में एम.ए., बी.एड. तथा पीएच.डी. भी किया है।

इनकी हिन्दी के प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'हेरत हेरत हे सखी' (काव्य-संग्रह, 1996), 'राही अपनी मंजिल के' (काव्य-संकलन एवं संपादन, 1996), 'ध्वनि पथ के बटोही' (काव्य-संकलन, संपादन-1998)। 'वात्सल्यांतर' (2002) और 'विमाता' इनकी अन्य प्रकाशित कृतियाँ हैं।***

ये गुजरात के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कवि, कथाकार एवं चिंतक हैं। इनकी रचनाएँ कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इन्हें 'साहित्यमणि' तथा 'आचार्य' की मानद उपाधि से तथा 'बह्म प्रकाश' द्वारा सम्मानित किया गया है। इनकी रचनाओं में दार्शनिक तथा मिथकीय चेतना है। भाषा संस्कृतनिष्ठ है।

***दिव्या रावल***

श्रीमती दिव्या प्रबोध भाई रावल का जन्म सन् 1936 में गोंदिया (महाराष्ट्र) में हुआ। इन्होंने साहित्यरत्न किया है। ये नारी जागरण सम्बन्धी, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- ***'स्पन्दन' (1991), 'मौन का आंगन'(1993), 'बिखरता सच' (1998)।***

श्रीमती दिव्या रावल आस्थावान कवयित्री, लेखिका और समाज-सेविका हैं। इनकी भाषा भावानुरूप तथा प्रतीकात्मक शैली है। इनकी कविताओं में दर्शन और चिन्तन के स्वर प्रमुखता लिए हैं। दार्शनिकता से भरा निम्न उदाहरण दृष्टव्य है-

***''ढलती सांझ को***
***डूबते सूरज की***
***रक्तिम आभा को***
***रोज निरखते-***
***अविरत चलता***
***मानव प्रवाह।''***[157]

***धरम विजय पंडित***

(आचार्य) धर्म विजय पण्डित जी का जन्म सन् 1939 को दिल्ली में हुआ। ये सेठ चतुर्भुज लाजपतराय हिन्दी हायर सैकेण्डरी स्कूल अहमदाबाद के आचार्य हैं। इनकी

प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं- ***'महाभारत के बणजारे' (काव्य), 'शब्द बांसुरी' (काव्य)।***

इनकी हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू तथा अंग्रेजी में भी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'ब्रह्मायतन' द्विमासिक हिन्दी पत्रिका का संपादन भी किया है।

***पदमचन्द्र सिंघी***

श्री पदमचन्द्र सिंघी गुजरात के प्रतिभा सम्पन्न कवि, लेखक, लोक-सेवक तथा सचेतक हैं। इनका जन्म सन् 1930 को जयपुर में हुआ। ये एम.ए. है तथा आई.ए.एस. (सेवानिवृत) अधिकारी रहे हैं। इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'रिसते घाव' (काव्य-संग्रह), 'गीत मेरे गीत' (गीत-संग्रह), 'भूलूं कैसे पीड़ा उर की' (काव्य-संग्रह), 'गुनगुनाहट' (काव्य-संग्रह)।***

इनकी कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य-संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। इनकी कविताओं ने दर्शन और चिन्तन की पृष्टभूमि पर मानवीय हताशा और संत्रास को समूल नष्ट करने का जुझारूपन झलकता है।

***मोहनभाई भावसार 'दीनबंधु'***

गीतकार मोहनभाई भावसार का जन्म गुजरात के खेरडा (जिला आणंद) में सन् 1925 में हुआ। इन्होंने एम.ए., साहित्य रत्न, डिप्लोमा इन ड्रामा किया है।

इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'समय की पुकार' (गीत-संग्रह, 1994), 'मतदाता जागृति' (गीत, 1996), 'झूला' (बालगीत), 'कदम मिला के' (देशभक्ति-गीत)।***

इनकी गुजराती में भी 20 से ज्यादा कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। इन्हें अनेक सामाजिक, साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति, साम्प्रदायिक एकता तथा विश्व कल्याण की भावना मुखरित हुई है।

***मीराँ रामनिवास***

श्रीमती मीराँ रामनिवास का जन्म सन् 1957 में भरतपुर (राजस्थान) में हुआ। ये गुजरात की प्रभावपूर्ण कवयित्री और कथाकार हैं। ये एम.ए. (संस्कृत) तथा आई0पी0एस0 हैं। इस समय भारतीय पुलिस सेवा में है। इनके एक कहानी-संग्रह के अतिरिक्त दो प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- ***'अंकुर' (काव्य-संग्रह, 1991), 'एहसास की धूप' (काव्य-संग्रह, 2000)।***

इनकी कविताओं में स्वानुभूतियों की सरल एवं सहज प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति हुई है।

***रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'***

गुजरात के समर्थ कवि, समीक्षक एवं चिंतक श्री रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का जन्म पचों - अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) में सन् 1935 में हुआ। ये वाणिज्य स्नातक हैं।

इनकी प्रकाशित हिन्दी काव्य-कृतियाँ हैं- ***'सुधियाँ शेष रह गयीं' (गीत-संग्रह, 1964), 'जाने क्या बात कही ?' (गीत-ग़ज़ल संग्रह, 1994), 'क्षण के कण' (हाइकु-संग्रह, 1998), 'लेकिन कब तक?' (ग़ज़ल संग्रह, 1999), 'कौंध' (हाइकु-संग्रह, 2000), 'क्षणांश' (हाइकु-संग्रह, 2001)।***

35 वर्षों से देश की श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। इन्हें अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया है। ये 'साहित्य महोपाध्याय' तथा 'आचार्य श्री' की मानद उपाधि से अलंकृत हुए हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से इनकी रचनाओं का प्रसारण हुआ है। इनकी रचनाओं में जीवन के विविध पहलुओं, शाश्वत सत्य, प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य तथा समकालीन युगबोध का चित्रण वैचारिक स्तर पर हुआ है। 'क्षण के कण' हाइकु-संग्रह से कुछ उदाहरण देखिए-

1) *''पढ़े जाते हैं / हाइकु लिखे नहीं / गढ़े जाते हैं।''*[158]

2) *''चरण स्पर्श / पुरस्कार दिलाये/ अकादमी के।''*[159]

3) *''दया की नहीं / क्रांति की जरूरत /भाग्य बदले।''*[160]

### *अरविन्द जोशी*

अहमदाबाद के प्रबुद्ध कवि, समीक्षक, चिन्तक और अनुवादक डॉ0 अरविंद जोशी का जन्म सन् 1933 को सिलावद (निमाड़, मध्यप्रदेश) में हुआ। ये एम. ए., पीएच. डी. हैं। इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'भूदान क्रान्ति' (काव्य-संग्रह, सन् 1955 ई0), 'शेष है, जो कहना है' (काव्य-संग्रह, 1976)।***

इन्होंने कलात्मक शैली में जीवन के दार्शनिक पहलुओं और वर्तमान समाज के पाखंडों को कविता में प्रस्तुत किया है।

### *अंजना संधीर*

डॉ0 (श्रीमती) अंजना संधीर का जन्म रूड़की (उत्तर प्रदेश) में सन् 1960 में हुआ। इन्होंने मनोविज्ञान में एम.ए. तथा पीएच.डी. किया है। अहमदाबाद और न्यूयार्क दोनों आवास-प्रवास के स्थान हैं।

***'बारिशों का मौसम'*** (1993) इनका प्रथम और चर्चित ग़ज़ल-संग्रह है जिसमें 72 ग़ज़लें हैं। 'धूप छाँव और आँगन' (1996), 'ये कश्मीर है' (2000), 'प्रवासी हस्ताक्षर' (1997), 'सात समुन्दर पार से', 'इज़ाफा-अमेरिका हड्डियों में जम जाता है' - इनकी अन्य

प्रकाशित कृतियाँ हैं। गुजरात साहित्य अकादमी तथा अन्य कई संस्थाओं से ये पुरस्कृत हुई हैं। इनकी कविताओं का मुख्य विषय प्रकृति, युगीन सन्दर्भ एवं समस्याएँ तथा परिवेश है जिनका इन्होंने सहज स्वाभाविक चित्रण किया है। इनकी कविताओं में लाक्षणिक प्रयोग मिलते हैं।

*अजीज कादरी*

श्री अब्दुल अजीज अहमदमियाँ कादरी 'अजीज कादरी' का जन्म सन् 1932 में बड़ौदा में हुआ। इनका प्रथम ग़ज़ल-संग्रह ***'सफर'*** प्रकाशित हुआ है जिसे राज्य उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

*डॉ0 अब्बास अली ताई 'अजनबी'*

इनका जन्म सन् 1941 में सोनवाड़ी (जिला वलसाड-गुजरात) में हुआ। डॉ0 ताई दक्षिण गुजरात के चर्चित कवि, कहानीकार एवं समीक्षक हैं। इन्होंने एम.ए., पीएच.डी. किया है। इनकी प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं- ***'नकशे कदम' (ग़ज़ल-संग्रह, 1955), 'कागज की नाव' (कविता-संग्रह, 1997), 'सागर अजनबी' (हिन्दी ग़ज़ल-संग्रह, 1998)।***

इन्हें सी.वी. कपूर ऐज्युकेशन फाऊन्डेशन न्यू देल्ही द्वारा तेजस्वी शिक्षक-2000 पुरस्कार मिला जो गुजरात के एकमात्र एवार्ड विजेता शिक्षक हैं। इसके अतिरिक्त कई पुरस्कारों से भी पुरस्कृत हुए हैं। इनकी कविताओं में समसामयिक संदर्भों और समस्याओं के साथ शाश्वत् और अनुत्तरित प्रश्नों को लाक्षणिकता के साथ उठाया गया है।

*शेखरचन्द्र जैन*

डॉ0 शेखर चन्द्र जैन का सन् 1936 में अहमदाबाद में जन्म हुआ। इन्होंने एम. ए., पीएच.डी. और एल.एल.बी. किया है। शेखर जी कवि कहानीकार, समीक्षक, लेखक होने के साथ जैन धर्म साहित्य के विद्वान हैं। इनकी काव्य-कृतियाँ हैं- ***'घरवाला' (व्यंग्य काव्य, 1968), 'कठपुतली का शोर' (काव्य संग्रह, 1984)।***

इनकी रचनाएँ विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। अच्छे वक्ता तथा मंच के कवि, गीतकार होने से इन्होंने मंच पर लेख तथा कविता पाठ भी किए है। शेखर जी के शोध, कहानी, उपन्यास, निबन्ध आदि अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। जैन धर्म और साहित्य से सम्बन्धित कई रचनाएँ तथा ग्रंथ भी इन्होंने लिखे हैं।

जैन धर्म के प्रचार और साहित्य-समृद्धि में अपने प्रदान के कारण देश भर के जैन समाज-संस्थाओं तथा राज्यपाल (गुजरात) द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत हुए हैं। इन्हें 'प्रवचनमणि', 'वाणी भूषण', 'ज्ञान वारिधि' आदि उपाधियों से तथा 'श्रुतसंवर्धन' पुरस्कार से

सम्मानित किया गया है। इनकी कविताओं में प्रकृति और पुरुष के मांसल सौन्दर्य के साथ ही आधुनिक युग की विभीषिकाओं, समस्याओं और विडम्बनाओं पर तीखा और पैना व्यंग्य किया गया हैं।

***कैलाशनाथ तिवारी***

श्री कैलाशनाथ तिवारी का जन्म सन् 1937 को लखनऊ में हुआ। इन्होंने एम. ए. (हिन्दी), एल.एल.बी. तथा रूसी भाषा का तीन वर्षीय विशेष अध्ययन किया।

इन्होंने गीत, ग़ज़लें, समीक्षा, अनुवाद लिखें हैं। तीन काव्य-संग्रहों में इनकी कविताएँ संकलित हुई है। इनके प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'जिन्दगी की राह में' (1993), 'अंजुरी भर प्यास' (1994), 'बाल फुलवारी' (1996), 'चेहरे अपने-अपने' (2001)।***

इन्होंने आस्था, आत्मीयता, प्रकृति-प्रेम, रागात्मकता, सरल ग्राम्य सुषमा, सामाजिक, राजनीतिक एवं संवेदन से भरी कविताएँ लिखी हैं। इनकी रचना का उदाहरण देखिए-

***''मुर्गे के बांग संग दूध मुँहे उठते हैं***
***दोनों ही भूख के हाथों में लुटते हैं***
***दोनों ही संग संग खोजते हैं जिन्दगी।''(161)***

***सूर्यदीन यादव***

डॉ0 सूर्यदीन यादव पश्चिमांचल के चर्चित कवि, उपन्यासकार, कहानीकार एवं समीक्षक हैं। इनका जन्म ढाहा, जिला सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) में सन् 1952 में हुआ। इन्होंने एम.ए., बी.एड., पीएच.डी. किया है। सम्प्रति वे एम.एस. पटेल विद्यालय, अलिंद्रा (जिला खेड़ा) में अध्यापक हैं। इनकी प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं- ***'हिन्दी वाहिनी' (काव्य-संग्रह, 1977), 'फागुन बीते जा रहे' (गीत-संग्रह, 1993), 'दूसरी आँख' (काव्य-संग्रह, 1995), 'लगे मेरा गाँव' (काव्य-संग्रह, 2001)।***

ये अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए हैं। इन्हें 'आचार्य', 'काव्य कुल भूषण' उपाधियों से सम्मानित किया है। इनकी रचनाएँ हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इनकी काव्य-रचनाओं में सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना तथा नारी की वेदना के मार्मिक चित्रण के साथ-साथ ग्रामीण परिवेश और प्रकृति का भी आह्लादक चित्रण है। एक उदाहरण देखिए-

***''धायँ-धायँ कर गोली बरसे, रहि रहि बम्म परै अरराय।।***
***मानों चमचम बिजली चमकै, बादल धड़ड़-धड़ड़ धहराय।।''(162)***

***शांति सेठ***

इनका जन्म शाहजहाँपुरा (उत्तर प्रदेश) में सन् 1928 को हुआ। इन्होंने एम.ए. पीएच.डी. (अर्थशास्त्र-प्रिंसटन युनिवर्सिटी, अमेरिका की छात्रवृत्ति पर) किया है। ये विभिन्न कॉलेजों में व्याख्याता तथा आई.आई.एम. अहमदाबाद में सहशोधकर्त्ता के पद पर कार्यरत रही। इनकी प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं-***'नीलाम्बर के नीचे' (काव्य-संग्रह, 1994), 'हंस सरीखा मन' (गद्य-काव्य, 1997)।***

इसके अतिरिक्त देश-विदेश में भ्रमण के कारण इनकी जीवन दृष्टि व्यापक है। इन्हें धर्म-दर्शन तथा अध्यात्म में गहरी रुचि है। इनकी रचनाएँ देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इन्हें 'राष्ट्रभाषा रत्न', 'समाज रत्न', 'साहित्य श्री' और 'हिन्दी भूषण' आदि उपाधियों से सम्मानित किया गया है। हिन्दी साहित्य परिषद, अहमदाबाद द्वारा आयोजित मानस मंथन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार-रजत पदक भी मिला है। इन्होंने अध्यात्म, जीवन के यथार्थ, प्रेम, प्रकृति, हताशा आदि अनेक भावों-विचारों से जुड़ी कविताएँ लिखी हैं। 'नीलाम्बर के नीचे' से उद्धृत एक उदाहरण देखिए-

***''जब श्याम ही तट पर, मुरली बजावें***
***मैं निरखि छवि, सुध-बुध बिसराऊँ***
***फूटे मन की कटकिया, मैं सागर में मिल जाऊँ।''***[163]

***रामअवधेश त्रिपाठी 'वियोगी'***

श्री राम अवधेश त्रिपाठी 'वियोगी' का जन्म सन् 1918 में गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के कोल्हुआ में हुआ था। ये साहित्यरत्न तथा उच्च प्रशिक्षण प्राप्त हैं। इनके जीवनी, निबन्ध, अनुवाद आदि प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त प्रकाशित काव्य-संग्रह है- ***'चरैवेति' (काव्य-संग्रह, 1993), 'अद्रिजा' (खण्ड काव्य - प्रकाशन के लिए तैयार)।***

इन्होंने 'सुधा-बिन्दु' का संपादन और 'राष्ट्रवीणा' पत्रिका का सह-संपादन भी किया है। इन्हें उत्तम शिक्षक के लिए राष्ट्रपति पदक, हिन्दी भाषा संघ (अहमदाबाद) से सम्मान-पत्र, रा.भा.प्र.सभा वर्धा से प्रशस्ति पत्र, सरस्वती प्रतिभा सम्मान मिले हैं। इसके अतिरिक्त ये हिन्दी साहित्य अकादमी के सदस्य हैं।

'चरैवेति' काव्य-संग्रह में मानव प्रेम, राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बन्धित तथा आधुनिक भावबोध की रचनाएँ हैं। राष्ट्र-प्रेम की भावना से भरी इनकी पंक्तियाँ देखिए-

***''मानव हो धर्म हमारा, मानव हो कर्म हमारा।***
***भारत का कण-कण, जन-जन हो हमें प्राण-सा प्यारा ॥''***[164]

***डॉ0 शशिबाला अरोरा***

डॉ0 शशिबाला अरोरा गुजरात की प्रतिभासंपन्न कवयित्री, लेखिका और

अनुवादिका हैं। इनका जन्म 1960 को देहरादून (उत्तरांचल) में हुआ। इन्होंने एम.ए., पीएच. डी. किया है। वर्तमान में आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कालेज, दहेगाम में व्याख्याता हैं।

इनके लघुशोध, शोध-प्रबन्ध, अनुदित ग्रन्थों के अतिरिक्त प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं- ***'रेत पर हस्ताक्षर' (काव्य-संग्रह, 1994)।***

इस संग्रह में 80 रचनाएँ हैं। इनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी से प्रसारित हुई हैं। इनकी कविताओं में मानव-मन का अन्तर्द्वन्द्व, नारी की सामाजिक स्थिति तथा सामाजिक समस्याओं का प्रतीकात्मक रूप में चित्रण हुआ है।

बेतहाशा भौतिकता की दौड़ में आपाधापी से जीवन-मूल्यों का विघटन होने से व्यक्ति घोर आत्मनिष्ठ हो गया है। इसी आपाधापी का जीवन्त चित्रण का उदाहरण देखिए-

*''अपने वर्तमान पर*
*भविष्य को लादे*
*भाग रहे हैं*
*भटक रहे हैं लोग।*
*हर तरफ होड़ लगी है,*
*आगे निकल भागने की।*
*टाँगे खींची जा रही हैं*
*एक-दूसरे की।''*(165)

### *(कु0) मधुमालती चौकसी*

कु0 मधुमालती चौकसी का जन्म सन् 1933 में बड़ौदा में हुआ। इन्होंने राष्ट्रभाषा रत्न (वर्धा) और साहित्य रत्न (प्रयाग) किया है। इनका प्रकाशित हिन्दी काव्य-संग्रह ***'भाव-निर्झर' (सन्1982)*** काफी चर्चित रहा है।

इन्हें भारत सरकार के शिक्षा व संस्कृति मंत्रालय की ओर से; बैंक ऑफ बड़ौदा; राष्ट्रभाषा प्रचार मंडल; हिन्दी अनुराग समिति, बडोदरा; कवयित्री मधुमालती चौकसी अभिनन्दन समिति; अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठान की ओर से 'साहित्य मणि' तथा कला संस्कृति विद्यापीठ की ओर से 'साहित्यालंकार' की उपाधि आदि से पुरस्कृत तथा सम्मानित किया है।

ये स्वतन्त्र लेखन तथा नि:शुल्क अध्यापन करती रही हैं। इन्होंने अब तक 3000 के लगभग विद्यार्थियों को नि:शुल्क राष्ट्रभाषा हिन्दी की शिक्षा दी है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इन्होंने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इनकी रचनाएँ हिन्दी की श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं में सन् 1954 से प्रकाशित होती रही हैं।

इन्होंने सन् 1950 से ही लिखना प्रारंभ कर दिया था। इनकी प्रथम रचना 'ये मेघ न गरज गरज बरसे' सन् 1954 में साप्ताहिक पत्रिका 'धर्म युग' में प्रकाशित हुई।

इनकी रचनाओं में प्रेम, यौवन की ऊष्मा, सौन्दर्य के साथ-साथ जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण है। इनकी कविताओं में हृदय की इन्द्रधनुषी भावनाओं का चित्रण हमें मिलता है। साथ ही इनमें मन-प्राणों को सराबोर कर देने वाली निर्झर की अजस्र धारा है। इनकी काव्य-रचना में वेदना की भी अभिव्यक्ति हुई है। एक उदाहरण देखिए-

***''शिथिलता की भावना के कूल पर जब***
***उर्मियों के हास का अवसर पाया,***
***व्यथित प्राणों का सिहरता मौन क्रन्दन***
***वेदना के आँसुओं में तिलमिलाया''***[166]

***आत्म प्रकाश***

आत्म प्रकाश जी ने हिन्दी में काव्य-रचना की है। इनके ***'पतझर भी मधुमास हो गया'*** (2001) काव्य-संग्रह में 10 गीत, 6 ग़ज़लें, 35 मुक्तक तथा 108 दोहों का संकलन किया है। ***'अनुभव सतसई'*** (2002) में 711 दोहों का संग्रह है। ***'परछाइयाँ'*** (2003) ग़ज़ल-संग्रह में 71 ग़ज़लें है।

गुजरात की हिन्दी काव्य-परम्परा में अपना सक्रिय योगदान देने वाले अन्य अनेक कवि हुए है। इनमें अरुणा सिंह बाराहट कृत 'तस्बीह के दाने'(92); अशोक नारायण कृत 'शरारे' (80); उत्तरा चीनूभाई कृत 'जहाँ से आकाश शुरू होता है' (96); डॉ0 (श्रीमती) कमलेश सिंह कृत 'निष्कृति' (2001); सुश्री कल्पना 'शील' कृत 'अर्पण' (2001), क्रांति येवतीकर कृत 'अपनी-अपनी धूप'(96), 'जेता' (99); किशन रामचन्द्र साजनानी कृत 'जो सच पाया' (96), श्री कृष्णपाल सिंह भदौरिया कृत 'चाँदनी के नाम'(87); श्रीमती डॉ0 कृष्णा महादेवगिरी गोस्वामी कृत 'मौन मन की बातें' (99); गंगाराम शील कृत 'इश्क नही आसां'; गिरीश चन्द्र पाल कृत 'कभी कुछ कहा है' (97); गोपी चन्द चौबे 'अशेष' कृत 'भाव भूमि' (96), 'हेमांगिनी', 'प्रथा'; श्री चंदू मेहसानवी कृत 'नाम के विपरित गुण मिले' (98); डॉ0 चंद्रकान्त मेहता कृत 'सूरज ढूँढे किरण सतरंगी' (2003); श्री जादवभाई तु. पटेल 'रश्मि भिक्षु' कृत 'ज्योतिर्मयी' (93); श्री जोसफ अनवर कृत 'पगडंडियाँ' (84), श्री ताराकांत यदुवंशी ठाकुर कृत 'भय' (2000); दिनेश गोस्वामी कृत 'जो तुम पास हमारे होते' (99); श्री दिनेश देसाई कृत 'दिल का दरिया' (88), डॉ0 दिवाकर गौड़ 'दिनेश' कृत 'कुछ क्षण अपने' (96); दीनबंधु द्विवेदी कृत 'कश्चित्कान्ता' (98); द्वारका प्रसाद बलदेवप्रसाद साँचीहर कृत 'आंचल

के मोती' (98); डॉ0 द्वारिका प्रसाद चौबे कृत 'द्वारकेशु सतसई' (90); नथमल केडिया (साहित्य महोपाध्याय) कृत 'क्षण कस्तूरी गंध के'(86) 'स्वाती की बूँद सीपी में', 'शब्द मेरे पथ बन्धु' (2000); श्री नरेश चंद्रकर कृत 'हथेलियों की भीड़' (58); निर्मला आसनानी कृत 'अभीप्सा' (97); डॉ0 पुष्पलता शर्मा कृत 'अथ से इति' (91); श्री प्रकाश मिश्र कृत 'मौन शब्द' (87); डॉ0 प्रणव भारती कृत 'एक त्रिशंकु सिलसिला' (95), 'आओ गुनगुनाएँ' (2003); श्रीमती प्रतिभा पुरोहित कृत 'अनुभूति' (91); डॉ0 प्रभास मेहता 'शर्मा' कृत 'तृष्णा'; प्रमीला शुक्ल 'किरण' कृत 'जिन्दगी का सच'; प्रमोद शंकर मिश्र कृत 'चलो चलें, पढ़ें गज़ल'; प्रेम पाल शर्मा कृत 'आदमी को तलाशते हुए'; फूलचंद गुप्त कृत 'इसी माहौल में'; बसंत ठाकुर कृत 'मेरे शहर के लोग', 'नामशेष होता अमृत'; डॉ0 भँवरलाल गुर्जर कृत 'पथरीली ज़मीन' (2002); श्रीमती भारती पांडे कृत 'चिंतन संवाद'; भारती मेहता 'आभा' कृत 'प्रपात' (87); भानुशंकर मेहता कृत 'आस्था के गीत : अनास्था के बीच'; भूपतिराम सांकरिया कृत 'छेटो' (60); (श्रीमती) मंजु 'महिमा' भटनागर कृत 'बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी' (91), 'शब्दों के देवदार' (2001); मदन मोहन सिन्हा 'मनुज' कृत 'कृति'; मधु प्रसाद कृत 'आँगन भर आकाश' (2003); मरियम गज़ाला कृत 'शबनमी लम्हे' (98), 'क्षितिज की दहलीज पर'; श्री महीपत कवि कृत 'कठपुतली के धागे'; डॉ0 माणिक मृगेश कृत 'हास्य व्यंग्य के रंग' (2000), 'तोल तोल के बोल' (2003); मालती शर्मा कृत 'निर्वासन की आँधी'; डॉ0 मीनाक्षी कृत 'आविर्भाव'; श्री मुकेश रावल कृत 'मुट्ठी भर आक्रोश' (85), डॉ0 रंजना अरगड़े कृत 'काल तुझसे होड़ है मेरी' (87); आचार्य रघुनाथ भट्ट कृत 'हाइकु शती', 'हाइकु त्रिशती' (2002); रमाकांत 'सात्विक' कृत 'रोशनी बेईमान'; श्रीमती राज आनन्द कृत 'रजत रश्मि' (97); राजेन्द्र पाल सिंह वर्मा 'इन्द्र' कृत 'पारस' (2002); श्री राजेन्द्र प्रताप 'काजल' कृत 'चौला देवी' (69); डॉ0 रामगोपाल सिंह कृत 'नदी किनारे'; डॉ0 रोहितश्याम पी. चतुर्वेदी 'शलभ' कृत 'यक्ष प्रश्न'; लक्ष्मण दुबे कृत 'कोई घर में ढूँढे घर', 'जो किनारा था कभी'; वसीम मलिक कृत 'तपिश'; डॉ0 वासुदेव वि.पाठक 'वागर्थ' कृत 'सारस्वतम्' (93); श्रीमती शकुन्तला मेहता कृत 'बहुत गई, थोड़ी रही' (2000), 'चिंतन सतसई' (2001); शाकिर जूनागढ़ी कृत 'दीवानएशाकिर' (93), शांति सेठ कृत 'नीलाम्बर के नीचे' (94), 'हंस सरीखा मन' (97); शीला एस. घोडे कृत 'ओस के अक्षर' (95); शेख आदम आबुवाला कृत 'घिरते बादल:खुलते बादल'; श्रीमती सरिता पटेल कृत 'साँसों का सफर' (96); डॉ0 सरोज कैलाशचंद्र वोरा कृत 'मन-मंजूषा' (2000); श्री सलीम शेख कृत 'गुलशन-गुलशन गाती चिड़िया' (95); श्रीमती सुदर्शन बाहरी कृत 'रावी के तट पर' (93); डॉ0 (श्रीमती) सुधा श्रीवास्तव कृत 'दंशों के

घेरे में' (80); सुनन्दा कृत 'बाकी सफर के साथी'; डॉ0 सुरेशप्रसाद सिन्हा कृत 'काल के तीन टुकड़े'; श्री सुलभ धंधुकिया कृत 'चले आओ तुम' (97), (श्रीमती) सुषमा श्रीवास्तव कृत 'दूर क्षितिज तक' (94), 'बादल बोले' (97), 'किलकारी' (2000); सेवाराम गुप्ता 'प्रत्युष' कृत 'हम भारत के बाल' (98); सुश्री हर्षा सावनुर कृत 'साहिल की रेत पर' (95); डॉ0 हरिनकुमारी मजीठिया कृत 'दीप वृक्ष' (88); श्री हरिप्रसाद शुक्ल कृत 'कंकरीले पथ' (2000); श्री हरिसिंह चौधरी कृत 'खुशबू कण' (89); डॉ0 हूंदराज बलवाणी कृत 'राष्ट्रीय एकता विषयक कविताएँ' (83), 'नानी चुप है' (2000) आदि अनेक कवि एवं कवयित्रियाँ हैं।

इनके अतिरिक्त अनेक कवियों एवं कवयित्रियों की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इन कवियों-कवयित्रियों में ओंकार अग्निहोत्री 'शिवम', कन्हैयालाल चौहान 'चिराग', गिरधारी लाल सराफ, गोपाल शुक्ल 'तपिश', डॉ0 गोवर्धन शर्मा, चन्द्रमोहन तिवारी, डॉ0 चन्द्रकांत मेहता, चन्द्रसेन नावाणी, चंपक भट्ट, जितेन्द्र सिंह चौहान 'पुष्प', डाह्याभाई छोटा भाई पटेल 'नवरंग', धर्मनाथ मिश्र, निर्मल भट्ट, मस्तराम गहलोत 'मस्त', मुनीश कुमार सिंह गौर, रजनीकांत शाह, राजकौशल इसौलिया, राजदेव तिवारी, ललिता शर्मा, विजय कुमार गुप्त, नाम देबु ताराचंदाणी, श्री हरि दरियानी 'दिलगीर', जिलेदार सिंह, संतोष लंगर 'सुहास', संध्या अग्रवाल, सविता गौड़, सुभाष भदौरिया, डॉ0 सुरेश चन्द्र एन.झा 'किंकर', हरिवदन भट्ट, हरिसिंह नायक, हसित बुच, भगवती सिंह 'नागदंत', डॉ0 बंसीधर शर्मा, जयकिशन सादानी, ऋतेश त्रिपाठी, श्रीमती कुमुद मिश्रा, डॉ0 रमेश वर्मा, डॉ0 क्रांति कनाटे, संपत लोहार, अशोक उपाध्याय, डॉ0 रजनीकांत जोशी, डॉ0 अंजु शर्मा 'दयानन्द', डॉ0 शांति शर्मा, डॉ0 राकेश अग्रवाल, श्री चिनु मोदी, अनिल अरोरा, उमा अरोरा, अमृत लाल जोशी, नयना डेलीवाला आदि हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुजरात में वर्तमान काल में अनेक समर्थ साहित्य हस्ताक्षर हैं जिन्होंने हिन्दी की प्राय: सभी विधाओं में साहित्य-सृजन किया है। हिन्दी प्रचारकों में श्री अम्बाशंकर नागर, विष्णु विराट, नवीन प्रकाश सिंह, किशोर काबरा आदि उल्लेखनीय हैं, महाकाव्य तथा खण्डकाव्य के सर्जक डॉ0 किशोर काबरा प्रसिद्ध हैं, मंचीय राष्ट्रीय कवियों में विष्णु विराट, किशोर काबरा, राजेन्द्र 'काजल', शिवा कनाटे, भगवान दास जैन आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रजभाषा कवि के रूप में विष्णु 'विराट' तथा द्वारकानाथ चौबे प्रख्यात हैं। ग़ज़ल-लेखन में भगवानदास जैन प्रतिष्ठित हैं। हाइकु-लेखन में डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल तथा रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र' उल्लेखनीय हैं। लम्बी कविताओं के रचयिता के रूप में किशोर काबरा,

बसंत परिहार, विष्णु 'विराट', सुलतान अहमद आदि जाने जाते हैं। अछांदस कविता के कवि के रूप में रामकुमार गुप्त, बंसत परिहार, सूर्यदीन यादव आदि विशेष समादृत हैं।

महिला साहित्यकारों के रूप में प्रणव भारती, सुधा श्रीवास्तव, अंजना संधीर, नलिनी पुरोहित, नीलम कुलश्रेष्ठ, रंजना अरगड़े, शीला घोडे, डॉ0 मीनाक्षी, सुनन्दा, हर्षा सावनुर, सरिता पटेल, मालती दुबे आदि चर्चित हैं।

कहानी, उपन्यास, ललित निबन्ध, शोध-लेख संस्मरण, समीक्षा, आलोचना आदि विषयों पर लिखने वाले अनेक साहित्य-मनीषी हैं जिन्होंने समय-समय पर अपने वैदुष्य को व्यक्त किया है। इस तरह कहा जा सकता है कि अहिन्दी-भाषी राज्यों में गुजरात राज्य सर्वाधिक सम्पन्न राज्य है जहाँ अनेक वरिष्ठ साहित्यकार जन्में हैं तथा आज भी अनेक कवि एवं लेखक वर्तमान हैं जो अपनी वरिष्ठ रचनाओं से गुजरात के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे हैं।

## *सन्दर्भ-ग्रंथ-सूची*


1. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर' सम्पादकीय- डॉ0 किशोर काबरा, पृ0 16 ।
2. 'आ0 रघुनाथ भट्ट अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 221 ।
3. 'सबरस' - डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल, पृ० 14 ।
4. 'प्रम्लोचा' - डॉ0 अम्बाशंकर नागर ।
5. 'आ0 रघुनाथ भट्ट अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 190 ।
6. 'कारा' - भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज' ।
7. वही ।
8. 'कारा' की भूमिका - भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज' ।
9. 'कारा' ।
10. 'हरिपतित पावन सुने' ।
11. 'अजस्रा' ।
12. वही, 'विस्तार' शीर्षक से ।
13. 'कारा' ।
14. 'ज़ज़्बात' ।
15. 'सुमनांजलि' ।
16. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 2 ।
17. 'चाँद, चाँदनी और कैक्टस' - डॉ0 अम्बाशंकर नागर ।
18. वही ।
19. वही ।
20. वही ।
21. वही ।
22. वही ।
23. वही ।
24. वही ।
25. वही ।
26. वही ।
27. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 2 ।
28. 'चाँद, चाँदनी और कैक्टस' - डॉ0 अम्बाशंकर नागर ।

29. वही ।
30. 'प्रम्लोचा', पृ0 106 ।
31. वही ।
32. वही ।
33. वही ।
34. वही ।
35. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 24 ।
36. 'आ0 रघुनाथ भट्ट अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 157 ।
37. 'पिछली बहार के सूरजमुखी', पृ0 43 ।
38. 'समान्तर रेखाओं के त्रिकोण', पृ0 128 ।
39. 'पिछली बहार के सूरजमुखी' ।
40. 'परिवेश गगन बदले क्षण-क्षण' ।
41. 'ठहरी हुई धूप', पृ0 31 ।
42. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 31 ।
43. 'मानसिक सन्निपात और टूटे हुए एवरेस्ट' में 'बुद्धिजीवी' शीर्षक से, पृ0 17 ।
44. 'क्षितिज से दूर' ।
45. वही ।
46. 'विवशता से बंधे हुए' ।
47. वही, पृ0 10 ।
48. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 44 ।
49. 'शाश्वत क्षितिज', पृ0 11 ।
50. वही, पृ0 21 ।
51. वही, पृ0 11 ।
52. 'टुक़ड़े-टुकड़े आकाश', पृ0 35 ।
53. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 139 ।
54. 'अकह' ।
55. 'अकह', पृ0 18 ।
56. 'सबरस', पृ0 65 ।
57. 'सबरस', पृ0 72 ।

58. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 156 ।
59. 'खामोश हूँ मैं', पृ0 71 ।
60. वही ।
61. 'बस ! तुम ही तुम', पृ0 48 ।
62. 'प्यासी धरती : खाली बादल', पृ0 3 ।
63. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 151 ।
64. 'प्यासी धरती : खाली बादल' ।
65. 'अकह' ।
66. 'मोड़ पर', पृ0 32 ।
67. 'उत्तर महाभारत', पृ0 13-14 ।
68. 'उत्तर महाभारत', पृ0 254 ।
69. 'उत्तर रामायण' ।
70. 'परिताप के पाँच क्षण', पृ0 109-110 ।
71. वही, पृ0 64 ।
72. 'धनुष भंग'
73. 'नरो वा कुंजरो वा', पृ0 58 ।
74. 'हाशिए की कविताएँ', पृ0 8 ।
75. 'चन्दन हो गया हूँ'
76. 'विकास शिशु गीत', पृ0 22 ।
77. 'बिन्दिया के बोल', पृ0 9 ।
78. वही, पृ0 31 ।
79. वही, पृ0 49 ।
80. 'क्षण का सौदागर' ।
81. वही ।
82. 'धुएँ का शहर' ।
83. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 67 ।
84. 'धरती गाये रे' ।
85. वही ।
86. वही ।

87. 'शब्द यात्रा' ।
88. वही ।
89. 'युगांकन' ।
90. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 72 ।
91. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर', पृ0 68 ।
92. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 74 ।
93. 'आर्तनाद', पृ0 38 ।
94. 'दलितों का मसीहा' में 'आत्मनिवेदन' - जयसिंह 'व्यथित' ।
95. 'दलितों का मसीहा' ।
96. 'बाल कृष्ण' ।
97. 'श्री हनुमान तीसिका' ।
98. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 84-85 ।
99. देखिए- वही, पृ0 86 ।
100. 'छंद-छंद रागिनी' - रामचेत वर्मा ।
101. 'फैली पलाश के कानन लौ' - डॉ0 विष्णु 'विराट' चतुर्वेदी ।
102. 'साठोत्तरी हिन्दी मिथक काव्य' - डॉ0 ओ.पी. यादव, पृ0 309-315 ।
103. 'धूम्रवन से लौट आई लाल परियाँ' में 'बस्ती की बस्ती घबरा रही' शीर्षक से - डॉ0 विष्णु 'विराट', पृ0 61 ।
104. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर' में 'वक्त से हारे नहीं हैं' शीर्षक कविता से, पृ0 183 ।
105. 'गीत रजनीगंधा के' - द्वारका प्रसाद साँचीहर ।
106. 'डॉ0 रामकुमार गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 144 ।
107. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर', पृ0 98 ।
108. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 99 ।
109. 'डॉ0 नागर अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 182 ।
110. 'डॉ0 रामकुमार गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 126 ।
111. 'उठी हुई बाहों का समुद्र' - सुलतान अहमद, पृ0 8 ।
112. 'दीवार के इधर-उधर' - सुलतान अहमद ।
113. 'डॉ0 रामकुमार गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 174 ।
114. 'गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता', पृ0 261 ।

115. वही, पृ0 266 ।
116. वही, पृ0 238 ।
117. 'अनुभूति' - नलिनी पुरोहित ।
118. वही ।
119. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर', पृ0 112 ।
120. 'अनुभूति' - नलिनी पुरोहित, पृ0 15 ।
121. वही ।
122. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 89 ।
123. वही, पृ0 89 ।
124. 'रोशनी की तलाश', पृ0 11 ।
125. वही, 'आदमी और जंगल' शीर्षक कविता से, पृ0 26 ।
126. 'डॉ0 रामकुमार गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 146 ।
127. वही, पृ0 183 ।
128. 'पँखेरु पश्चिम के', पृ0 79 ।
129. 'रोशनी की तलाश', पृ0 30 ।
130. 'पटाक्षेप होने तक', पृ0 49 ।
131. 'कटघरे में हूँ', पृ0 25 ।
132. 'रोशनी की तलाश', पृ0 48 ।
133. 'जिन्दा है आईना' - भगवानदास जैन ।
134. वही, पृ0 60 ।
135. 'बूँद-बूँद घट में', पृ0 89 ।
136. 'गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता', पृ0 150 ।
137. वही, पृ0 156 ।
138. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि' में डॉ0 गुलाब सिंह का लेख, पृ0 196 ।
139. वही, पृ0 197 ।
140. 'उगते शब्द' के 'हेतु शब्द' से उद्धृत - डॉ0 रमाकान्त शर्मा ।
141. 'उगते शब्द', पृ0 13 ।
142. वही, पृ0 43 ।
143. 'नवद्वीप', पृ0 43 ।

144. वही, पृ0 43 ।
145. 'गुजरात के समकालीन हिन्दी कवि', पृ0 204 ।
146. 'अथेति', पृ0 73 ।
147. वही, पृ0 29 ।
148. 'गुजरात की समकालीन हिन्दी कविता', पृ0 34 ।
149. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर', पृ0 115 ।
150. 'आ0 रघुनाथ भट्ट अभिनन्दन ग्रंथ', पृ0 126 ।
151. 'पछुवाँ के हस्ताक्षर', पृ0 91 ।
152. वही, पृ0 189 ।
153. वही, पृ0 114 ।
154. वही, पृ0 200 ।
155. वही, पृ0 211 ।
156. वही, पृ0 38 ।
157. 'स्पन्दन' - दिव्या रावल ।
158. 'क्षण के कण' - रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ।
159. वही ।
160. वही ।
161. 'अंजुरी भर प्यास' में 'मेरा भारत महान' शीर्षक कविता से, पृ0 60 ।
162. 'फागुन बीते जा रहे' - सूर्यदीन यादव, पृ0 45 ।
163. 'नीलाम्बर के नीचे' - डॉ0 शान्ति सेठ', पृ0 41 ।
164. 'चरैवेति' - रामअवधेश त्रिपाठी, पृ0 69 ।
165. 'रेत पर हस्ताक्षर' - शशिबाला अरोरा ।
166. 'भाव निर्झर', पृ0 34 ।